वैश्विक संवाद GLOBAL DIALOGUE

3.4

एक वर्ष में 5 अंक 15 भाषाओं में

फरनान्डो हैनरिक कार्डोसो विगत पर दृष्टिपात करते हुए

समाजशास्त्र एक पेशे के रुप में

चिजूको उएनो
व्लादिमीर यादोव

बुल्गारिया कल और आज

मारिया इवान्वेवा
मार्टिन पैट्रोव
जार्जी मैडारॉव

मलेशिया में समाजविज्ञान

शमसुल ए.बी
रहमान एम्बोगं

> फवेला पर्यटन

> बांग्लादेश में वस्त्र आपदा के पीछे

> आपके शोध पत्र को अभी आउटसोर्स किया गया है

> क्रान्ति के बाद ट्यूनिशियाइ समाज शास्त्र

> सिनेमाई समाजशास्त्र

> आई. एस. ए. के सदस्यों के लिए सस्ती पुस्तकें

सूचना पत्र

GD
अंक 3 / क्रमांक 4 / अगस्त 2013
www.isa-sociology.org/global-dialogue/

International Sociological Association

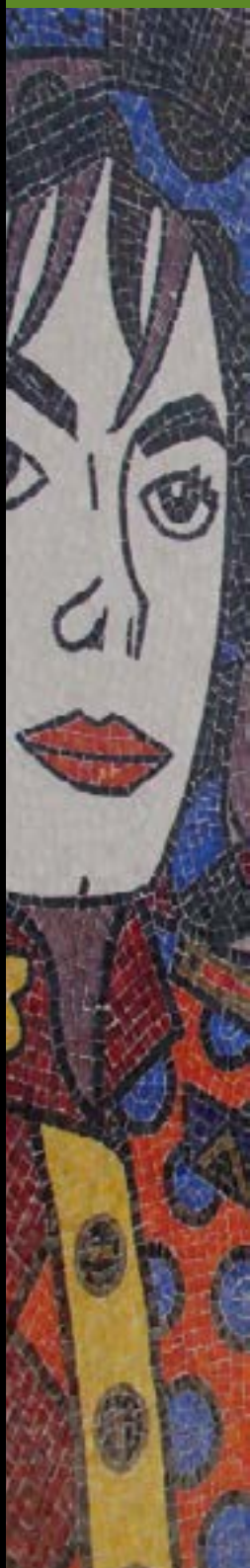

> सम्पादकीय

एक नये समाजशास्त्र के लिए

सामूहिक क्रोध कुछ समय से संसार भर में ज्वाला की एक पगडंडी का निर्माण कर रहा है – और यह अपनी मशाल को गेजी पार्क तथा ताक्सिन चौक से लेकर ब्राजील के प्रमुख शहरों तक पहुंचा रहा है, और अब, जबकि मैं लिख रहा हूं, मिस्र पुनः एक बार लोकप्रिय विद्रोह जो कि अभूतपूर्व आयाम लिए हुए है से जल रहा है। तहरीर चौक पर एकत्रित भीड राजनीति के एक बार पुनः स्वत्वहरण की एक बडें पैमाने पर अस्वीकृति का प्रदर्शन कर रही है, यद्धपि उसे उसके अनिश्चित एवं दुखान्त परिणाम का आभास नहीं है। ये सांस्कृतिक रुप से एक दूसरे पर अन्तःनिर्भर परन्तु राजनैतिक रुप से स्वतन्त्र विरोध प्रदर्शन जो कि अब पूरे संसार में फैले हुए हैं सामाजिक आन्दोलनों के एक नये सिद्धान्त, और फिर वहां से एक नये समाजशास्त्र की जो कि पूरे भूमण्डल में पहुंच सके की मांग कर रहें हैं।

इस प्रकार के एक नये समाजशास्त्र को गुथीं हुई राजनीति एवं आर्थिकी के साथ भिडना चाहिये, अतः वैश्विक संवाद का यह अंक पूंजीवाद के बाजारीकरण की तीसरी लहर की राजनीतिक कमजोर कड़ी जिसे कि आम भाषा में नव–उदारवाद के नाम से जाना जाता है की पोल खोल रहा है। और इस प्रकार मल्लिका शाक्या वस्त्र उत्पादन के वितरण जिसनें कि बांग्लादेश में आपदा उत्पन्न की, कि भू–राजनीति का विवेचन कर रही हैं जबकि बियान्का फ्रेयर–मेडिरोस फवेला पर्यटन के प्रोत्साहन, जिससे कि ब्राजील के उत्तरोत्तर राजनीतिक शासनों नें गरीबी से पूंजी बनाई है, का विवरण दे रही हैं। जैफ साल्ज विवेचना कर रहे हैं कि किस प्रकार ऑउटसोर्सिंग से अविश्वसनीय लाभ कमा रहे हैं हम पर निर्भर रहते हुए (अथवा हमारे पुस्तकालयों पर) जिन्हें कि वो हमारे द्वारा उत्पादित माल को ही हमें उंची बढी हुई कीमतों पर बेच देते हैं। इसी क्षेत्र में आगे बढते हुए, एक वैयक्तिक रुचिकर इतिहास के माध्यम से रहमान एम्बोंग हमें बतला रहे हैं किस प्रकार समाजशास्त्र पीछे धकेल दिया गया है जबकि प्रमुख मलेशियन विश्वविद्यालय उन विषयों को बढावा दे रहे हैं जो कि उन्हे कम समय में अधिक लाभ प्रदान करेंगें और जिनसे दीर्घकाल तक राजनीतिक खामोशी/शांति रहेगी। फिर, तब हम इस प्रकार के एक नये समाजशास्त्र को कहां प्राप्त कर सकते हैं?

मैं एक लम्बे समय से उस उत्तर–साम्यवादी पीढी के आलोचक समाजशास्त्रियों को जिनका कि पूर्वी यूरोप के देशों – पौलेण्ड, युक्रेन, रोमानियां, एवं पूर्वी जर्मनी में उदय हुआ का अनुसरण कर रहा हूं। इन पृष्ठों पर बुल्गारिया के तीन नौजवान समाजशास्त्री राष्ट्रीय बहस के विचारणीय विषयों को चुनौती दे रहे हैं। मार्टिन पैट्रोव, नीचे गिरे हुए और व्यवस्था से बाहर हुए लोगों – जिन्हे कि नये एवं पुराने दोनों ही शासनों का मलबा कहा जा सकता है – के जीवन सफर का वर्णन कर रहे हैं जो कि सोफिया की सडकों पर पहचान बनाने के लिए प्रतियोगिता कर रहे हैं। जार्जी मैडारॉव भूतपूर्व साम्यवादियों को निशाना बनाते हुए अतीत की ओर देखनें वाली राजनीति के जटिल प्रतिमानों की खोज कर रहें है – और इस प्रकार उन्हें एक भूतिया अस्तित्व प्रदान कर रहे हैं – परन्तु बुल्गारिया को उसके फासीवादी विगत से मुक्त करने के अतिरिक्त उद्धेश्य के साथ । ऐसा करने से वर्तमान की फासीवादी प्रृवत्तियों से ध्यान विचलित होता है। मारिया इवान्चेवा स्वयं अपने प्रजातान्त्रिक बदलाव के साथ प्रारम्भिक जुडाव का आलोचनात्म चिन्तन कर रही हैं और वो भी वैनेजुएला जैसे दूरस्थ स्थान की यात्रा करते हुए ताकि वो अन्य प्रकार के समाजवाद के विरोधाभासों को खोज सकें और यह देख सकें कि इससे पूर्वी यूरोप को क्या सबक और दृष्टि प्राप्त हो सकती है। यह तीनों ही एक इस प्रकार के समाजशास्त्र का तानाबाना बुनने का प्रयास कर रहे हैं जो विगत पर प्रश्न–चिन्ह लगाते हुए वर्तमान से बाहर निकलने का रास्ता प्रशस्त कर सके।

एक नये समाजशास्त्र को नई पद्धतियों की अवश्यकता है ताकि वो इतिहास और समाज की बहुस्वरीय परतों को खोद कर बाहर निकाल सके। और प्रारम्भ करने के लिए इससे और कोई अधिक अच्छा स्थान नहीं हो सकता जितना कि जोर्डाना मेटिऔन्स द्वारा लिया गया जोयस सेबग और जीन–पियरे डूरण्ड का साक्षात्कार उनके एवरी विश्वविद्यालय में सिनेमाई समाजशास्त्र के कार्यक्रम के बारे में। उनके सिनेमाई परियोजना का अनुसरण करते हुए मैं यह खुला निमन्त्रण देना चाहूंगा कि आप एक चित्र–लेख (एक उच्च resolution photo तथा 300 शब्दों की व्याख्या के साथ) वैश्विक संवाद में छपने के लिए आमंत्रित हैं।

> वैश्विक संवाद को आईएसए वैबसाइट पर 15 भाषाओं में देखा जा सकता है।
> प्रस्तुतियां (Submissions) burawoy@berkeley.edu पर प्रेषित की जा सकती हैं।

फरनान्डो हैनरिक कार्डोसो, *दो बार ब्राजील के राष्ट्रपति (1995–2003), एक बार आईएसए के अध्यक्ष (1982–1986), एवं अग्रगामी समाजशास्त्री, एक समाजशास्त्री के राष्ट्रपति होने के लाभ एवं हानि का वर्णन कर रहे हैं।*

चिजूको उएनो, *प्रख्यात जापानी सार्वजनिक बुद्धिजीवी, सक्रिय कार्यकर्ता, तथा समाजशास्त्री नारीवाद के श्रमसाध्य मार्ग पर चिन्तन कर रही हैं तथा जापान में इसके ऐतिहासिक लाभों का तथा इसके सामने आने वाली चुनौतियों का मूल्याँकन कर रही हैं।*

व्लादिमीर यादोव, सोवियत काल के अग्रगामी रुसी समाजशास्त्री, पुतिन के दौर में समाजशास्त्र की स्वायत्तता के समर्थक, आईएसए के भूतपूर्व उपाध्यक्ष, तथा अनेक लोगों के प्यारे अध्यापक, उन चुनौतियों का वर्णन कर रहे हैं जिनका कि उन्होंने सामना किया।

> Editorial Board

Editor: Michael Burawoy.

Managing Editors: Lola Busuttil, August Bagà.

Associate Editors:
Margaret Abraham, Tina Uys, Raquel Sosa, Jennifer Platt, Robert Van Krieken.

Consulting Editors:
Izabela Barlinska, Louis Chauvel, Dilek Cindoğlu, Tom Dwyer, Jan Fritz, Sari Hanafi, Jaime Jiménez, Habibul Khondker, Simon Mapadimeng, Ishwar Modi, Nikita Pokrovsky, Emma Porio, Yoshimichi Sato, Vineeta Sinha, Benjamín Tejerina, Chin-Chun Yi, Elena Zdravomyslova.

Regional Editors

Arab World:
Sari Hanafi, Mounir Saidani.

Brazil:
Gustavo Taniguti, Juliana Tonche, Andreza Galli, Renata Barreto Preturlan, Ângelo Martins Júnior, Lucas Amaral, Celia Arribas.

Colombia:
María José Álvarez Rivadulla, Sebastián Villamizar Santamaría, Andrés Castro Araújo, Katherine Gaitán Santamaría.

India:
Ishwar Modi, Rajiv Gupta, Rashmi Jain, Uday Singh.

Iran:
Reyhaneh Javadi, Shahrad Shahvand, Hamidreza Rafatnejad, Tara Asgari Laleh, Najmeh Taheri, Saghar Bozorgi, Faezeh Khajezadeh.

Japan:
Kazuhisa Nishihara, Mari Shiba, Kousuke Himeno, Tomohiro Takami, Yutaka Iwadate, Kazuhiro Ikeda, Yu Fukuda, Michiko Sambe, Takako Sato, Yuko Hotta, Yusuke Kosaka, Yutaka Maeda, Shuhei Naka.

Poland:
Mikołaj Mierzejewski, Karolina Mikołajewska, Krzysztof Gubański, Adam Mueller, Patrycja Pendrakowska, Emilia Hudzińska, Julia Legat, Kamil Lipiński, Natalia Jońca.

Romania:
Cosima Rughiniș, Ileana-Cinziana Surdu, Monica Alexandru, Telegdy Balasz, Marian Mihai Bogdan, Adriana Bondor, Ramona Cantaragiu, Miriam Cihodariu, Alexandra Duțu, Cătălina Gulie, Angelica Helena Marinescu, Monica Nădrag, Lucian Rotariu, Cosima Rughiniș, Alina Stan, Mara Stan, Elena Tudor, Cristian Constantin Vereș.

Russia:
Elena Zdravomyslova, Eleonora Burtseva, Anna Kadnikova, Elena Nikiforova, Julia Martinavichene, Ekaterina Moskaleva, Asja Voronkova.

Taiwan:
Jing-Mao Ho.

Turkey:
Aytül Kasapoğlu, Nilay Çabuk Kaya, Günnur Ertong, Yonca Odabaş, Zeynep Baykal, Gizem Güner.

Ukraine:
Svitlana Khutka, Olga Kuzovkina, Anastasia Denisenko, Mariya Domashchenko, Iryna Klievtsova, Lidia Kuzemska, Anastasiya Lipinska, Myroslava Romanchuk, Ksenia Shvets, Liudmyla Smoliyar, Oryna Stetsenko, Polina Stohnushko.

Media Consultants: Annie Lin, José Reguera.

Editorial Consultant: Abigail Andrews.

> इस अंक में In This Issue

सम्पादकीय: एक नये समाजशास्त्र के लिए **2**

राष्ट्रपति समाजशास्त्री के रूप में
फरनान्डो हैनरिक कार्डोसो, ब्राजील से एक साक्षात्कार **4**

समाजशास्त्र एक पेशे के रुप में – जापान में एक नारीवादी बनने पर
चिजूको उएनो, जापान **7**

समाजशास्त्र एक पेशे के रुप में – एक जीवन भविष्य के रूप में समाजशास्त्री
व्लादिमीर यादोव, रुस **9**

> गरीबी से पूँजी बनाना

सफर करता फवेला
बियान्का फ्रेयर–मेडिरोस, ब्राजील **11**

बांग्लादेश में वस्त्र आपदा के पीछे
मल्लिका शाक्या, भारत **14**

आपके शोध पत्र को अभी आउटसोर्स किया गया है
जैफ्रे जे. साल्ज, यू.एस.ए. **17**

आई.एस.ए. के सदस्यों के लिए सस्ती पुस्तकें
सुजाता पटेल, भारत **20**

> बुल्गारिया पर संकेन्द्रित

समाजवाद की दो धाराओं के मध्य में जकड़े हुए
मारिया इवान्चेवा, हंगरी **22**

सोफिया की सड़कों से पनपी लम्बी गाथायें
मार्टिन पैट्रोव, बुल्गारिया **24**

जनसंहार /विध्वंस के विषय में उत्तर–साम्यवादी बुल्गारिया में बहस
जार्जी मैडारॉव, बुल्गारिया **26**

> मलेशिया में समाज विज्ञान

मलेशिया के निर्माण में सामाजिक विज्ञान
शमसुल ए.बी., मलेशिया **28**

वचनबद्ध समाजशास्त्री का जीवन–काल
डाटो रहमान एम्बोंग, मलेशिया के साथ एक साक्षात्कार **30**

> जीवन्त समाजशास्त्र

क्रान्ति के बाद ट्यूनिशियाइ समाजशास्त्र
मुनीर सैदानी, ट्यूनीशिया **34**

सिनेमाई समाजशास्त्र
जोयस सेबग और जीन–पियरे डूरण्ड, फ्रांस के साथ एक साक्षात्कार **36**

> राष्ट्रपति समाजशास्त्री के रूप में

फरनान्डो हैनरिक कार्डोसो से एक साक्षात्कार

फरनान्डो हैनरिक कार्डोसो वित्तमन्त्री बनने के उपरान्त 1995 से 2003 के मध्य ब्राजील के दो बार राष्ट्रपति निर्वाचित हुए। वे अन्तर्राष्ट्रीय समाजशास्त्र परिषद् (आईएसए) के 1982–1986 की अवधि में अध्यक्ष रहे उस समय ब्राजील में तानाशाही का दौर समाप्ति की ओर था। उस समय तक वे विश्व स्तर के प्रसिद्ध समाजशास्त्री बन चुके थो। उनका अध्ययन आश्रित्त एवं विकास के मध्य लातिन अमेरिका में अन्तः सम्बद्धता से जुड़ा हुआ है एवं प्रसिद्धि प्राप्त है। उनका शोध ग्रन्थ दक्षिण ब्राजील में दासता के अध्ययन पर आधारित है और अपने स्वरूप में क्लासिक है। यह साक्षात्कार उन वक्तव्यों पर आधारित है जो राष्ट्रपति पद त्यागने के एक वर्ष के उपरान्त सन् 2004 में अमेरिकन समाजशास्त्र परिषद् के समापन समारोह में दिये गये थे।

फरनान्डो हैनरिक कार्डोसो

मा.बु. : राष्ट्रपति कार्डोसो, एक समाजशास्त्री के रूप में राष्ट्रपति के अनुभवों को आप किस रूप में प्रभावित पाते हैं। आप एक देश जो छोटा नहीं है अर्थात् एक बड़े देश ब्राजील के राष्ट्रपति रहे हैं।

फ.हे.का. : मैं यह कहूँगा कि मुझे विश्वास है कि राजनीतिक जीवन एवं अकादमिक जीवन में महत्त्वपूर्ण है कि आप कुछ में विश्वास करें। यदि आपके पास भावी स्वप्न नहीं हैं और यदि आप एक दृढ़ मत नहीं रखते हैं तब यह सम्भव नहीं है कि आप समुदाय अथावा एक देश पर अपना प्रभाव छोड़ पायें। आपकी कुछ मजबूत मान्यताऐं होनी चाहियें। यह सम्भवतया इसके विरुद्ध है जो कि हमेशा से ''राजनैतिक मानव'' के बारे में कहा जाता रहा है। निसन्देहः मैने भी पढ़ा है, जैसा कि आपने, वैबर को। और वैबर ने मान्यताओं के आचार शास्त्र एवं उत्तरदायित्त्वों के आचार शास्त्र के मध्य अन्तर स्थापित किया है। परन्तु उन्होंने कभी एक को दूसरे से राजनीतिक क्रियाओं के चालक के संदर्भ में पृथक नहीं किया। उन्होंने तो दोनों आचार शास्त्रों को महत्व प्रदान किया। वेबर जर्मनी में मंत्री थे और उच्च राष्ट्रवादी थे। अतः उनके अपने मूल्य थे।

यदि आपकी अपनी कुछ मान्यतायें हैं और यदि आप उन्हें व्यक्त करने की योग्यता रखते हैं और उसे उपयुक्त समय पर व्यक्त करते हैं अर्थात् जब आपका समय राजनीति में लोगों की संवेदनशीलता से मेल खाता है तब कोई व्यक्ति अर्थात् आप राजनीतिक नेता बनते हैं। इस योग्यता/क्षमता के बिना यह असम्भव है। आप निर्वाचित तो हो सकते हैं पर बिना मान्यताओं के अथवा बिना दृढ़ मान्यताओं के आप राजनीतिक नेता नहीं बन सकते। और मेरे विषय में मैं इस तर्क पर बल दूँगा कि मेरी पीढ़ी जो आगे आयी कि सशक्त रुचि आर्थिक विकास में नहीं थी हालांकि हमने आर्थिक विकास किया। लोकतंत्र में हमारी गहन आस्थ थी।

एक ऐसे समय जब मैं सक्रिय राजनीति में प्रत्यक्ष रूप से सहभागी बना, हम सब एक सर्वसत्तावादी शासन का सामना कर रहे थे। हम रोज स्वतन्त्रता की कमी के दौर से गुजर रहे थे। आप देख सकते थे कि लोगों को निर्वासित कर दिया गया था, लोग जेलों में थे, लोगों को प्रताड़ित किया जा रहा था। ये सब पक्ष हमारी सक्रिय सहभागिता का आधार बने। इन सब स्थितियों ने लोकतान्त्रिक मान्यताओं को पुनः स्थापित किया और हमें लोकतन्त्र के प्रति प्रतिबद्ध बनाया।

मा.बु. : लोकतंत्र एक अस्पष्ट एवं आलोचनाओं का शिकार हुआ शब्द है, आपके लिए इसका क्या अर्थ है?

फ.हे.का. : आपके यहाँ विभिन्न प्रकार के लोकतन्त्र हैं, एक ही मूल्य के विभिन्न स्वरूप हैं जो भिन्न–भिन्न अवयवों के समग्र हैं। आज के विश्व में लोकतन्त्र का अभिप्राय केवल इतना नहीं है कि राजनीतिक दल के साथ सम्बद्ध होने की स्थिति एवं चुनावी जीवन की योग्यता प्राप्त कर ली जाए। मैं यह कहूँगा कि उपयुक्त तरीके के अनुसार तो मैं किसी राजनीतिक दल का सदस्य नहीं था। मैं वामपन्थी दल का कभी पदाधिकारी भी नहीं था। अपितु मैं पदाधिकारी के ऐसे ढाँचे से घृणा करता था। एक बार सीनेट के लिए प्रथम राजनीतिक प्रचार करते हुए एक कमरे में मैंने, जिसमें मेरे राजनीतिक दल के कार्यकर्ता बड़ी संख्या में थे, सेना का विरोध किया और चरमपन्थियों को बोर करने वाले व्यक्तियों के रूप में प्रस्तुत किया।

मैं नहीं सोचता हूँ कि आप राजनीति को राजनीतिक दलों के संदर्भ में जान सकते हैं। मेरा आजकल मानना है कि महत्त्वपूर्ण यह है कि आप में दक्षता हो कि आप सामान्यतः समाज के विभिन्न भागों से सम्पर्क में रहें और जनता की विसरित भावनाओं के अनुरूप मूल्यों को अभिव्यक्त करें। अतः एक प्रभावशाली ''राजनीतिक मानव'' हेतु आवश्यक है कि आप में

>>

चित्रण आरबू द्वारा

आकर्षित करने, संचार करने एवं भावनाओं को उत्पन्न करने की क्षमता हो। एक सीमा तक आपको कलाकार की विशेषताओं वाला होना चाहिए। इस विचार का यह अर्थ नहीं है कि आप थियेटर में किसी भूमिका का निर्वाह कर रहे हैं। बल्कि आप में यह दक्षता हो कि आप भावनाओं व अनुभूतियों को समझ सकें, उन्हें संचारित कर सकें एवं उन्हें हस्तान्तरित कर सकें। यह सम्भव है कि मैं राजनेता बन जाता हूँ क्योंकि मैं जनता को पसन्द करता हूँ। राष्ट्रपति के रूप में मैंने सामान्य जनता से सम्पर्क में रहने की कोशिश की। समान्यतः राष्ट्रपति सामान्य जनता से एक बड़ी दूरी बनाये रखते हैं। लेकिन राष्ट्रपति के पास अनेक सेवक होते हैं। हमारे पास ऐसे अनेक लोग होते हैं जो हमारा ध्यान रखते हैं यहाँ तक कि जब हम तरणताल में हैं। हमारे पास चालक (ड्राइवर) है। हमारे पास सुरक्षा गार्ड्स हैं। ये वे लोग हैं जो राष्ट्रपति के दिनभर की चर्या में उनके आसपास रहते हैं। ये न तो राजनीतिक नेता हैं और न ही ये उच्च वर्ग के सदस्य हैं। मैं उनसे बात करने का प्रयास करता था और मैं उनको यह अनुभूति देता था कि वे मुझसे एक व्यक्ति के रूप में बात कर सकते हैं न कि एक राष्ट्रपति के रूप में। मैं कोशिश करता था कि मैं उनकी कही बातों को ध्यान से सुनूँ कि वे विभिनन पक्षों के बारे में वास्वत में क्या सोचते हैं। मैं आजकल यह सोचता हूँ कि यह महत्त्वपूर्ण नहीं है कि आप एक कलाकार हैं। क्योंकि आप अभिव्यक्त कर सकते हैं या भूमिका निभा सकते हैं बल्कि यह जरूरी है कि भावनाओं एवं अनुभूतियों को हस्तान्तरित कर आप मुद्दों व व्यक्तियों को प्रभावित करें जो यह स्थापित करें कि आप जो व्यक्त कर रहे हैं उसके प्रति आप ईमानदार तरीके से प्रतिबद्ध हैं। इस हेतु यह भी आवश्यक है कि आप अपने मानवीय गुणों से दूर न हों।

मा.बु. : और समाजशास्त्र, क्या यह आपको मानवीय बनाने में सहायक है?

फ.हे.का. : समाजशास्त्र बहुत सहायक है। अनेक बार ब्राजील के वे लोग जो मेरे प्रतियोगी हैं – मेरे विरोधी – कहते थे कि ''देखो यह वह व्यक्ति है जो अपने जीवन में कभी गरीब नहीं था। यह पुर्तगाली भाषा की अपेक्षा बेहतर फ्रांसीसी बोलता है।'' उन्होंने यह सब उस तरीके से कहा ताकि वे मुझे अयोग्य सिद्ध कर सकें। परन्तु वे एक संदर्भ को भूल गये। विदेशी विश्वविद्यालयों में प्रोफेसर के रूप में कार्य करते हुए मैंने एक पाठ सीखा था : मुझे सरल तरीके से बात रखनी है और सामान्य बुद्धिजीवियों की तुलना में भी मुझे वह बात सीधे तरीके से रखनी है। मुझे याद है जब सैन्य तानाशाही के कारण एक निर्वासित व्यक्ति के रूप में मैंने चिली में कक्षाओं को लेना प्रारम्भ किया। पुर्तगाली एवं स्पेनिश लोग एक दूसरे के निकट हैं परन्तु उनकी भाषाऐं समान नहीं हैं। ब्राजीलवासी स्पेनिश भाषा को समझते हैं पर इसके विपरीत की स्थिति नहीं है। चिली के विद्यार्थियों ने उस प्रत्येक शब्द का विरोध किया जिसे मैं पुर्तगाली तरीके से उच्चारित करता था। अतः मैंने जटिल शब्दों की उपेषा करने का निर्णय लिया और सरल तरीके के प्रस्तुतिकरण को अपनाया। एक समाजशास्त्री के रूप में यह भी महत्त्वपूर्ण है कि आप लोगों के सम्पर्क में रहे और इस पक्ष के लिए आपका प्रशिक्षण भी होता है। और इसलिए जब मेरे विरोधियों ने यह कहा कि ''यह व्यक्ति (यानि मैं) क्षमता नहीं रखता कि वह गरीब एवं सरल लोगों को अपने से जोड़ पायेगा,'' तो मैं मुस्करा उठा क्योंकि एक समाजशास्त्री के रूप में अपना कैरियर प्रारम्भ करते समय मैं अश्वेत लोगों के साथ रह कर प्रजातीय सम्बन्धों का अध्ययन कर रहा था। इसके कारण मैंने अनेक गन्दी बस्तियों एवं स्थलों, अल्पविकसित गाँवों एवं कस्बों जो ब्राजील के दक्षिणी भाग से सम्बद्ध हैं का अनेक बार दौरा किया। इसके उपरानत मैंने श्रमिकों पर अपना शोधकार्य किया। तदोपरान्त उद्यमियों पर मैंने अपना शोध कार्य किया। लेकिन अपने कैरियर की शुरुआत मैंने सरल लोगों के घनिष्ट सम्पर्क के साथ की। अतः लोगों के साथ विभिन्न पक्षों पर क्रियात्मक होते हुए मुझे कोई परेशानी नहीं हुई

मैंने समाजशास्त्र के अतिरिक्त मानवशास्त्र विषय का अध्ययन किया। वास्तव में हमने तीन विषयों का – समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र एवं मानवशास्त्र – एक साथ अध्ययन किया। और आप जानते हैं कि मानवशास्त्री कैसे है, मेरी पत्नी मानवशास्त्री है। मानवशास्त्री बहुत विशिष्ट पक्षों को मूल्यांकित करते हैं। और वे प्रत्येक से बात करना पसन्द करते हैं, हर संदर्भ के नोट्स लेते हैं एवं व्यवहार में होने वाले छोटे–छोटे परिवर्तनों पर सावधानी से विश्लेषण करते हैं। किसी भी राजनीतिज्ञ के लिए यह महत्त्वपूर्ण है कि वह अन्य को समझने की क्षमता रखता हो एवं उनसे विमर्श कर सकता हो। इससे व्यक्ति में अन्य को प्रभावित करने की योग्यता विकसित होती है बशर्ते आप में कलाकार की अभिव्यक्ति की क्षमता हो। इस दृष्टि से मैं पहले के व्यक्त विचार पर फिर बल देता हूँ : अपनी सत्य भावनाओं एवं अनुभूतियों को सीधे एवं संवेदनशील पक्ष के साथ प्रस्तुत करें।

मा.बु. : लेकिन क्या समाजशास्त्र अवरोधी भी हो सकता है?

फ.हे.का. : हाँ, यह होता है। मुझे याद है जब मैं सीनेटर के पद हेतु पहली बार अपने राजनैतिक प्रचार की शुरुआत कर रहा था, उस समय मुझ शर्म लग रही थी। ब्राजील में राजनीतिक प्रचार को करने का अर्थ लोगों से सम्पर्क करना है, और वे एक बड़ी ताकत के साथ आपके पीछे हो जाते हैं। दिन की समाप्ति होते–होते आप वास्तव में बहुत थक जाते हैं और आपकी शक्ति एवं उत्साह बिल्कुल चुक जाता है। कम से कम ब्राजील में एक राजनीतिक प्रचार का अर्थ लोगों की लोगों से शारीरिक निकटता है। यहाँ केवल बातचीत नहीं है। आप उनको स्पर्श करते हैं। आप को लोगों के साथ निकटता रखनी पड़ती है। इसके लिए एक स्तर पर प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है। अतः जब मैंने यह प्रचार प्रारम्भ किया तब स्थितियां आसान नहीं थीं।

लेकिन बातचीत महत्त्वपूर्ण है और एक शिक्षाविद् के लिए यह आसान नहीं है कि वह भीड़ के सम्मुख बोले। आपको सरल एवं सकारात्मक दोनों ही होना पड़ता है। और आपको कोई बहुत महान वक्तव्य नहीं देना चाहिए क्योंकि लोग इसे पसन्द नहीं करते हैं। एक शिक्षाविद् के लिए यह आसान नहीं है कि वह इन स्थितियों के साथ अनुकूलनशीलता स्थापित कर पाये। मुझे याद है कि प्रारम्भ में प्रत्येक सभा, जिसे मैंने सम्बोधित किया, में मैंने भिन्न–भिन्न तरीकों के विचार रखे। और आपको यह नहीं भूलना चाहिए कि एक दिन में हमें आठ से दस तक सभाओं को सम्बोधित करना होता

>>

है क्योंकि यह राजनीतिक प्रचार है। मुझे समान विचारों की पुनरावृत्ति पर शर्म आती थी। अतः मैंने कोशिश की कि प्रत्येक भीड़/श्रोता समूह को विभिन्न प्रकृति की कहानियों के कल्पना लोक में ले जाया जाये। यह एक बड़ा संकट था।

क्योंकि किसी को यह पता नहीं लगता था कि आप क्या कहना चाहते हैं। आपको बार–बार स्वयं की पुनरावृति करनी होती है। आपको सरल करना है और फिर पुनरावृत्ति करनी है। अतः इन परिस्थितियों में यह आसान नहीं है कि आप समाजशास्त्री एवं राजनीतिज्ञ दोनों बन जायें। परन्तु इस स्थिति से आप जब टी.वी. की तरफ अग्रसर करते हैं तो आपको अनेक लाभ होते हैं। साओ पाउलो राज्य का सीनेट में प्रतिनिधित्व करने के लिए जब मैंने पहली बार चुनाव प्रचार किया – उस समय जब ब्राजील सैन्य शासन के अधीन था और हम इसके विरुद्ध प्रचार कर रहे थे – मैं एक टी. वी. नेटवक्र पर बहस करने अपने प्रतिद्वन्दी के सामने उपस्थित था। मैं पूरी बहस के दौरान लगभग शान्त था। क्योंकि मैं उन्हें एक पाठ पढ़ाने का प्रयास कर रहा था, या ऐसा ही कुछ कर रहा था।

जब मैं अपने घर वापस आया तो मेरे मित्र पूर्ण रूपेण निराश थे। यह असम्भव है, मेरे मित्रों का यह विचार था। उनका मत था कि मेरे पास उर्जा नहीं है। मैं अपनी भावनाओं को सम्प्रेषित नहीं कर सकता जबकि एक राजनीतिज्ञ के लिए ऐसा करना अनिवार्य है। श्रोताओं पर इसका वास्तविक प्रभाव इस निराशावादी विश्लेषण के ठीक विपरीत था। क्योंकि टी.वी. पर एक प्रकार के वैचारिक संवाद की आवश्यकता है। यह एक घनिष्ठ प्रकृति का संवाद होता है जो सभा में दिये जाने वाले सार्वजनिक भाषण से भिन्न होता है। अतः हमें एक अतिरिक्त लाभ था क्योंकि समाजशास्त्री एवं शिक्षक के रूप में विद्यार्थियों के साथ प्रत्यक्ष संवाद पर हम लोगों की विशेषज्ञता होती है। हम लोगों के लिए यह कठिन नहीं है कि राजनीतिक जीवन में हम इसका लाभ टी.वी. पर लें। यह बहुत है कि आप एक अच्छे शिक्षक की भूमिका का निर्वाह करें और अपने विचारों को सरल एवं प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करें।

मा.बु. : एक राष्ट्रपति के रूप में आप राजनीतिक दलों के साथ किस तरह पेश आये?

फ.है.का. : ब्राजील के संदर्भ में, जैसा मैंने पहले कहा, यह महत्त्वपूर्ण वास्तविकता है कि नेता में यह क्षमता हो कि वह राष्ट्र के लिए एक दूरदृष्टि वाला प्रारुप प्रस्तुत कर सके न कि विभिन्न दलों के लिए। नेता जनसंख्या के बहुमत को प्रभावित कर सके चाहे इस हेतु राजनीतिक दलों की भी उसे उपेक्षा क्यों न करनी पड़े।

राजनैतिक दल अक्सर परिवर्तनों को अग्रसर नहीं करते अपितु उन्हे अवरूद्ध करते हैं। ये दल नवाचार को आगे बढ़ाने के लिए तैयार नहीं होते। अतः अनेक बार आपकों दलीय संरचना के परे जाना होता है। ठीक इसके साथ आपको यह भी ज्ञात होना चाहिए कि अन्ततः सफलता प्राप्त करने हेतु आपको राजनीतिक संरचना पर आश्रित होना पड़ता है। इसका अर्थ है कि आप दल के विरुद्ध नहीं जा सकते। यदि आप राजनीतिक व्यवस्था के साथ प्रत्यक्ष संघर्ष करते हैं तो यह खतरा है कि एक प्रकार के तानाशाह के रूप में इसकी समाप्ति हो अथवा आपको आरोपों के घेरे का भाग बना दिया जाये।

आप जनता को बहका सकते हैं एवं उसे कांग्रेस के विरुद्ध सक्रिय कर सकते हैं। टी.वी. का प्रयोग होने के कारण यह प्रयास बहुत कठिन नहीं है। परन्तु यह रास्ता तानाशाही की तरफ ले जाता है। आपके लिए आवश्यक है कि आपके पास लोकतान्त्रिक आस्था हो और आप जनता को संसद के विरुद्ध न करें, क्योंकि संसद उन परिवर्तनों में, जिन्हें आप क्रियान्वित करने का प्रयास कर रहे हैं, बाधा उत्पन्न कर सकती है। आपका कांग्रेस के साथ स्थायी समझौता करने हेतु तैयार रहना अपेक्षित है। यहाँ भी एक प्रशिक्षित सामजशास्त्री को कुछ अतिरिक्त लाभ हो सकते हैं। आपको यह समझ है कि कौन से वास्तविक हित दॉव पर लगे हैं। यह केवल विभिन्न दलों को समझ कर सम्भव नहीं है। जरुरी है कि प्रत्येक दल के व्यक्तियों, विभिन्न सर्किल्स एवं विभिन्न समूहों के विषय में भी समझ हो। और सबसे महत्त्वपूर्ण यह है कि जन हितों की तरफ आपका एक चित्त ध्यान हो। इस पक्ष को प्रथम वरीयता दी जानी चाहिए।

मा.बु. : राष्ट्रीय संकटों में आपकी महत्त्वपूर्ण सहभागिता रही। इन संकटों पर प्रतिक्रिया, जो आपने की, के बारे में आपको क्या कहना है?

फ.है.का. : संकट के दौर में आपका सदैव शान्त रहना आवश्यक है। उदाहरणार्थ अन्तर्राष्ट्रीय वित्तीय व्यवस्था के बारे में खतरनाक प्रकृति के संशय जो लगातार बने हुए थे की स्थिति में आपका शान्त व संतुलित रहना आवश्यक था अन्यथा सब कुछ बिखर सकता था जो आपको और आपकी सरकार को डुबो देता। संकट के समय व्यापक परिदृश्य को समझने की विश्लेषणात्मक समझ ने आपको शान्त रहने में सहायता की। आप में विभिन्न स्तरों एवं विभिन्न स्थितियों में सक्रिय होने की योग्यता होनी चाहिए। कुछ परिस्थितियों में जनता के निकट होना चाहिए और कुछ में अलग रहने का भाव होना चाहिए ताकि डगमगाहट को समझा व रोका जा सके। संकट से उबरने का प्रारुप बनाया जा सके एवं अपने निर्धारित लक्ष्यों की तरफ अग्रसर हुआ जा सके।

ऐसे क्षणों में राज्याध्यक्ष का मुख्य दायित्व है कि राष्ट्र के दूरगामी लक्ष्यों की रक्षा की जा सके अन्यथा संकट गहरा सकता है। जब ऐसी स्थितियां आती हैं तो सम्पूर्ण व्यवस्था की पुनः स्थापना अथवा उसकी पुनः मजबूती में लम्बा समय लगता है। और इसका निहितार्थ यह भी है कि नागरिकों को इसकी बड़ी सामाजिक कीमत चुकानी पड़ती है और उन्हें घोर संकटों का सामना करना पड़ता है। अतः यह महत्त्वपूर्ण है कि जब हवा पक्ष में हो आप विभिन्न सम्भावनाओं पर कार्य करने की क्षमता रखते हो, अवसरों पर अधिकार स्थापित करने एवं उनकों अपने साथ आगे बढ़ाने की कुशलता आपके पास हो। बुरे अथवा प्रतिकूल समय में ये क्षमताएं एवं कुशलतायें आपको और मजबूत बनाती हैं। आप सबका इन स्थितियों में दायित्त्व बन जाता है कि सम्पूर्ण व्यवस्था को विघटित होने से रोका जा सके।

किस सीमा तक यह समाजशास्त्रीय प्रशिक्षण से सम्बन्धित है? मैं कहूँगा कि यह सम्बन्ध व्यापक स्तर का है। इस शिक्षण के अतिरिक्त हालांकि अन्य प्रकार की क्षमताओं एवं व्यक्तिगत जीवन से सम्बन्धित विशेषताओं की महत्त्वपूर्ण भूमिका भी होती है। पर मुख्यतः मैं यह कहूँगा कि समाजशास्त्रीय प्रशिक्षण आपको व्यापक परिदृश्य प्रदान करता है, विभिन्न समूहों की अन्तः सम्बद्धता को समझने में सक्षम बनाता है और सापेक्षतावाद का भाव एक स्तर तक पनपाता है। साथ ही यह समझने में मदद करता है कि इन स्थितियों को नियन्त्रित करने का एक सर्व स्वीकार्य सच नहीं है अथवा कार्य करने की एक विशिष्ट तरीका ही नहीं होता। इसके अनेक माध्यम व विकल्प हो सकते हैं।

मा.बु. : राजनीतिक प्रक्रियाओं के विषय में आपका निर्णायक समाजशास्त्रीय चिन्तन क्या है?

फ.है.का. : मेरे विचार में समकालीन लोकतन्त्र में विचार विमर्श की एक स्थायी प्रक्रिया की आवश्यकता है। रुसो के सामान्य इच्छा के विचार की यदि चर्चा करूँ तो मैं यह कहूँगा कि इस सामान्य इच्छा को समाज में प्रतिदिन प्रत्येक व्यक्ति द्वारा पुनः पारिभाषित किया जाता है। हमें इस पुनः परिभाषा के क्षेत्र को खुला रखना आवश्यक है ताकि अधिक से अधिक लोग विचार विमर्श की प्रक्रिया में सम्मिलित हो सकें। नागरिक केवल मतदान के संदर्भ में प्रतिनिधित्व को स्वीकार नहीं करते। वैधता आज के दौर में केवल मतदान प्रक्रिया से सम्बन्धित नहीं है यह मूल्यों के प्रति आपकी पुनः प्रतिबद्धता की स्थायित्त्वता से भी जुड़ी है। यह उन स्थितियों से भी जुड़ी है जिनकी आप परवाह करते हैं और जिनके लिए आप संघर्षरत हैं।

मैंने अनेक बार लाखों मत (वोट) प्राप्त किये हैं। मैं दो बार राष्ट्रपति पद पर निर्वाचित हुआ और मुझे 50 प्रतिशत से अधिक मतदाताओं का समर्थन मिला पर यह व्यापक जन समर्थन काफी नहीं है। यह आवश्यक है कि आप दिन प्रतिदिन अपनी वैधता को पुनः स्थापित करें और उसकी पुनः प्रतिबद्धता दोहरायें। यह लगभग ऐसा है कि आप प्रतिदिन प्रारम्भ से अपने को विभिन्न क्रियाओं में शामिल कर रहे हैं। वे लोग जो यह सोचते हैं कि उन्होंने लोगो का विश्वास प्राप्त कर लिया है वे वास्तव में स्वयं से छलावा करते हैं। आपको इस विश्वास को निरन्तर बनाये रखना पड़ता है और इसे पुनः स्थापित करने हेतु अर्थात् नवीनता देने हेतु उन मूल्यों की प्रति–बद्धताओं को दोहराना पड़ता है जो आपकी क्रियाओं को निर्देशित करती हैं।

अतः मैं आपको एक आखरी सलाह दूँगा कि आप राजनीति में प्रवेश न करें, यह बहुत कठिन प्रक्रिया है। ■

> समाजशास्त्र एक पेशे के रूप में

जापान में एक नारीवादी बनने पर

चिजूको उएनो, टोक्यो विश्वविद्यालय, जापान

चिजूको उएनो

चिजूको उएनो एक प्रसिद्ध व महत्वपूर्ण जापानी समाजशास्त्री, नारीवादी आलोचक एवं जन बुद्धिजीवी के रूप में महिला अध्ययन के क्षेत्र में जाना माना नाम है। वे ''पैट्रियारकी एण्ड कैपिटलिज्म'' (1990), ''द राइज एण्ड फाल ऑफ द जापानी माडर्न फैमिली'' (1994) (अंग्रेजी अनुवाद–2004), ''नेशनलिज्म एण्ड जैण्डर'' (1989) (अंग्रेजी अनुवाद 2009), ''द इराटिक एपरेटस'' (1989), ''द पालिटिक्स आफ डिफरेंस'' (2002), ''ए थॉट फॉर सरवाइवल'' (2009), ''मिसजिनी इन जापान'' (2010), ''सोश्यालजी ऑफ केयर'' (2011) सहित अनेक पुस्तकों की लेखक हैं। नारीवादी आन्दोलनात्मक सक्रियता में लम्बे समय से उनकी सहभागिता है और आज वे एक प्रसिद्ध अलाभकारी संगठन ''वीमेन्स एक्शन नेटवर्क'' (http://wan.or.jp/) की अध्यक्ष हैं। उनका पता इस शीर्षक ''फोर्टी इयर्स ऑफ जापानीज फैमिनिज्म'', http://worldwide-wan.blogpost.jp से जाना जा सकता है। इस शीर्षक पर वे पिछले 40 वर्षों से अधिक समय से जापानी महिलाओं के विषय में उपलब्धियों एवं पराजय का लेखा जोखा प्रस्तुत कर रही हैं।

स्व–अस्मिता की प्रक्रिया के लिए समाजशास्त्र एक आसान शब्द है। समाजशास्त्र के आधार पर मैं अपनी दिन प्रतिदिन की क्रियाओं को अनुसंधान का विषय मान सकती हूं। इन क्रियाओं में कामिक्स को पढ़ने से लेकर बस में यात्रिओं की बातचीज को सुन लेना जैसी प्रघटनाएं सम्मिलित हैं। समाजशास्त्री के रूप में मैंने उस समाज के विषय में गहरा संशय विकसित कर लिया हैं, जिसमें मैं रहती हूं। मैं यह नहीं कह सकती कि यह संशय सम्बन्धी वैचारिकी मुझे समाजशास्त्री बनाती है अथवा समाजशास्त्र का प्रशिक्षण मुझमें संशय सम्बन्धी वैचारिकता उत्पन्न करता है। कुल मिला कर मैं यह कह सकती हूं कि समाज शास्त्रीय ''हैबिटास'' किसी को यह देखने व जानने को प्रोत्साहित करता है कि क्या गलत है, एवं पागलपन, अशुभ, मूर्खतापूर्ण, अतार्किक एवं आश्चर्यजनक है अथवा सोच के परे है। इसके बदले लोक समाजशास्त्रियों के विषय में सोचते हैं कि वे पागल, ईर्ष्यालु, मूर्ख एवं अनोखी प्रकृति के हैं। इस आदत ने मुझे लैंगिक अध्ययनों के

> >

लिए भलीभांति पूर्ण तैयार कर दिया क्योंकि लैंगिक विश्व पूरी तरह पागलपन, मूर्खता, अनोखेपन एवं अतार्किकताओं से घिरा है। अपने युवा वर्षों के मुझे वह विचार आज भी याद हैं, ''आज जिसे गैर–सामान्य कह कर प्रस्तुत किया जाता है वह आने वाले कल में सामान्य बन जायेगा।'' अनेक तरीकों से यदि मैं देखूं तो मेरी भविष्यवाणी सच में बदल गयी है विशेषतः लैंगिक सम्बन्धों के संदर्भ में यह हुआ है।

लगभग 40 वर्ष पूर्व, जब 1970 के दशक में मैं विश्वविद्यालय की विद्यार्थी थी, अकादमिक समुदाय मुख्यतः पुरूषों का परिवेश था और महिलायें इस परिवेश से बाहर थीं। पुरूष एवं महिलाओं ने संयुक्त रूप में विद्यार्थी आन्दोलन में सहभागिता की पर महिलाओं के लिए यह बहुत निराशाजनक साबित हुआ। ''विद्यार्थी सक्रियता/आन्दोलन लड़कों का क्षेत्र है न कि लड़कियों का'' का विचार उभर कर आया। पुरूष सहयोगी अग्रणी पंक्ति में थे एवं उतने ही यौनिकतावादी थे जितने पुरातनपन्थी होते हैं।

विद्यार्थी आन्दोलन के समाप्त/असफल होने के उपरान्त मैं समाजशास्त्र के 'ग्रेजुएट स्कूल' में प्रविष्ट हुई जो वास्तविक विश्व से दूरी बनाये हुए जैसा था और जहाँ कोई अकादमिक आकांक्षा नहीं थी। वहाँ पर मैं महिला अध्ययनों के सम्पर्क में आयी जिन्हें अमेरिका से हाल में प्रारम्भ किया गया था। यह मेरे लिये आँख खोल देने वाला अनुभव था। मैंने यह सीख लिया कि मेरे द्वारा किये जाने वाले अध्ययन के लिए यह सर्वाधिक उपयुक्त क्षेत्र था। मैं इस प्रश्न से संघर्ष कर रही थी कि मैं कौन हूं इस प्रश्न में महिला होना एक केन्द्रीय मुद्दा था। यह मेरा भाग्य था कि इस प्रकार से सोचने वाली मैं अकेली थी।

जापान में महिला अध्ययन के क्षेत्र में अग्रणी स्थान पाने पर मुझे गर्व है क्योंकि यह क्षेत्र मुझसे पहले जापान में अस्तित्व में नहीं था। मेरी पीढ़ी के महिला अध्ययन के सभी विशेषज्ञ स्वनिर्मित है। हम लोगों ने एक अध्ययन समूह का गठन किया, एक दूसरे से सीखा, पत्रिकाओं का प्रकाशन किया एवं अपने पाठकों तक पहुँचने का पूरा प्रयास किया। एक युवा समाजशास्त्री के रूप में, जो विद्यमान समाजशास्त्र के प्रति बोरियत का अनुभव कर रही थी, मैंने लैंगिकता एवं यौनिकता के विषयों को शोध का मुद्दा बनाया। इन मुद्दों में मैं गहराई से रूचि ले रही थी और जिन पर मैं बिना क्रोध की भावनात्मक अनुभूति के साथ सीमित रूप में ही लिख सकती थी।

जापान में महिला अध्ययन का उद्भव एवं विस्तार अकादमिक क्षेत्र के बाहर हुआ। प्रारम्भ में हम लोग यह अपेक्षा भी नहीं कर रहे थे कि हमें शैक्षणिक पद प्राप्त होगा, शोध अनुदान मिलेगा, स्वीकृत अकादमिक शोध पत्रिकाओं को खरीदने हेतु आर्थिक सहायता मिलेगी। अतः हमने अपने क्षेत्र में स्वयं ही सब कुछ विकसित किया। महिला केन्द्रित अध्ययनों को उस समय गम्भीर अकादमिक क्षेत्र के रूप में मान्यता प्राप्त नहीं थी। लेकिन 10 वर्ष के अन्दर अर्थात् 1980 के दशक में कुछ अकादमिक शोध पत्रिकाओं ने हमें उद्धृत करना प्रारम्भ किया अर्थात् हमारी शोध पत्रिकाओं को उद्धृत करने लगे। बीस वर्ष के अन्दर अर्थात् 1990 के दशक में टोक्यो विश्वविद्यालय में लैंगिक एवं पीढ़ी अध्ययन हेतु मुझे अध्यापन हेतु आमन्त्रण मिला। यह जापान का सबसे प्रतिष्ठित विश्वविद्यालय है। मेरी कक्षा के विद्यार्थियों को शोध विषय अपनी रूचि के अनुसार चुनने की पूर्ण स्वतन्त्रता थी। उदाहरणार्थ लड़कियों के कॉमिक्स में महिलाओं का प्रतिनिधित्व, समलिंगीय समुदाय, एकल माताओं के लिए विवेचनात्मक वेवसाइट एवं स्व कामेच्छा पूर्ति का इतिहास आदि। ऐसे विषयों पर उन्हें स्नातक स्नातकोत्तर यहाँ तकि कि पीएचडी के स्तर पर शोध ग्रन्थ लिखने की स्वतन्त्रता दी गयी हालांकि उन्हें यह बता दिया जाता था कि उनके अकादमिक कैरियर के भविष्य की कोई गारण्टी नहीं है।

समाजशास्त्र की सहायता से मैं महिला अध्ययनों को विकसित कर सकी। यदि गायत्री स्पिवाक के उत्तर औपनिवेशिक लेखन से कुछ लिया जाय तो कहा जा सकता है कि ''अपने शत्रु के हथियारों/उपकरणों के साथ संघर्ष करो।''

''पैट्रिआर्की एण्ड कैपीटलिज्म (1990) के लेखक के रूप में मैंने पुरूष सम्बन्ध के बारे में इस तर्क को आगे बढ़ाने में सफलता प्राप्त की कि महिलाओं के साथ उनके सम्बन्ध में कुछ न कुछ अनुपस्थित होता है। मेरे एक पाठक ने मुझसे कहा कि ''आपकी पुस्तक पढ़ने के बाद मुझे यह अहसास हुआ कि मेरी पत्नी किस विषय को लेकर शिकायत करती रहती थी।'' इसके विपरीत उसे यह करना था कि पहले वह अपनी पत्नी को सुनता कि वह क्या कह रही है। पर उनकी स्वयं की समस्याओं को समझने के लिए हमारे पास इसके अतिरिक्त और कोई रास्ता नहीं हैं कि हम प्रभुत्व की भाषा को प्रयुक्त करें। यह उत्तर औपनिवेशिक स्थिति के समकक्ष है जहॉ अकादमिक समुदाय में अपने अस्तित्व को बनाये रखने हेतु अंग्रेजी भाषा का प्रयोग किया जाता है जहॉ वैश्वीकरण का अभिप्राय अंग्रेजी शब्दों की अभिव्यक्ति मूलक केन्द्रीयता से है। तदनुसार मैं द्विभाषी बन गयी और अंग्रेजी तथा जापानी दोनों भाषाओं को प्रयुक्त करने लगी इसके साथ ही पुरूषों एवं महिलाओं की भाषा, अकादमिक एवं दिन प्रतिदिन की भाषा, स्तरीय एवं स्थानीय भाषा आदि के भी प्रयोग करने लगी। समाजशास्त्री का स्थान इन दोनों भाषाओं के मध्य होना चाहिए ताकि कार्ल मैनहीन के सीमान्त पुरूष (महिला) के सिद्वान्त की वैद्यता को आज भी अस्तित्व में है का तर्क दिया जा सके। यह सिद्वान्त आज भी वैद्य है।

महिलाओं का अध्ययन अकादमिक समुदाय में महिलाओं की सक्रियता के विषय में प्रकार्यात्मक साम्यता को प्रस्तुत करता है। महिलाओं के अध्ययन के सांस्थीकरण के ठीक बाद एक प्रश्न उभर कर आने लगा। हम उसके लिए उत्तरदायी थे पर किस परिणाम के साथ? महिलाओं के अध्ययन ने क्या पुरूष–केन्द्रित अध्ययनों की प्रकृति को चुनौती दी है? अथवा विद्यमान अध्ययनों एवं विषयों के साथ महिलाओं के अध्ययन ने अपने सांस्थीकरण के माध्यम से क्या समायोजन कर लिया है? ये प्रश्न महिलाओं की सैन्य बल में सहभागिता के समकक्ष है। क्या महिलाओं की सहभागिता सैन्य बल को परिवर्तित करती है अथवा क्या यह होता है कि अपनी सहभागिता के माध्यम से महिला सैन्य बलों की सी हो जाती है? इनमें से कौन सा पक्ष पहले आता है? यह कहते हुए खेद हैं कि इतिहास बताता है कि बाद वाला पक्ष पहले आता है अर्थात् संस्था इतनी सक्षम है या कुशल है कि वह अपने विरोधियों को अपने में समाहित कर लेती है।

अकादमिक विषयों के आधारभूतीय सिद्वान्तों अर्थात् वस्तुपरकता, तटस्थता, परीक्षणशीलता एवं अस्वीकृति/ खण्डन की क्षमता के साथ हम आज भी संघर्ष कर रहे है। लेकिन बिना मूल्य निर्णयात्मकता के कैसे उपयुक्त शोध विषय का चुनाव किया जा सकता है? बिना मूल्य प्रतिबद्धता के कैसे हम यह दावा कर सकते हैं कि कुछ ऐसा है जो गलत है? भावी समाज की आशा के बिना हम किसी कठिन एवं कष्टकारी अनुसंधान प्रयास को जारी कर सकते है जिससे हम किसी न किसी पुरस्कार की भले ही वह छोटा हो की अपेक्षा करते हों? इमेरिटस प्रोफेसर के पद को सेवानिवृत्ति के उपरान्त पाने के बाद मैं केवल यह कह सकती हूँ कि मुझे समाजशास्त्री बनने में खुशी है और समाजशास्त्र मेरे स्व का एक भाग बन चुका है। ■

> समाजशास्त्र एक पेशे के रूप में

एक जीवन भविष्य के रूप में समाजशास्त्री

व्लादिमीर यादोव, इन्स्टीट्यूट ऑफ सोशियोलोजी, रशियन अकादमी ऑफ साइंसेज एवं आई.एस.ए. (अन्तर्राष्ट्रीय समाजशास्त्र परिषद) के भूतपूर्व उपाध्यक्ष, 1990–1994

व्लादिमीर यादोव

व्लादिमीर यादोव सोवियत संघ में, समाजशास्त्र के प्रवर्तकों में से एक थे, जहाँ कि इस विषय को एक 'बुर्जुआविज्ञान' के रूप में अनिश्चित अस्तित्व के दौर से गुजरना पड़ा। 1960 के दशक में व्लादिमीर यादोव ने प्रथम समाजशास्त्र प्रयोगशाला, जिसे लेनिनग्राद विश्वविद्यालय में स्थापित किया गया, में केन्द्रीय योगदान दिया। इसके उपरान्त ''मैन एण्ड हिज वर्क'' का प्रकाशन उन्होंने किया इसके साथ ही पद्धतिशास्त्र पर उन्होंने प्रथम पाठ्य पुस्तक का प्रकाशन किया जिसने नवीन पेशे को परिभाषित किया। सामाजिक व्यवहार के स्व नियमन के एक सामाजिक–मनोवैज्ञानिक सिद्धान्त को उन्होंने विकसित किया। प्रयोगात्मक सामाजिक मनोविज्ञान की यूरोपियन समिति के नेतृत्व हेतु उनका निर्वाचन हुआ। उत्तर सोवियत रूस में उन्हें रशियन अकादमी ऑफ सांइसेज में इन्स्टीट्यूट ऑफ सोश्योलोजी का निदेशक बनाया गया जहाँ समाजशास्त्र के बाहुल्यतामूलक पैराडिम से सम्बद्ध उपागम विकसित हुआ। अनेक वर्षों तक विदेशों में वे समाजशास्त्र के लिए राजदूत के रूप में सक्रिय रहे तथा 1990 से लेकर 1994 के मध्य वे अन्तर्राष्ट्रीय समाजशास्त्र परिषद (आई एस ए) के उपाध्यक्ष रहे। रूसी समाजशास्त्रियों की उदारवादी–लोकतान्त्रिक शाखा का वे नेतृत्व करते हैं यह शाखा संकीर्णतावाद के उभार का विरोध करती है। सोवियत समाजशास्त्र में प्रारम्भ से लेकर वर्तमान तक अनेक विद्यार्थियों को उन्होंने प्रशिक्षित किया। ये विद्यार्थी व्लादिमीर यादोव को बहुत प्यार करते हैं।

1960 के दशक के प्रारम्भ में, मैं समाजशास्त्री बना एवं आज वह समय हैं जब मैं अपनी जीवन यात्रा के परिणामों पर संक्षिप्त निष्कर्ष प्रस्तुत करूं। मैं अपने जीवन के इस मोड़ पर स्वयं को सौभाग्यशाली अनुभव करता हूं। सोवियत यूनियन का सरकारी मीडिया अनेक वर्षों तक समाजशास्त्र को ''पूँजीवादी आभासी विज्ञान'' के रूप में आरोपित करता रहा। 1950 के दशक के अन्त में स्तालिन के शासन की समाप्ति के उपरान्त हमारे सम्मुख एक सीमित उदारवाद का युग शुरू हुआ। मैं एवं मेरे सहयोगियों ने लेनिनग्राद विश्वविद्यालय में एक समाजशास्त्रीय प्रयोगशाला की स्थापना की एवं ठीक उसी समय यू एस एस आर

> >

अकादमी ऑफ साइंसेज के दर्शनशास्त्र के संस्थान में श्रम एवं अवकाश के नवीन स्वरूपों के अध्ययन के रूप में समाजशास्त्र के एक मार्ग का प्रारम्भ हुआ। एक तरीके से यह समाजशास्त्रीय आन्दोलन की शुरूआत थी। समाजशास्त्र के सभी प्रवर्तकों की हालांकि भिन्न भिन्न शैक्षणिक पृष्ठभूमि थी और सभी इस नवीन पेशे को बाहरी विद्यार्थियों के रूप में सीख रहे थे और आज एक दूरस्थ शिक्षार्थी के रूप में हम यह कह सकते हैं कि पाठ्य पुस्तकें (जो मुख्यतः अंग्रेजी में थी) जिन्हें प्राप्त करना कठिन था, को कार्बन कापी कर उनका अनुवाद कर सिगरेट कागजों के प्रयोग द्वारा उन्हें वितरित किया जाता था।

पोलैण्ड के समाजशास्त्रियों के साथ हमारा संवाद उस समय अत्यन्त महत्वपूर्ण था। एक ''बन्द व्यवस्था (लौह रूपीय)'' के बावजूद पोलैण्ड में समाजशास्त्र एक अकादमिक विषय में रूप में स्थापित था। पूर्वी यूरोपीय देशों के साथ मिलकर उसी प्रारूप के अन्तर्गत संयुक्त शोध परियोजनाओं का संचालन किया गया। मैं भाग्यशाली था क्योंकि मेरा घनिष्ट रूप में संवाद जान स्जेपान्सिकी से था जबकि जिगमण्ट बाउमन ने मुझे सिद्धान्तों का शिक्षण दिया। स्टीफान नोवाक के साथ अनेक घण्टे व्यतीत कर मैंने क्षेत्रीय अनुसंधान की बारीकियों को सीखा। आज भी रशियन अकादमी ऑफ साइंसेज के मानविकीय विश्वविद्यालय में समाजशास्त्र विभाग के अधिष्ठाता के रूप में मेरा वारसा विश्वविद्यालय के समाजशास्त्र विभाग से घनिष्ठ सम्बन्ध है जहाँ स्टीफान नोवाक की परम्परा का निर्वाह क्राइसटॉफ कोसेला कर रहे हैं। प्रौढ़ पीढ़ी के मध्य पनपी पेशेगत सहयोग की प्रथा अब नवीन पीढ़ी को हस्तान्तरित हो गयी है।

1958 में सोवियत सत्ता ने कठोर विचारधारायी नियन्त्रण के अन्तर्गत सोवियत समाजशास्त्र परिषद को स्थापित करने की अनुमति प्रदान की। इसके उपनियमों ने यह प्रदर्शित किया कि ऐतिहासिक भौतिकवाद मार्क्सवादी समाजशास्त्र का आधार है। सरकार ने समिति की स्थापना में निहित नियमों के द्वारा यह निर्देश दिये कि वे अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनों में मार्क्सवादी समाजशास्त्र की स्थापनाओं को आगे बढ़ाये। पर किसी न किसी रूप में अन्तर्राष्ट्रीय समाजशास्त्र परिषद के सम्मेलनों में युवा समाजशास्त्रियों की उपस्थिति ने पेशेवरों को नवीन सम्पर्कों के साथ जोड़ा। परिणामस्वरूप सोवियत समाजशास्त्रियों एवं अन्य देशों के सहयोगियों के मध्य मित्रतामूलक सम्बन्ध स्थापित हुए।

आज के रूस में समाजशास्त्र एक सामान्य विश्वविद्यालय विषय के रूप में स्थापित है। लेकिन (दुर्भाग्यवश) समाजशास्त्रियों के मध्य पेशेवर एकजुटता की अनुभूति नहीं है। समाजशास्त्रीय समुदाय अनेक स्वायत्तशासी समितियों में विभाजित हैं। पियोटर स्टॉम्पका के शब्दों में उत्तर–सोवियत ''सांस्कृतिक पीडा'' यह है कि सोवियत एवं उत्तर–सोवियत समाजशास्त्र के रूप में ध्रुवीकरण उभरा है। विक्टौर वाख्तायन के एक लेख के प्रकाशन के उपरान्त उभरे दृष्टिकोणों व विवादों को इस ध्रुवीकरण के उपयुक्त उदाहरण के रूप में देखा जा सकता है।[1]

समाज की व्याधियाँ जैसे भ्रष्टाचार, नृवंशीय संघर्ष एवं अन्य आज महत्वपूर्ण अनुसंधान विषय के रूप में उभरे हैं। लेकिन पद्धतिशास्त्रीय स्तर, यहाँ तक कि अकादमिक अनुसंधान परियोजनायें खेदवश उस वैचारिक, सैद्धान्तिक एवं पद्धतिशास्त्रीय स्तर से बहुत निम्न हैं जो कि सोवियत दौर में विद्यमान थीं और जिन्हें मुख्य समाजशास्त्रियों ने स्थापित किया था। इसके मुख्य कारणों में से एक यह है कि दक्ष एवं बुद्धिमान महाविद्यालय स्नातकों का रूझान इस ओर अपर्याप्त है वे अध्यापन कार्य में कम वेतन प्राप्ति के कारण रूचि नहीं लेते। सामान्य जन की दृष्टि में समाजशास्त्र का पेशा ''जनमत सर्वेक्षक'' का सा बन गया है। अनेक व्यक्ति, आधारभूतीय पक्षों के प्रति सामान्य दृष्टि रखने वाले समाजशास्त्रियों एवं पत्रकारों के समूह जिनमें कुछ लोग अनुत्तरदायी भी होते हैं, आंकड़ों के साथ सामन्जस्य बैठाने में दक्ष होते हैं और पूर्व निर्धारित उत्तरों के साथ प्रश्नों की रचना कर अध्ययनों की प्रस्तुति कर देते हैं। ये आंकड़े विभिन्न स्थितियों के साथ समाहित कर दिये जाते हैं। यह स्थिति खेदजनक है।

किसी भी परिवेश में एक समाजशास्त्री की नागरिकीय जिम्मेदारियाँ भी होती हैं जो पेशेवर ज्ञान एवं अनुभवों से किसी भी रूप में कम नहीं हैं। मैं विद्यार्थियों के साथ सम्पर्क में रहता हूँ और उनसे वार्तालाप में संलग्न रहता हूँ अतः मैं आशावादी हूँ हालाँकि इन विद्यार्थियों में से कुछ ही समाज की सेवा करने हेतु इस पेशे को चुनते हैं। निकट भविष्य में, मैं एक ऐसी पीढ़ी की अपेक्षा करता हूँ जो इतिहास की प्रक्रिया के चरणों में निरन्तर आगे बढ़े और समाजशास्त्र को एक ऐसे पेशे से सम्बन्धित आकार दे जो हमारे शिल्प की दृष्टि से उपयुक्त हो। ■

[1] **V. Vakhshtayn, "On the Lamentable State of Post-Soviet Sociology."** (*Global Dialogue* **2.3**); **Zh. Toschenko and N. Romanovsky, "On the Real State of Sociology in Russia: Opposing Vakhshtayn's Polemics"** (*Global Dialogue* **2.5**); **V. Vakhshtayn, "We have it all. But do we have anything?"** (*Global Express* **8.20.2012**).

> सफर करता फवेला

बियान्का फ्रेयर–मेडिरोस, गेटुलियो वरगास फाउण्डेशन, रियो डी जेनेरियो, ब्राजील

जे कोल्हास एवं डी उर्हान चित्रकार द्वै द्वारा सांता मार्टा का काल्पनिक चित्र। फवेला का यह पुर्नअभिकल्प, जैसा कि इसके निवासियों ने बनाया है, सौन्दर्यपरक हस्तक्षेप के एक अत्यधिक प्रभावशाली उदाहरण का प्रतिनिधित्व करता है जो कि सांता मार्टा में ''पर्यटक टकटकी'' (tourist gaze) का मार्गदर्शन करती है। चित्र बियान्का फ्रेयर–मेडिरोस द्वारा।

रियो डी जेनेरियों में फवेला भ्रमण, केप टाउन और सोवेटो में टाउनशिप भ्रमण, मुंबई, मनीला, जकार्ता, काहिरा, नैरोबी में झुग्गी झोंपड़ी भ्रमण होता है। त्वरित आर्थिक एकीकरण, नवउदारवादी नगरीय प्रशासन और वैश्वीकृत मीडिया संस्कृति के संदर्भ में, 1990 के दशक के प्रारंभ से ही वैश्विक दक्षिण के महानगरों में स्थित इलाकें, एक पर्यटन वस्तु में परिवर्तित हो रहे हैं जिनका मौद्रिक मूल्य प्रोत्साहकों और उपभोक्ताओं की सहमति से तय होता है।

रियो डी जेनेरियो की बीस फीसदी जनसंख्या फवेला निवासियों की है : नगरीकरण और जीवन गुणवत्ता के बहुत भिन्न स्तर लिए कुछ एक हजार समुदायों में लगभग 1.3 मिलियन लोग रहते हैं। कार्निवल, फुटबाल और सेक्सी महिलाओं के साथ, अंतराष्ट्रीय कल्पना में फवेला भी ब्राजील की पारंपरिक छवि का हिस्सा बन गये हैं। वृहद ग्रंथ सूची के निरूपण के अनुसार, ब्राजीलियों की कल्पना में फवेला एक केन्द्रीय, असम्बद्ध और भौतिक यथार्थ में परिवर्तित हो गये हैं

> >

सांता मार्टा में विश्वविख्यात ब्राजीलियन कलाकार, रोमेरो ब्रिटो द्वारा किंग आफ पोप का बनाया चित्र अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटकों के केमरों का ध्यान आकर्षित करता है। चित्र बियान्का फ्रेयर–मेडिरोस द्वारा।

जिन पर असमानता, हिंसा, नागरिकता जैसे प्रमुख मुद्दे विभिन्न सामाजिक कर्त्ताओं द्वारा प्रक्षेपित, बहस और निपटे जाते हैं। इस प्रक्रिया में 'सफर करते फवेला' उभरते हैं–कल्पना और चपल तत्व का स्थल। वैश्विक वस्तु और एक ट्रेडमार्क के रूप में इनका प्रयोग उत्पादों की विस्तृत और एक ट्रेडमार्क के रूप में इनका प्रयोग उत्पादों की विस्तृत श्रंखला के विज्ञापन अभियानों – सिट्रोन और निसान कार से लेकर इकिया फर्नीचर, दुनिया भर के रेस्तराँ, दुकानें और क्लबों को रोचक बनाने में हो रहा है। एक तरफ, पर्यटन स्थल के रूप में यह वैश्विक आख्यान और व्यवहार जो गरीबी को एक उपभोग की वस्तु के रूप में पुनः प्रकट करने का हिस्सा है वहीं दूसरी ओर यह तथाकथित रियेलेटी ट्यूरस जो पेशेवर कर्मियों के नजदीकी देखरेख के अन्दर पर्यटकों की दुनिया से पूर्ण रूप से विपरीत सीमांतीय क्षेत्रों के साथ प्रत्यक्ष और सुरक्षित संपर्क का वादा करता है, के विस्तार का हिस्सा है।

वे हिस्से जिन्हें हमेशा छिपाने की कोशिश की जाती थी, के तरफ बढ़ते पर्यटन रूझान को ब्राजील के अधिकारियों ने शुरू में नजरअंदाज और कई बार खुले रूप से धिक्कारा। इस बीच ब्राजील के कुलीन वर्ग ने यह दावा किया कि फवेला पर्यटन एक घृणित गतिविधि है जो राष्ट्र की छवि को खराब करती है और गरीबों को चिड़ियाघर समान प्रदर्शन में फाँसती है। यद्यपि, अब, कई सामाजिक कर्ता और संस्थाएँ शहरी विपणन और नगरीय उद्यमतावाद के सिद्धान्तों का पालन करते हुए और फीफा विश्व कप (2014) और ओलम्पिक खेल (2016) की प्रत्याशा में सफर करते फवेला को फिर से सामने ला रहे हैं। लगभग 15 वर्षों के अन्तराल में, दो प्रतिष्ठित घटनाएँ हमें इस महत्वपूर्ण बदलाव और किस प्रकार से यह आज समेकित किया जा रहा है, को समझने में मदद करती हैं।

> जनवरी, 1996

स्पाइक ली द्वारा निर्देशित म्यूजिक विडियो They don't care about us शूट करने के लिए माइकल जैक्सन ने ब्राजील की यात्रा की। रियो डी जेनेरियो के समृद्ध दक्षिण क्षेत्र में स्थित सांता मार्ता फवेला, विडियो के लिए चुनी गई एक साइट है। यह विडियो नगरीय

>>

गरीबी के प्रति अधिकारियों और कुलीन वर्ग की उदासीनता का पर्दाफाश करने के उद्देश्य से बनाया जा रहा है।

सांता मार्ता की अधिकांश आबादी ने जहाँ इस घटना का जश्न मनाया वहीं, सरकारी अधिकारियों ने इसके प्रति रोष प्रकट किया। रियो डी जेनेरियो राज्य के तत्कालीन राज्यपाल मारसेलो एलेन्कार ने जैक्सन को फवलों की आर्थिक मदद कर अपने अच्छे इरादों को साबित करने की चुनौती दी।

तत्कालीन खेल मंत्री और फुटबाल के पूर्व सुपर स्टार पेले ने आशंका व्यक्त की कि यह 2004 के ओलम्पिक की मेजबानी करने के अवसर को बर्बाद कर देगा।

रियो डी जेनेरियो के प्रमुख अखबारों के इस दावे के साथ कि शूटिंग का स्थान और फिल्म निर्माण के दौरान सुरक्षा प्रदान करने के लिए 50 निवासियों की भर्ती की कीमत स्पाइक ली और सांता मार्ता का नशीली दवाओं के सम्राट मारसिन्हों वी.पी. के मध्य वार्ता से तय की गई थी, ने राजनैतिक वातावरण को गर्मा दिया। जिले के अटॉर्नी ने तर्क देते हुए कि पर्यटन उद्योग को इससे गंभीर नुकसान हुआ है, फिल्म को रोकने की माँग रखी। ली ने ब्राजील को ''बनाना गणराज्य'' कहा जिसने लोक अधिकारियों के बीच आहत गर्व के जज्बे को अधिक उत्तेजित किया।

> अगस्त, 2010

रियो टॉप टयूर प्रोग्राम की शानदार शुरूआत के लिए सांता मार्ता फवेला ने तत्कालीन राष्ट्रपति लूला, रियो डी जेनेरियो राज्य के राज्यपाल, सर्जियों कबराल और रियो डी जेनेरियो के शहरी मेयर एडुवर्डो पेस का स्वागत किया। ब्राजील के पर्यटन मंत्रालय के सहयोग से शुरू रियो टॉप टयूर ऐसी कई गतिविधियों में से एक है जो Pacifying Police Units की छत्रछाया में आती हैं (पुर्तगाली परिवर्णी शब्द के रूप में UPP)

राष्ट्रपति लूला ने रियो टॉप टयूर प्रोग्राम को, शांत फवेला द्वारा स्वयं निवासियों को सम्मिलित कर, उनकी पर्यटन क्षमताओं के सर्वाधिक उपयोग के रूप में प्रस्तुत किया। इसके अतिरिक्त उन्हें उनकी पर्यटन क्षमताओं के विकास के लिए सरकारी समर्थन भी प्राप्त होगा। यह विडम्बना ही है कि यह घटना उसी स्थान पर हुई जहाँ माइकल जैक्सन ने अपना म्यूजिक विडियो शूट किया था और जहाँ पॉप के राजा की कांस्य प्रतिमा स्थापित है। यह प्रतिमा, अस्थायी झोपड़ियों और समुद्र के सुन्दर दृश्य के साथ सांता मार्ता का एक प्रमुख पर्यटन आकर्षण बन गयी है।

> मई, 2013

मेरे इस लेख को लिखने तक, न सिर्फ सांता मार्ता में बल्कि कई शांत फवेलों में सैलानी फवेला की बाजारी योग्यता की प्रक्रिया चल रही है। यह प्रक्रिया राज्य और वृहद स्तर पर नागरिक समाज द्वारा समर्थित है और जिसमें स्वयं फवेला के भीतर से महत्वपूर्ण नेतृत्व भी सम्मिलित है। फूको की भाषा में, शासकीय स्वरूप न केवल बाह्य दबाब अपितु फवेला निवासी, अब भावी पर्यटन उद्यमी के रूप में देखे जाते हैं, की स्वतन्त्रता और स्वायत्तता के माध्यम से काम करते हैं।

बोल्टानस्की के शब्दों में, एक विशेष फवेला की पर्यटन आकर्षण के रूप में पात्रता, उसके द्वारा पर्यटकों को प्रदान की जाने वाली सेवाओं की निपुणता मेजबान के रूप में निवासियों के प्रदर्शन और एक सामान्य फवेला से अपेक्षित को प्रदान करने की क्षमता से मापा जाता है अर्थात् गरीबी, अव्यवस्था का स्तर, नियन्त्रित हिंसा और खुशी। इस तर्क के अनुसार, पर्यटकों का भी उनके बाजार मोल के आधार पर आंकलन होता है : वे ऐसे उपभोक्ता के रूप में देखे जाते हैं जो अपनी उपस्थिति एवं विभिन्न उत्पाद जैसे टिकट, स्मृति चिन्ह, पेय और भोजन इत्यादि की खरीद के फलस्वरूप एक विशेष फवेला के सामाजिक और आर्थिक विकास में योगदान देते हैं।

यहाँ यह उल्लेख करना आवश्यक है कि हम यहाँ सरकारी कार्यवाही को पीछे हटते नहीं देख रहे हैं यद्यपि सफरी फवेला की यात्रा की जाती है और यह सरकारी सहमति से दुनिया भर में घूमता है, शांत और गैर–शांत फवेला के वास्तविक आधार में गतिशीलता प्रतिमान अभी भी शक्ति के वैध और/या अवैध तंत्र से अत्यधिक नियन्त्रित और संकोची होते हैं। अतः जो हम देखते हैं, वह बाजार द्वारा अधिकाधिक रूप से निगले हुए क्षेत्रों को नियमित करने हेतु रणनीति, युक्ति और कार्यप्रणाली का पुनः निरूपण है। ■

[1] As in April 2013, 32 favelas were "pacified" in Rio de Janeiro following basically the same strategy: the government publicly announces an occupation before the BOPE (Special Force Unit) goes into a specific favela, giving criminals time to flee and avoiding any violent confrontation between them and the police.

> बांग्लादेश में वस्त्र आपदा के पीछे

मल्लिका शाक्या, दक्षिण एशियाई विश्वविद्यालय, दिल्ली, भारत

बांग्लादेश में ढाका के पास सावर में ध्वस्त वस्त्र फैक्ट्री के मलबे में दबे हुए दो पीडित।
चित्र तस्लीमा अख्तर द्वारा।

> >

अप्रेल, 2013 में सावर, बांग्लादेश में एक कारखाने की इमारत के ढहने से 1100 से भी अधिक वस्त्र कर्मीयों की मौत हुई। सार्वजनिक विरोध के बावजूद, बड़े पैमाने पर होने वाली इस आपदा को जन्म देने वाली शोषण की अंतर्निहित व्यवस्था पर बहुत कम कहा गया।

वस्त्र उद्योग के अशांत/उपद्रवी इतिहास से परिचित यह जानते हैं कि यह उद्योग दुर्घटना–प्रवण है और बांग्लादेश हादसा ऐसा था जो एशिया या अफ्रीका में कहीं भी हो सकता था। फिर भी, बांग्लादेश में राणा प्लाजा की इमारत के ध्वस्त होने पर कर्मियों और उनकी यूनियन ने बहुत देर से प्रतिक्रिया की। उनके बजाय, सबसे तीव्र प्रतिक्रिया यूरोप और अमरीका के वस्त्र थोक विक्रेता और उपभोक्ताओं की तरफ से हुई जिसने इस हादसे की व्याख्या को घुमा दिया।

> 'देशज सूचना'

''बांग्लादेश में एक और निरोध्य त्रासदी'' न्यूयोर्क टाइम्स ने खबर लिखी और यही कथन बी बी सी, ग्लोब एवं मेल, रयूट्रस और अन्य ने भी कहा। इन सभी ने इस संकट को तीसरी दुनिया में एक और दुर्घटना, जिसका वास्ता लालची व्यापारियों, भ्रष्ट नेताओं, अक्षम नौकरशाही और गरीबी की बड़ी संख्या, जिसके पास मृत्यु के समक्ष उपस्थित होने के अलावा कोई और विकल्प नहीं है, के रूप में देखने के अलावा किसी अन्य रूप में देखने से इन्कार किया। देशज परिपेक्ष्य, जिसने बुर्जआ खरीदारों को इस बात के लिए मनाया कि इसका समाधान कारखाना मालिकों की गिरफ्तारी या उनके बहुराष्ट्रीय खरीदारों पर जुर्माना लगा कर है, भी तर्कसंगत था।

प्रारंभ में मीडिया ने इसका दोष ढ़हने वाली इमारत के मालिक सोहेल राना पर डाला जिसने यह कहा था कि यह इमारत कार्य करने के लिए सुरक्षित थी। मृतकों की संख्या 400 पहुँचने पर, चार दिन बाद, खरीदारों के छोटे समूह से पीड़ितों को औसत मुआवजा दिलवाया गया। एक सप्ताह और 700 मृतकों की संख्या की पुष्टि के बाद, यूरोपीय संघ ने यूरोपीय संघ बाजार में शुल्क मुक्त वस्त्र निर्यात करने की बांग्लादेश की पात्रता को रद्द करने की घमकी दी। एक महीने बाद और जब मृतकों की संख्या 1100 से भी अधिक हो गई, बांग्लादेश सरकार ने वस्त्र उद्योग के राष्ट्रीय श्रम कानून में संशोधन कर श्रमिक यूनियन के प्रवेश की अनुमति दी। शीघ्र ही, संयुक्त राष्ट्र संघ ने विश्व बैंक के Doing Business के संकेतकों, जिन्होंने श्रम के लचीलेपन की औद्योगिक प्रतिस्पर्धा के लिए एक पूर्व शर्त के रूप में वकालत की थी, की वैधता को चुनौती दी।

वस्त्र आपदा के केन्द्र में श्रम संगठन हैं। राना प्लाजा में अधिकांश कर्मी इसलिए मरें क्योंकि उन्हें इतारत की दीवारों के तड़कने और अन्य सभी व्यवसायों के इमारत छोड़ने के पश्चात् भी वहॉ काम करने पर मजबूर किया गया। वस्त्र कर्मियों के पास कारखाना मालिक को चुनौती देने के लिए कोई यूनियन नहीं थी। एक आधुनिक, लोकतांत्रिक राष्ट्र में 35 लाख लोगों को रोजगार देने वाला उद्योग असंगठित हो यह न सिर्फ इस उद्योग पर नियन्त्रण रखने वाले स्थानीय और वैश्विक पूंजीपतियों की तरफ अपितु उन विकास पेशेवरों की तरफ भी इंगित करता है जो इसके नियामक हैं। अंतराष्ट्रीय सहायता संगठनों की तीसरी दुनिया के औद्योगिकरण में प्राधान्य उपस्थिति रही है और श्रमिकों को अदृश्य करने में उनकी भूमिका महत्व–पूर्ण रही है।

यह विश्व बैंक के Doing Business संकेतकों और ILO के अंतराष्ट्रीय आचार संहिता के शासन जैसे प्रोजेक्टों में देखा जा सकता है। दोनों ही यह प्रचार करते हैं कि श्रमिकों की उत्पादकता और सुरक्षा, पूंजीपतियों और उनके श्रम निरीक्षकों के हाथों में रहने पर बेहतर रहेगी। इस सिद्वान्त के आधिपत्य के कारण वस्त्र उद्योग में श्रम संघवाद न सिर्फ बांग्लादेश में बल्कि एशिया और अफ्रीका में भी पहले से ही रूक गया है। श्रम के विराजनैतीकरण का औचित्य औद्योगिकरण को सिर्फ बाजार में मांग और पूर्ति के प्रकार्य के रूप में समझने की न्यूनकारी समझ से और मानवीय उद्यम को तैयार करने वाली जटिल राजनैतिक अर्थव्यवस्था से अलग होने के रूप में देखा जाता है।

> मल्टीफाइबर व्यवस्था (MFA)

यह सोचना कि सिर्फ 'बाजार' ही, दुनिया के दूर दराज तक पंजे फैलाये हुए वस्त्र दानव के उत्तरदायी है, त्रुटिपूर्ण होगा। यह सच है कि इसकी श्रम प्राधान्य प्रकृति ने प्रवासी श्रमिकों को आकर्षित किया है और फिर बाद में गतिशील/चलनशील कर्मशाला का प्रचलन बढ़ाया। उन्नीसवीं शताब्दी की स्वेटशॉपस (मजदूरों के काम करने की जगह) गहन रूप से पूर्वी–यूरोपीय यहूदी प्रवासी कामगारों (महिला) से भरी हुई थी जबकि बींसवी शताब्दी के मध्य तक अधिकांश वस्त्र कार्य पूर्वी एशिया में स्थानान्तरित हो

बहुरेशा व्यवस्था (Multifibre Arrangements) के बाद व्यापार प्रतिमानों को अत्यधिक तीव्र प्रतियोगिता के अन्तर्गत पुनःसंगठित किया गया, वस्त्र उत्पादन के पहले से कहीं अधिक अनिश्चित प्रतिमानों के साथ।

गया। लेकिन वैश्विक वस्त्र उद्योग के फैलाव के ताजा प्रकरण का कारण संयुक्त राज्य द्वारा मेहनत से तैयार की गई जटिल व्यापार प्रणाली है, जिसने आज वैश्विक स्तर पर वस्त्रों का उत्पादन कैसे होगा यह निश्चित किया है। वस्त्रों के कितने पीस –मद और डिजाइन के अनुसार – तीसरी दुनिया के देश व्यक्तिशः संयुक्त राज्य को निर्यात कर सकते हैं। इस बात का 1974 की मल्टीफाइबर व्यवस्था (MFA) ने बड़ी विस्तृत विवरण के साथ इसका आदेश दिया है।

1974 और 2004 के मध्य, दुनिया के किसी भी कोने से निर्यात किया गये वस्त्र को अमरीकी तट पर प्रवेश से पहले व्यक्तिगत 'वीसा' लेना आवश्यक था। अमरीका के सामरिक हितों को दॉव पर लगाकर, सम्भावित प्रतिद्वंदी देशों, जैसे –चीन को कम 'कोटा' दिया गया जबकि बांग्लादेश और लेसोथो जैसे छोटे देशों को अधिक 'कोटा' दिया गया। यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि 1970 के दशक के शुरूआत तक लगभग न के बराबर बांग्लादेश के वस्त्र उद्योग, ने कुछ भी दशकों में 35 लाख श्रमिकों को रोजगार प्रदान कर चरघातांकी रूप से विस्तार किया है।

प्रारंभ में MFA की एक अस्थायी उपकरण के रूप में कल्पना की गई थी परन्तु इसे 1977, 1981, 1986 और 1994 में कम्रशः चार बार बढ़ाया गया जिसने इसकी स्थिति को और दृढ़ किया व इसके स्थायित्व के लिए उम्मीद जगाई। यद्यपि, 1995 में विश्व व्यापार संघ (WTO) के एक बार अस्तित्व में आने के पश्चात, यह निर्णय लिया गया कि MFA को दिसम्बर 2004 में अन्ततः समाप्त किया जायेगा। MFA की समाप्ति ने वैश्विक वस्त्र उद्योग को मौलिक रूप से रूपातंरित किया, जहा नेपाल और इंडोनिशिया जैसे देशों ने अपने उद्योगों को करीब–करीब ध्वस्त होते हुए देखा और चीन व बांग्लादेश MFA पश्चात् प्रतिस्पर्धा में विजेता के रूप में उभरे। इसने नव–उदारवादी विकास, जो निम्नतम मजदूरी, कार्य की असुरक्षित स्थिति की पैरवी करता है और औद्योगिक प्रतिस्पर्धा के लिए आवश्यक बुराई के रूप में खरीदार विनियमित श्रम सुरक्षा पर हठ करता है, का समर्थन किया।

'आवश्यक बुराई' की नवउदारवादी पैरवी के साथ MFA की अल्पकालिक सोच ने बांग्लादेश में राज्य की एजेन्सियों से आवश्यक अनुमति लिये बिना अव्यवस्थित ढ़ंग से अधिकांश कारखाना इमारतों के निर्माण की व्याख्या कर दी। राना काम्पलेक्स और ऐसे ही सैंकड़ों अन्य निर्माणों के परमिट जारी करने वाले मेयर ने ऐसा इसलिए किया क्योंकि इस कार्य को करने के लिए अधिकृत सरकारी संस्था, ढ़ाका इमारत सुरक्षा एजेन्सी, उस समय के बांग्लादेशी वस्त्र उद्योग की विस्फोटक वृद्वि के साथ कदम नहीं मिला पा रही थी। ऐसी परिस्थितियों में एक अकेले उत्पादक या फिर उसके कुछ चिन्हित विक्रेताओं को अप्रत्याशित पैमाने के इस विध्वंसकारी हादसे के लिए जिम्मेदार ठहराना और बड़े प्रभावशाली समूहों को दोष मुक्त करना ऐसा ही जैसे नस्लीय व्यक्ति को मारना और रंगभेद शासन की तरफ आँख मूंद लेना। अप्रत्याशित सामाजिक उथल पुथल जो बांग्लादेश में राजनैतिक और सामाजिक समरसता का क्षरण का कारण बना, को शुरू करने वाला संकट जितना वैश्विक व्यापार तंत्र की असफलता और उनके विकासीय प्रतिरूप की उदासीनता के बारे में है उतना ही राना काम्पलेक्स और जो फ्रेश के बारे में। ■

> आपके शोध पत्र को अभी आउटसोर्स किया गया है

जैफरी जे. साल्ज, एरिजोना विश्वविद्यालय, यू.एस.ए.

जैसा कि फिलीपीन्स में आउटसोर्सिंग का कार्य दिखाई पडता है।

अधिकांश वैज्ञानिकों की तरह, समाजशास्त्र की शोध पत्रिकाओं में स्वीकार किये जाने के बाद मेरे लेखों का क्या होता है, इसके बारे में मुझे काफी समय से अस्पष्ट धारणा थी। यदि जोर दिया जाए तो मैं यह मान सकता था कि पत्रिका का संपादक मेरे लेख को पास के ही दफ्तर में काम कर रहे अनुभवी कॉपी संपादक को सौंप देगा। कई दशकों तक, माध्यम की भौतिक सीमाओं ने –जैसे कि यह तथ्य कि पांडुलिपियों में भार होता है अतः वे विशाल दूरी पर तीव्र गति से नहीं पहुंचाई जा सकती, ने अकादमिक प्रकाशन क्रियाओं की स्थानिक सघनता को बढ़ावा/प्रोत्साहित किया। पत्रिका कार्यालय,

>>

संपादकीय स्टाफ और प्रिंटिंग प्रेस आमतौर पर एक ही क्षेत्र, शहर या इमारत में पाये जाते थे और एक दूसरे से भिन्न संगठनात्मक एवं अन्त वैयक्तिक बंधनों से जुड़े होते थे।

परन्तु यह मॉडल तेजी से किनारे हो रहा है। पिछले कुछ वर्षों में दक्षिण पूर्व एशिया की Knowledge Process Outsourcing (KPO) पर अनुसंधान करते हुए मैंने वैश्विक उत्तर में स्थित प्रकाशकों को सेवाएँ देने में दक्षता रखने वाली कई फर्मों के अन्दर क्षेत्र कार्य किया है। ये फर्म युवा लोगों के विशाल दल को नौकरी पर रखती है और उन्हें कॉपी संपादक, टाइपसेटर, इ–रूपान्तरण विशेषज्ञ इत्यादि के रूप में लंबे घंटे कार्य करने के लिए न्यूनतम भुगतान करती है जो उन्हें सम्पूर्ण वैश्विक दक्षिण में पाये जाने वाले विदेशी कार्पोरेशन के वृहद समनुक्रम सयंत्र के समान दिखाते है।

> प्रकाशन का विशालकाय पशु

यदि KPO फर्म उभरते ज्ञान आपूर्ति श्रृंखला के Foxconns हैं तो एपल्स कौन हैं? इस प्रश्न का उत्तर देने के लिए हम वैज्ञानिक प्रकाशन के क्षेत्र में होने वाले सतत् परिवर्तन का उल्लेख कर सकते हैं। शैक्षणिक विभागों में स्थित प्रकाशन की दुकानों के जाल को खत्म करने की बजाय आज हमें मुट्ठी भर वे दिखते हैं जिन्हें Chronicle of Higher Education के संपादकीय ने हाल ही में ''विशालकाय प्रकाशन'' कहा है।

ये बड़ी सार्वजनिक कारोबारी कम्पनियाँ है जो अकादमिक पत्रिकाओं के स्वामित्व के अधिकार को आक्रामक रूप से प्राप्त कर रही हैं। हालांकि समाजशास्त्र में पत्रिकाएँ (अन्य कोमल साथी–विषय जैसे मानविकी के साथ) अभी तक ऐसे अधिग्रहण की शिकार नहीं हुई हैं परन्तु यह 'कठोर' विज्ञानों की पत्रिकाओं के लिए समान रूप से नहीं कहा जा सकता है। इन क्षेत्रों की पत्रिकाएँ अधिकाधिक रूप से वैश्विक प्रकाशन संगुटिका के हाथों में हैं जो इन्हें मुनाफे के वाहन के रूप में संचालित कर रहे हैं।

इस तरह के 'विशालकाय' का सबसे कुख्यात उदाहरण एलसेवियर बी.वी. है। एमर्स्टरडम स्थित प्रकाशक का स्वामित्व वृहद/बड़े रीड़ एलसेवियर समूह के हाथ में हैं जो लंदन स्टॉक एक्सचेंज के साथ कई सारे अन्य एक्सचेंज पर सूचीबद्व है। 'द इकोनोमिस्ट' के अनुसार, एलसेवियर बी.वी. 2000 से अधिक पत्रिकाओं का मालिक है और वैज्ञानिक एवं चिकित्सा क्षेत्र में प्रकाशित होने वाली सभी सामग्री के 25 फीसदी हिस्से को नियंत्रित करता है। 2012 में इसने 40 फीसदी मुनाफा दर्शाया था।

वर्तमान में, कई वैज्ञानिक एलसेवियर स्वामित्व वाली पत्रिकाओं का, व्यक्तियों और संस्थाओं के उनके लेखों को देखने के लिए अत्यधिक शुल्क लगाने के कारण, बहिष्कार कर रहे हैं। परन्तु एलसेवियर एवं उसके भाइबंदों द्वारा उपयोग में लाया गया व्यापार मॉडल वैज्ञानिक निष्कर्षों के प्रचार–प्रसार से आगे जाता है। यह विद्वतापूर्ण कार्य के निर्माण की पूरी प्रक्रिया में रिस गया है।

> आपूर्ति श्रृंखला का संयोजन

प्रकाशन फर्में, वैज्ञानिकों द्वारा स्वयं के अनुसंधान और अन्य सहकर्मियों के साथ सहयोग में प्रयुक्त होने वाली कई नई तकनीकों, का इस्तेमाल कर रही है। इ–मेल, फाइल ट्रासंफर प्रोटोकोल (FTP), वर्ड प्रोसेसिंग साफ्टवेयर, क्लाउड डाटा–बेसिंग और इनके जैसे अन्य ने प्रकाशन प्रक्रिया के विभिन्न पहलुओं को विन्यस्त करने के दीर्घकालीन तरीकों को अप्रचलित कर दिया है। जिस प्रकार एक लेखक एक वर्ड डाक्यूमेंट को पत्रिका के संपादक को तुरन्त और बिना किसी शुल्क के इ–मेल कर सकता है, उसी प्रकार पत्रिका भी इस प्रलेख को विश्व में कहीं भी स्थित विक्रेता को आगे भेज सकती है।

एलसेवियर जैसे नये वैज्ञानिक प्रकाशन संगुटिका ने इस अवसर का उपयोग विक्रेताओं के जाल को विकसित सेवाओं को आउटसोर्स करते हैं। ये विक्रेता एक या दो वर्ष के सेवा करार को प्राप्त करने के लिए आपस में प्रतिस्पर्धा करते हैं और यह वह न्यूनतम कीमत पर स्वीकृत गुणवत्तता का वादा कर के करते हैं। ऐसा करने के लिए फैक्टरी और कॉल सेन्टर में वर्तमान में प्रचलित आपूर्ति श्रृंखला प्रबंधन की पूर्ण श्रृंखला को प्रकाशन प्रक्रिया में लागू करना पड़ता है। इसके फलस्वरूप नौकरियों में दक्षता की कमी आ रही है, लगातार स्वचालन को पाने की कोशिश हो रही है और कामगारों को अपने उत्पादन को निरन्तर बढ़ाने के लिए प्रेरित किया जाता है। इस डर से कि ऐसा न हो कि उन्हें बदल दिया जाए।

इन KPO विक्रेताओं की उत्पादन प्रक्रिया की जटिलता के बारे में जानकारी देने के लिए, मैं यह बता सकता हूँ कि यदि आप का अगला लेख ऐसी पत्रिका के द्वारा स्वीकृत होता है जो इस आउटसोर्सिंग के मॉडल को अपनाती है तो वह वैश्विक दक्षिण के प्रथम–पंक्ति के 40 से 50 कर्मचारियों (जिनमें से प्रत्येक को उस पर विभिन्न कार्य करने हेतु 0.50 USD प्रति घंटा का भुगतान होता है) के कम्प्यूटर से होकर गुजरेगा।

उदाहरण के लिए, एक ऐसी फर्म जहॉ मैंने एक वर्ष से भी अधिक समय क्षेत्रकार्य किया, उत्पादन प्रक्रिया इस प्रकार से खुली। प्रकाशन के लिए स्वीकृत लेखों के लेखक अपने लेख को एक वर्ड डाक्यूमेंट के रूप में पत्रिका को मेल करेंगें। तत्पश्चात् पत्रिका FTP के माध्यम से उस लेख को फिलीपीन्स में स्थित एक डाटा गोदाम को भेजेगी जहॉ कई ''पूर्व–संपादक'' एवं ''प्रलेख ससाधक'' इसके मार्जिन, संदर्भो की फारमेटिंग को सही कर इसमें XML का टैग लगायेगें। फिर यह लेख भारत में कम्पनी की शाखाओं को भेजा जायेगा, जहॉ हाल ही में निकले हुए महाविद्यालयी स्नातक जिन्होंने कॉपी संपादन का क्रेश कोर्स किया है, टंकण और व्याकरण की अशुद्वियों के लिए इसे तीव्र गति से पढ़ेगें। अब लेख को वापिस फिलीपीन्स भेजा जायेगा जहॉ टाइपसेटर इसे पत्रिका–विशिष्ट PDF टेम्पलेट में बदलेगें। फिर इसे भारत भेजा जायेगा जहॉ गुणवत्तता विश्लेषकों की टीमें PDF का त्रुटियों के लिए निरीक्षण करेगी।

इस बिन्दु तक, इस लेख पर कार्य करने वाले सभी के पास अंग्रेजी की औसत दक्षता होगी। परन्तु अब PDF का अंतिम स्वरूप को वियतनाम भेजा जाता है जहाँ कम्पनी कई गैर–अंग्रेजी बोलने वाले वाचकों को नौकरी पर रखती है जो अपने फिलीपीनी और भारतीय प्रतिरूप का एक अंश कमाते हैं। वे प्रत्येक फाइल को देखते हैं और प्रारंभिक कार्य जैसे प्रत्येक पृष्ठ पर स्पेसिंग और मार्जिन चैक करना और PDF पर किसी प्रकार के दाग को हटाने का कार्य करते हैं। परन्तु, यात्रा अभी खत्म नहीं हुई हैं। अब फाइलें दुबारा फिलीपीन्स भेजी जाती हैं जहाँ उत्पादन श्रृंखला की पूर्णतया नई टीम विभिन्न लेखों का प्रिंट और इलेक्ट्रानिक पत्रिका संस्करण के लिए अंतिम प्रारूप तैयार कर समानुक्रित करती है। प्रारंभ से अन्त तक यह पूरी प्रक्रिया मुश्किल से एक या दो सप्ताह से अधिक समय नहीं लेती है।

> विज्ञान को Foxconn करना

सामाजिक न्याय के मूल सिद्वान्तों के प्रति वचनबद्ध सामाजिक विज्ञानी के रूप मे हमें वैज्ञानिक उद्यम के एक मुख्य घटक की आउटसोर्सिंग के प्रति कैसे प्रतिक्रिया करनी चाहिए? इसका कोई आसान उत्तर नहीं है।

>>

सिर्फ मौजूदा कर्मचारियों की नौकरियों की रक्षा करने के लिए आउटसोर्सिंग पत्रिकाओं के बहिष्कार की मांग करना, संरक्षणवाद के सम्भावी अज्ञातव्यक्तिभीत किस्म का शिकार होने जैसा है। यदि एक भारतीय या फिनीपीनो कॉपी संपादक अमरीकी या कनाडाई के समान अच्छा कार्य कर सकता है तो उन्हें ऐसा करने से क्यों रोकना चाहिए?

यदि इस व्यवस्था से दूसरी ओर हमारे लेखों की गुणवत्तता व्यवस्थित रूप से संकट में आ रही है तब हमारा इस तरह से प्रतिक्रिया करना उचित होगा। परन्तु एक–आध किस्से को छोड़कर ऐसा लगता हैं कि आउटसोर्सिंग मॉडल अपना कार्य अच्छी तरह से कर रहा है। जैसा कि मैंने पिछली आई.एस.ए. कांफ्रेंस के दौरान, मेकबुक और आई फोन्स की कोई कमी नहीं देखी, इस बात के बावजूद कि औसत प्रतिभागी एपल की एशियाई आपूर्ति श्रृंखला का एपल द्वारा क्रूर प्रबंधन को नापसंद करता है। ऐसा हो सकता है कि हम विज्ञान के Foxconning का प्रतिपालन करने के लिए अनुमत हैं जब तक कि वह हमारे लेखों को न्यूनतम समय में और दुकानों के व्यापक श्रृंखला समूह (पेपर पत्रिका से आन लाइन संस्करण से इ–किताबों तक) में, परन्तु गुणवत्तता में न्यूनतम कमी के साथ प्रकाशित कराने में सफल होता है।

कम से कम, हमारे लेखों और पांडुलिपियों के प्रकाशन के लिए स्वीकार होने के बाद उनका क्या होता है के बारे मे अधिक पारदर्शिता की माँग तो कर सकते हैं। प्रकाशन फर्म लेखकों से अपने द्वारा पिछले दशक में विकसित व्यापक आपूर्ति श्रृंखला को छिपाने के लिए बहुत कोशिश करते हैं, जैसे लेखकों के साथ पत्र व्यवहार करते समय कॉपी संपादकों को अपनी राष्ट्रीयता या लोकेशन बताने से मना करना। परन्तु यह कई उत्पादन और सेवा उद्योगों के मान्य व्यवहारों के अंतर्गत नहीं आता है। यू.एस. की ऑटो कम्पनियाँ रिपोर्ट करती है कि प्रत्येक वाहन के पुर्जों का कितना प्रतिशत अमरीका बनाम् विदेश में उत्पादित हुआ, जबकि एपल अपने प्रत्येक उत्पाद पर ''क्यूपरटिनो में अभिकल्पित, चीन में असेम्बल्ड़'' का अस्वीकरण (Disclaimer) की छाप अंकित करता है। नये नस्ल के कार्पोरेट। शैक्षणिक प्रकाशकों को दोहरा लाभ नहीं लेना देना चाहिए। यदि वे वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला का उत्पादन प्रक्रिया को सस्ती करने और अपने उत्पादों के लिए हरदम बढ़ता हुआ शुल्क लगाने के लिए लाभ उठाऐगी तब हम वैज्ञानिकों को, जो इस विशिष्ट उद्योग/क्षेत्र में दोनों उत्पादक और उपभोक्ता है, हमारे प्रारंभिक विचारों को परिष्कृत लेख में बदलने हेतु श्रम करने वालों के जीवन और कार्य की स्थितियों के बारे में बेहतर जानने का हक है। ■

[1] **Foxconn is the Taiwanese-owned firm that assembles many of Apple's products and that achieved notoriety following a spate of suicides at its Chinese assembly plants in 2010.**

> आई. एस. ए. के सदस्यों के लिए सस्ती पुस्तकें

सुजाता पटेल, हैदराबाद विश्वविद्यालय, भारत और अंतर्राष्ट्रीय समाजशास्त्र में **Sage Studies** की संपादक

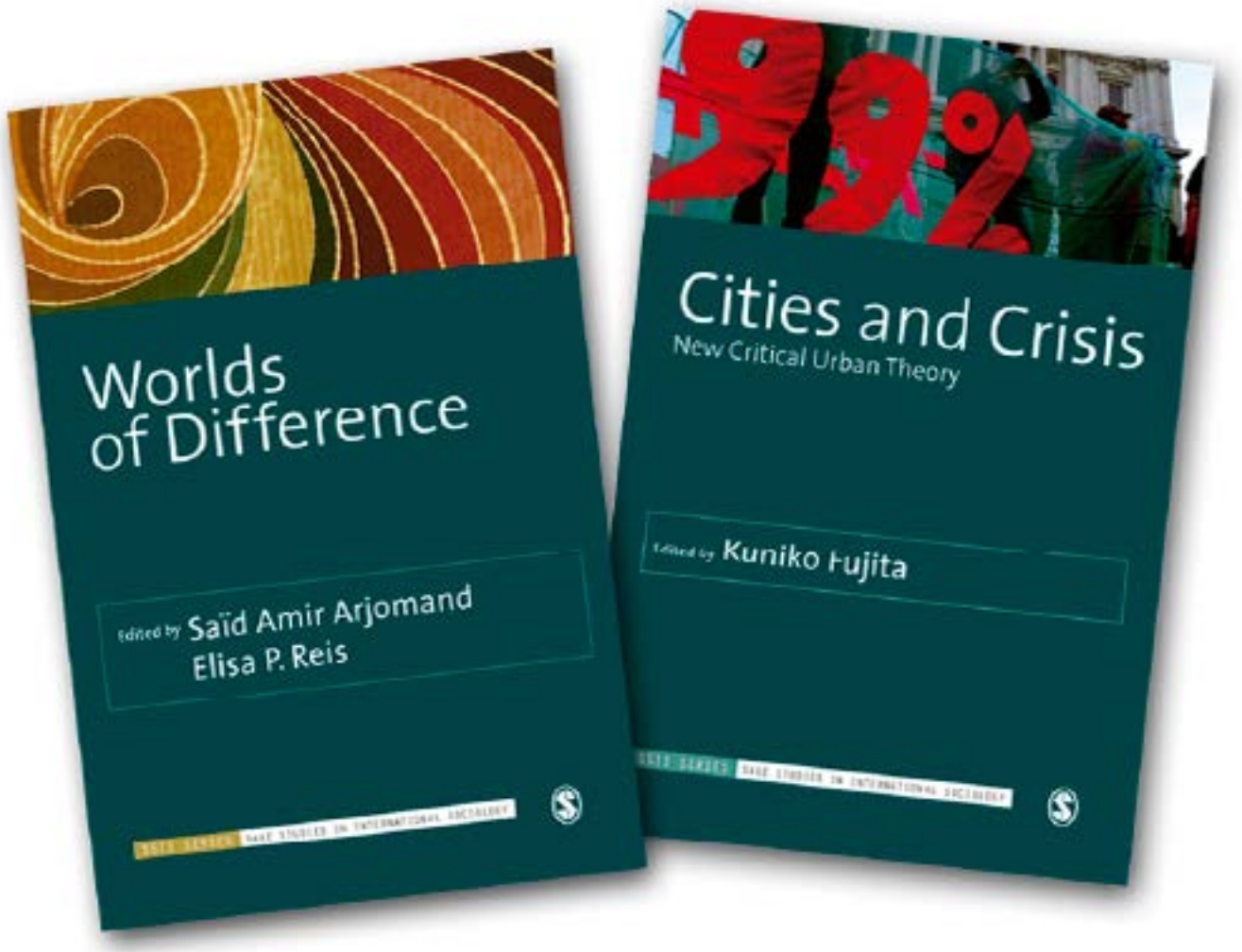

SSIS श्रृंखला की पहली दो पुस्तकें जो कि सस्ती दरों पर भारत में उत्पादित की जायेंगी।

आई. एस. ए. के सदस्यों को यह जानकर हर्ष होगा कि अब से Sage Studies in International Sociology शीर्षक के अंतर्गत प्रकाशित सभी पुस्तकें 9.99 स्टर्लिंग पाउण्ड पर, अपनी पुरानी कीमत की दसवें हिस्से पर, उपलब्ध होंगी और इसमें डाक की कीमत भी सम्मिलित है। हम इस नई मूल्य संरचना को दो नई

>>

पुस्तकें : सेद अर्जोमांद और एलिजा द्वारा संपादित Worlds of Difference और कुनिको फुजीता द्वारा संपादित Cities and Crisis, New Critical Urban Theory से प्रारंभ करते हैं। भारत में आई.एस.ए. के सदस्य इन किताबों को सेज, भारत के द्वारा 750 रूपये प्रति पुस्तक में प्राप्त कर सकते हैं (लोकार्पण दिंनाक : अगस्त 2013) देखिये **http://www.isa-sociology.org/publ/isa_handbooks.htm.**

हम एक नई सूची (Key Texts of World Sociology) भी प्रारम्भ कर रहे हैं : आई.एस.ए. का Key Text Project समाजशास्त्र के मौलिक ग्रंथों का एटलांटिक क्षेत्र के बाहर की दुनिया में प्रकाशन को प्रोत्साहन देता है। ये मूल ग्रंथ विश्व के विभिन्न क्षेत्रों के सर्वाधिक प्रभावशाली समाजशास्त्र को एक साथ लायेगें। अभी हम इन देशों के मूल ग्रंथों का प्रकाशन करने का प्रस्ताव रख रहे हैं–

1) पूर्वी एशिया (चीन, जापान, कोरिया और ताईवान)
2) लेटिन अमरीका
3) केन्द्रीय और पूर्वी यूरोप (बुल्गारिया, चेक गणराज्य, हंगरी, पौलेण्ड, रोमानिया, स्लोवाकिया),
4) अफ्रीका और
5) अरब क्षेत्र।

SSIS आई.एस.ए. के सबसे पुरानी प्रकाशन श्रृंखला में से एक है। Transactions of the World Congress of Sociology के मूल शीर्षक के साथ इसका प्रकाशन संघ की 1949 में आयोजित पहली कांग्रेस के समय हुआ और आई.एस.ए. ने 1974 में इसे SSIS का नया नाम दिया। तब से इसने विश्व कांग्रेसों, शोध समितियों और राष्ट्रीय संघो की कॉफ्रेंस की कार्यवाही के साथ ही अन्य महत्वपूर्ण किताबों का प्रकाशन जारी रखा है। लिखित और संपादित ग्रंथों दोनों ही तरह प्रकाशित और मोनोग्राफ, हैंडबुक और संदर्भ खण्डों की तरह उपलब्ध इन पुस्तकों ने अध्ययन और इसके विभिन्न विशेषज्ञताओं में बहस और विमर्श को शुरू कर के विषय में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

इस मान्यता और स्वीकृत महत्व के बावजूद, SSIS पुस्तकों की बिक्री काफी कम है। ऊँची कीमतों (80 से 90 पाउण्ड के बीच) को देखते हुए वैश्विक उत्तर में भी इनकी पहुँच पुस्तकालयों तक ही सीमित है। वैश्विक दक्षिण में ये पुस्तकालयों में भी नहीं दिखती हैं। पिछले तीन वर्षों से आई.एस.ए. की प्रकाशन समिति, उसके उपाध्यक्ष और आई. एस.ए. के अध्यक्ष के सक्रिय समर्थन से मैं सेज प्रकाशन (लंदन), जो SSIS पुस्तकें प्रकाशित करता है, को भारत में, जहाँ पुस्तकों की कीमत कम होती है, (करीबन 10 पाउण्ड), प्रकाशन करने के लिए राजी करने की कोशिश कर रही हूँ। दुर्भाग्य से, हमारे सामने प्रकाशित पुस्तकों के अंर्तराष्ट्रीय (जो वैश्विक उत्तर में प्रकाशित होती है) बनाम प्रादेशिक (वे जो वैश्विक दक्षिण में किसी भी हिस्से में प्रकाशित होती है) के रूप में वर्गीकरण की दुःसाध्य समस्या आ गई। भारत या अन्य विकासशील देशों में पुस्तकें उस क्षेत्र में प्रकाशन और विपणन हेतु प्रकाशित होती है और उनकी कीमत तदनुसार तय की जाती है जबकि वैश्विक उत्तर के किसी भी हिस्से में प्रकाशित होने वाली पुस्तकें वैश्विक उपभोक्ता के लिए प्रकाशित और विपणन की जाती है और अंतर्राष्ट्रीय दरों पर बेची जाती है। अल्पविकसित देशों में कार्यालय वाले सभी अंर्तराष्ट्रीय प्रकाशन फर्मों (जैसे सेज, आक्सफोर्ड या राउटलेज) का अल्पविकसित देशों में इनकी शाखाओं के साथ व्यापार समझौता होता है जो इस अंतरीय मूल्य संरचना को लागू करता है।

हालांकि जो दुःसाध्य था वो प्रबन्धनीय हो गया। हम SSIS पुस्तकों के उत्पादन को सेज की भारत की शाखा को हस्तांतरण करने और सभी भावी प्रकाशनों में आई.एस.ए. के सदस्यों को भारी छूट का लाभ मिलने को सुनिश्चित करने के लिए सेज को मनाने में सफल हो गये। हम इन पुस्तकों को भारत में (गैर–आई.एस.ए. सदस्यों को) भारतीय मूल्य के अनुसार बेच सकेंगे। (यद्यपि वैश्विक दक्षिण के अन्य क्षेत्रों में नही जहां ये अंर्तराष्ट्रीय कीमतों पर बेची जायेगी) हम इस पहल और वैश्विक प्रकाशन व्यवसाय में पक्षपात को तोड़ने के लिए पहले सोपान को सुनिश्चित करने के लिए सेज के बहुत आभारी हैं। मैं आई.एस.ए. सदस्यों से इस नीति को सफल बनाने के अवसर को लेने का आग्रह करती हूं। SSIS की पुस्तकें अवश्य खरीदें और अपने भावी प्रकाशनों के लिए इन श्रृंखला पर गौर करें। ■

> समाजवाद की दो धाराओं के मध्य में जकड़े हुए

मारिया इवान्चेवा, सैन्ट्रल यूरोपीयन विश्वविद्यालय, बुडापेस्ट, हंगरी

मिशन रिबास (Misión Ribas) अनेक सामाजिक न्याय कार्यक्रमों में से एक है, और जैसा कि उन्हें बोल्विरियन मिशन कह कर संबोधित किया जाता है, जिन्हे कि ह्यूगो शावेज के शासन के दौरान लागू किया गया था। यह हाई–स्कूल छोड चुके विद्यार्थियों को उपचारात्मक हाई–स्कूल स्तर की कक्षाऐं प्रदान करता है।

लंदन में सन् 2004 में अध्ययन करते हुए वैनेजुएला के साथ एकजुटता हेतु एक बैठक में मैंने सहभागिता की जो बोल्वेरियन शैक्षणिक सुधार पर केन्द्रित थी। वैनेजुएला के शिक्षाविद् आस्कर नैगरिन इस बैठक में अतिथि वक्ता थे। उन्होंने इस विचार से अपने वक्तव्य की शुरुआत की कि ''वैनेजुएला में बच्चों को अमूर्त शब्दों को याद करने की बजाय हम उन्हें महत्त्वपूर्ण शब्दों – ''माँ'', ''शान्ति'', ''शावेज'' का अध्ययन कराते हैं। मेरे दिल की धड़कनें तीव्र हो गयीं जब मुझे अपने विद्यार्थी जीवन/ विद्यालयी जीवन की, जो मैंने समाजवादी बुल्गारिया में गुजारे थे, याद आ गयी। एक कक्षा के सांस्कृतिक समारोह में मेरे शिक्षक कामरेड तोनीवा के आदेश थे कि मैं अपनी माँ का हाथ थाम कर एक कविता का पाठ करुँ ''विश्व की सबसे अच्छी माँ है/ पार्टी की नायिका है।'' मैं नहीं जानता था कि पार्टी (दल) कौन था। मैं केवल यह जानता था कि विश्व की सबसे अच्छी माँ मेरी माँ है और यह मैंने अपने शिक्षक को बताया। एक तनाव मूलक शान्ति के क्षण के उपरान्त मेरी शिक्षक ने कविता को बदल दिया। एक वर्ष उपरान्त अर्थात् 1989 में हमसे कहा गया कि ''कामरेड'' शब्द को भूल कर हम उन्हें ''मिसिज'' के रूप में सम्बोधित करें। मैं लंदन वापस आ जाती हूँ, मैं हॉल से बाहर आ गयी: नैगरिन एवं उनकी श्रोता श्रेणी ने उस बच्ची को पीछे से देखा जो कि 1988 की कक्षा का भाग थी। वह लड़की जो लोकतान्त्रिक संक्रमण की प्रारम्भिक गतिविधियों में कूद पड़ी थी क्योंकि लोकप्रिय प्रतिरोध शुरु हुआ था और यह कहा जा रहा था कि ''जो नहीं कूदेंगे वे 'लाल' हैं''। वेनेजुएला की एकजुटता से सम्बद्ध बैठक से बाहर आते हुए मेरे अन्दर दो अनुभूतियाँ संघर्षरत थीं: एक यह सन्तुष्टि कि मैंने अपने परिवार के साम्यवादी विरोध के चिन्तन का अनुकरण किया एवं दूसरी यह दृष्टि कि मैंने समाजवाद की समाप्ति को अपरिपक्वता एवं सकारात्मकता के भाव से देखा।

उच्च शिक्षा पर हो रहे सुधारों पर लगभग 1 वर्ष 6 माह तक क्षेत्रीय कार्य करते हुए जो वेनेजुएला से सम्बद्ध है, आज मैंने जाना है कि मेरी सन्तुष्टि कितनी सतही थी और मेरी चिन्ता किस सीमा तक युक्ति संगत थी। मैं इस विषय के साथ इसलिए नहीं जुड़ी थी कि यह मेरी साम्यवाद विरोधी विचारधारा का उपचार था। मैं एक विशिष्ट प्रकृति के विरोधाभास को दो विश्वविद्यालयों के मध्य महसूस कर उत्तेजित हो रही थी ये विश्वविद्यालय पुराने दौर के विपरीत प्रकृति के उन बुद्धिजीवियों द्वारा स्थापित किये गये थे जो समाजवाद से उदारवारी लोकतंत्र की तरफ हुए सत्ता परिवर्तन के दौर का भाग रहे हैं। पूर्वी यूरोप में यह सत्ता परिवर्तन हुआ जबकि वेनेजुएला में हुआ परिवर्तन ठीक इसके विपरीत था। सैन्ट्रल यूरोपियन यूनिवर्सिटी (सीईयू) जहॉ मैं अपना शोध डिग्री हेतु कार्य कर रही थी को, 1991 में एक धनी व्यक्ति जार्ज सोरासा, पूर्वी यूरोपीय देशों के विमति मूलक व्यक्तियों एवं पश्चिमी उदारवादी बुद्धि जीवियों ने स्थापित किया था। एक अंग्रेजी भाषा के निजी ग्रेजुएट स्कूल ने स्थानीय बौद्धिक परम्पराओं को फासीवादी/ नृवंशीय राष्ट्रवादी अथवा सर्वसत्तावादी/ साम्यवादी के रूप में प्रस्तुत किया। इसने अपने लक्षित विद्यार्थियों को पश्चिमी उदारवादी लोकतन्त्र के ''सार्वभौमिक'' मूल्यों एवं एंग्लो–अमेरिकन विज्ञान के परिप्रेक्ष्य के साथ शिक्षित किया ताकि नवीन उत्तर–समाजवादी अभिजन उभर कर आ सकें।

इसके विपरीत बोलिवेरियन यूनिवर्सिटी ऑफ वेनेजुएला (यूबीवी) जो मेरी पीएचडी का शोध ग्रन्थ है की रूप रेखा राष्ट्रपति हयूजो शावेज ने बनायी एवं यह समाजवादी बुद्धिजीवियों का क्षेत्र बनी। यह विश्वविद्यालय अत्यन्त कुशल पेट्रोल उद्योग श्रमिकों की हड़ताल एवं शावेज के बोलिवेरियन शासन को सत्ताच्युत करने के प्रयासों के बाद सन् 2003 में स्थापित हुआ। अमेरिकन पेण्टागन की आर्थिक मदद से उत्पन्न हुई इन दोनों घटनाओं ने यह सिद्ध किया कि तेल किराये के पुनर्वितरण की शावेज की नीतियॉ वेनेजुएला के अमरीका समर्थक अभिजनों को असहनीय थीं। इन अभिजनों ने किरायेदारी अर्थव्यवस्था की कार्यप्रणाली पर अपनी ज्ञान मूलक एकाधिकारवादी स्थिति स्थापित की थी। इस प्रभुत्व को चुनौती देने हेतु, उच्च शिक्षा नीति के एक भाग के रूप में यूबीवी ने लगभग 5 लाख से अधिक निर्धन वेनेजुएला वासियों को समतामूलक, विकेन्द्रित जनशिक्षा का भाग बनाया। स्थानीय स्थापित ज्ञान, अन्तः वैषयिकता एवं व्यावहारिक जन विज्ञान से सम्बद्ध मूल्य प्रणालियों को इस शिक्षा के केन्द्र में रखा गया ताकि सीमांत समुदायों को लाभ मिल सके।

मैं कारावास गयी थी। मेरे पास चेतना का वह स्तर था जो मुझे बुल्गारिया एवं सीईयू के कारण प्राप्त हुआ था। मैं वहॉ के अधिकारियों के प्रति सन्देहास्पद थी। एक ऐसा भय था जो सिद्ध हो रहा था, की अनुभूति हो रही थी। मैंने पहले सार्वजनिक भाषण में सुना जिसे मैंने यूबीवी में अंकेक्षण के साथ जोड़ा कि सीईयू एक ''फासिस्टी'' संगठन है जो सीआइए के जासूसों को प्रशिक्षण दे रहा है''। तथापि मुझे यह समझने में एक माह से कम का समय लगा कि वेनेजुएला – सर्वसत्तावादी'' राज्य नहीं था और इस संदर्भ में मैंने कोई जासूसी वाला कृत्य नहीं किया। मैं एक ऐसे देश में आयी थी जहॉ स्वतन्त्र चुनाव हुए थे जहॉ व्यावसायिक मीडिया खुलेआम लोकतान्त्रिक रूप में चुनी हुई सरकार पर अपशब्दों के प्रहार कर रहे थे। अभिजन विरोधी दृष्टि के प्रति जानकारी तथा मेरे सूचनादाताओं की समावेशी शैक्षणिक व्यवहार की अभिव्यक्ति के कारण मैंने जल्दी ही जान लिया कि मेरे पूर्वाग्रहों का स्त्रोत क्या है। मेरे सूचनादाता समाजवादी बुद्धिजीवी थे एवं उदारवादी लोकतन्त्र (1958–1998) के दौरान वेनेजुएला के विद्यार्थी आन्दोलन के सदस्य थे। मैंने बुल्गारिया एवं पूर्वी यूरोप की उत्तर–समाजवादी अकादमी से अपने व्यक्तित्व को विकसित किया था। यह अकादमी अभिजन शैली का अभिजन संस्थान था जो पश्चिमी मूल्यों को आलोचना रहित तरीके से प्रेषित करता था। बल्गारियन बुद्धिजीवी एवं समाजशास्त्री जो स्व औपनिवेशीकरण से प्रभावित थे, इस अकादमी को एक सुरक्षित परिवेश समझते थे जहॉ से वे सामूहिक अनुभव कर सकें एवं ''एक पिछड़े'' राष्ट्र में अपने ''असभ्य'' मित्रों की शर्म को व्यक्त कर सकें। उच्च शिक्षा एक ऐसे खुले पाठ्यक्रम पर आधारित थी जो ''बुरे विद्यार्थियों'' के विरूद्ध ''अच्छे'' विद्यार्थियों को संरक्षण व बढ़ावा देती थी। परन्तु उन वर्गीय असमानताओं के विरूद्ध संघर्ष नहीं करती थी जो इस भेद का मुख्य कारण हैं। पश्चिमी प्रतिमानों का अनुकरण, संकेतकों की प्रस्तुति एवं क्रम विन्यास का सम्मिलन तथा ''वस्तुपरक'' विज्ञान पर बल आरोपित प्रतिबद्धताओं को ''विचारधारायी'' बताता है जब तक कि यह स्वतन्त्र बाजार के हितों की पूर्ति न करें।

जब मैंने यूबीवी के सिद्धान्तों को आत्मसात किया तब मुझे चुनौतियों एवं उपस्थित अन्तः विरोधों का आभास हुआ। उदारवादी लोकतन्त्र ने हालांकि समाजवाद पर अपनी निर्णायक विजय को ''इतिहास का अन्त'' के रूप में उभारा था और इसे 1989 में पूर्वी यूरोप में घोषित कर दिया था, वेनेजुएला में शीत युद्ध समाप्ति से बहुत दूर था। 1973 के चिली के ऐतिहासिक अनुभव, क्यूबा पर प्रतिबन्ध तथा वेनेजुएला में सत्ता पलट की नयी धमकी के कारण सरकार सुधार की अग्रसरता के लिए दमन का प्रयोग नहीं कर सकी। विश्वविद्यालयी शिक्षा पर इसका व्यापक प्रभाव पड़ा। अकादमिक स्वायत्ता को वेनेजुएला के विद्यार्थियों ने संरक्षण दिया जिसके कारण बीसवीं शताब्दी में अनवरत खूनी संघर्ष हुए। यह दुर्भाग्य है कि विरोधी समूहों ने इसे प्रयुक्त नहीं किया। पुराने सार्वजनिक विश्वविद्यालयों में सुधार का प्रतिरोध एवं नवीन ''बोल्वेरियन'' को मान्यता देने से इन्कार के कारण पुरातनपन्थी अकादमिक विशेषज्ञों ने पुराने स्तरीकरण को नवीन स्तरों के साथ प्रस्तुत किया बजट एवं स्तर मूल्याकंन के निर्णय सरकारी निकायों द्वारा होते थे जिनमें पुरातनपन्थियों का वर्चस्व था। शिक्षा में स्थान पाने की व्यापक मॉग ने, जिसे गरीबों ने उठाया, सरकार को बाध्य किया कि यूबीवी में अध्यापन हेतु अधिकांश लोगों, जो स्नातक डिग्री प्राप्त हैं, को रोजगार दिया जावे। यूबीवी की विकेन्द्रित सुविधाओं में भी ऐसा ही हुआ। यूबीवी की साख की ''वृद्धि'' एवं उनके शिक्षक समूह की साख की वृद्धि की आवश्यकता है ताकि कार्यक्रमों का स्तर मूल्यांकन हो सके एवं साथ ही तीव्रगामी परिवर्तन हेतु विश्वविद्यालय को एक उपकरण के रूप में प्रयुक्त करना वे दो पक्ष हैं जो दोहरे मापदण्ड को दर्शाते हैं। बोल्वेरियन शिक्षाविदों को अकादमिक विषयों जो परम्परागत हैं, के विशिष्ट जटिल पक्षों पर अपना प्रभुत्त्व स्थापित करना है एवं साथ ही निर्धन समुदाय की सांस्कृतिक संहिताओं का प्रबन्धन करना हैं। उन्हें अकादमिक विशिष्टताओं के प्रतिमानों के अनुरूप स्वयं को स्थापित करना है एवं इन प्रतिमानों को अपने ही क्षेत्रों के अन्तर्गत हतोत्साहित करना है।

पूर्व के समाजवादी विश्व का मैं हिस्सा रही हूँ, अब मुझे 21वीं शताब्दी के समाजवाद की वास्तविकताओं को समझने हेतु अतिरिक्त प्रयास करना पड़ा है। अब मेरे सम्मुख नवीन चुनौतियॉं हैं। वेनेजुएला की व्यवस्था के अन्तःविरोधों का विश्लेषण करने का प्रयास करना है। मुझे वामपन्थी पश्चिमी विचारक दक्षिणपन्थी विचार का मानते हैं और मुझे उनके उस सहयोगी के रूप में देखते हैं जो लेटिन अमेरिका की समाजवादी व्यवस्था में बदलाव व पतन को देखना चाहते हैं। तथ्य यह है कि बुल्गारिया में, मैं वेनेजुएला को ''सर्वसत्तावादी'' घोषित नहीं कर सकती। मेरे विचारों को स्थानीय पत्रिकाएं पक्षपातपूर्ण बताती हैं। यह एक अच्छी बात है कि मेरे प्रोफेसर्स एवं सहयोगी, जो सीईयू में कार्यरत हैं, अकादमिक क्षेत्र में जारी शीत युद्ध को समझते हैं। पर एक तथ्य निश्चित है, लंदन के हॉल से निकलते समय मैं यह जान गयी थी कि अभी मुझे इस क्षेत्र में एक लम्बी यात्रा तय करनी है। ■

> सोफिया की सड़कों से पनपी लम्बी गाथायें

मार्टिन पैट्रोव, सोफिया विश्वविद्यालय, बुल्गारिया

सोफिया में नीचे गिरा हुआ और व्यवस्था से बाहर – एक वास्तविक क्लोचार्ड (Clochard)

उनके पास सम्पत्ति नहीं है एवं पूँजी के उत्पादन में वे सहभागिता नहीं करते यहाँ तक कि बीयर की खाली बोतलों को भी वे वापस नहीं करते। वे एक सार्वजनिक स्थल पर रहते हैं जहाँ वे किसी फार्मेसी से खरीदकर व लाकर अपना मैडिकल अल्कोहल पीते हैं। इस अल्कोहल को वे सार्वजनिक फुब्बारे के पानी से हल्का कर लेते हैं इस हेतु वे किसी कचरा स्थल से बोतल लेकर उसे प्रयुक्त करते हैं तथा राष्ट्रीय थियेटर (नाट्य गृह) के सामने के उद्यान में वे खुले एयर बार के निकट इस अल्कोहल का सेवन करते हैं। इसके बावजूद वे पूंजी के द्वारा उत्पन्न किये गये प्रतीक तन्त्र से अपरिचित नहीं है। ठीक इसके विपरीत वे इन सबके प्रति अत्यधिक संवेदनशील है और इन सभी पक्षों को स्वयं में सम्मिलित करने और उन्हें बहुत अच्छे तरीकों से समझने की रणनीति विकसित करते रहते हैं। वे यहाँ घुमन्तु हैं उन्हें सोफिया के ''सड़क छाप'' बुद्धिजीवियों की संज्ञा दी जा सकती है। मैं ई. से मिला जब मैं स्नातक स्तर में दर्शन का विद्यार्थी था। कला अकादमी में ई. एक 'नग्न मॉडल' के रूप में कार्यरत था जब उसकी नियुक्ति नहीं हुई थी तब वह

> >

सोफिया विश्वविद्यालय में चक्कर लगाता था। मेरे विषय का एक मित्र उसके लिये तथा ई. मेरे उस मित्र के लिए हैरोइन की खोज करता था। ई. का नाम बुल्गारिया के लिए काफी असामान्य प्रकृति का था। उसके पिता एक इटालियन यहूदी एवं उसकी माताजी एक फ्रांसीसी यहूदी थी। ई. के पिता भूतपूर्व प्रधानमन्त्री लुकानोव के अत्यन्त निकट के सहयोगी थे। लुकानोव के विषय में कहा जाता है कि उन्होंने 1990 में नवीन बुल्गारियन धनाढ्यों (लखपतियों) को ''नियुक्त'' किया। लुकानोव ने समाजवादी राज्य की गुप्तचर सेवा से जुड़े लोगों को कम्युनिस्ट पार्टी के धन का वितरण किया था। 1996 में लुकानोव को मारने के उपरान्त ई. के पिता देश से बाहर चले गये और उन्हें फिर कभी नहीं देखा गया। ई. की माताजी ऊपर उल्लेखित गुप्तचर सेवा विभाग में लेखाकार के रूप में कार्यरत थी। 1990 के उपरान्त वे पराभौतिकता[1] में रूचि लेने लगी एवं उन्होंने ''मैन, स्प्रिट, कास्मोस : इनर्जी–इनफारमेशनल एक्सचेन्ज'' विषय पर एक पुस्तक लिखी। इसके उपरान्त वे नेपाल के एक मठ में चली गयीं और फिर उन्हें कभी नहीं देखा गया।

मैं यह नहीं कह रहा कि सभी कहानियाँ सत्य हैं। मैं यह भी नहीं कह रहा कि ये सब नहीं हैं–ये सब वे असामान्य प्रघटनाओं का संकलन हैं जो पिछले दशकों में बुल्गारिया में वास्तविक रूप में घटित हुईं। इसमें ई. की स्वयं की जिन्दगी की कहानी सम्मिलित है। एक नोमनक्लेटुरा बच्चे के रूप में 1989 के पूर्व वह वीमार के आर्ट हाई स्कूल में अध्ययन करते थे। 1990 में वे सोफिया के एक हिस्से मगूरा में थे। यह क्षेत्र डॉलर एवं ड्यूश मार्क मुद्राओं के अवैध विनिमय से जुड़े व्यक्तियों के कारण प्रसिद्ध था और जहाँ नवधनाढ्यों में से अनेक ने अपनी प्रारम्भिक पूंजी का यहीं से संचय किया। वहाँ पर उन्होंने जिस पक्ष को उचित व उपयुक्त समझा वहीं व्यवहार में परिणित किया। साथ ही लोग जैसा सोच रहे थे उसे समझ कर विचार व व्यवहार का रूप दिया। सोफिया में उन्होंने ड्रामा अकादमी में अभिनय कर विचार व व्यवहार का रूप दिया। सोफिया में उन्होंने ड्रामा अकादमी में अभिनय की डिग्री प्राप्त की परन्तु शराब एवं मादक द्रव्यों की समस्या के कारण उनकी थियेटर से सम्बद्ध नौकरी चली गयी एवं सर्कस में एक अक्रोबेट की भूमिका निभाने वाला व्यक्ति अनेक रूपों में विभक्त हो गया। मैं कुछ वर्षों पूर्व उनसे पुनः मिला। उनके पास नौकरी नहीं थी पर वे हैरोइन को रोक चुके थे और एक कौने में उपेक्षित की तरह रहे। उद्यान में लोगों को कविता सुना कर वे धन एकत्रित करते थे ताकि शराब एवं सिगरेट की आवश्यकता को सन्तुष्ट किया जा सके। वे उन कहानियों को अब भी सुनाते थे कि किस प्रकार उन्होंने अपने पिता की मर्सडीज कार को तोड़ दिया था। जल्दी ही उन्हें रहने के स्थान से बाहर कर दिया गया। मैं उनके मित्रों एवं अन्य सामाजिक रूप से बहिष्कृत लोगों से मिला जो बीयर अथवा मैडीकल अलकोहल का सेवन नजदीक की फार्मेसी से लाकर राष्ट्रीय थियेटर के सामने के छोटे उद्यान में करते थे। पहला विचार जो मेरे मस्तिष्क में उस समय आया कि केवल ई. ही ऐसे व्यक्ति नहीं थे जो कहानियाँ सुनाते थे वहाँ उपस्थित व्यक्तियों में से प्रत्येक किसी न किसी विशेष विशेषता को रखता था और प्रत्येक के पास सुनाने के लिए अनेक कहानियाँ थी जिन्हें विशेष तरीके से प्रेषित किया जाता था। उनमें से एक रूसी व्यक्ति था जिसकी रूचि साल्विक भाषा एवं संस्कृति सीखने की थी। एक अन्य अरमेनियन व्यक्ति था, एक अन्य चरवाहा था जो कि चरवाहे के जूते एवं मगरमच्छ की खाल का कैप जिसमें पंख लगा था पहने हुए था। बाहरी रूप में ये पहचाने अपनी जन्म भूमि से बाहर के आकर्षक देश में थीं एवं दैनिक जीवन के यथार्थ से बिल्कुल भिन्न थीं। वे मुद्रा एकत्रित करते थे, एक ही सड़क पर अपने निवास बनाते थे एवं सोफिया के केन्द्र में बने उद्यान में एकत्रित होकर अपनी सामाजिक दृष्टि से मान्य पहचान जिसे वे खो चुके थे की क्षतिपूर्ति करते थे और अपने जीवन की अपेक्षाओं के विषय में अभिव्यक्ति देते थे।

पर इस समूह से सम्बद्ध प्रत्येक व्यक्ति हाल के वर्षों में व्यतीत किये गये अच्छे समय को याद करता था। किसी एक को दो छोटे बच्चों के साथ धक्के मार कर बाहर निकाल दिया गया। उन्हें पत्नी ने धक्के मार कर बाहर निकाला। एक अन्य विश्वविद्यालय से स्नातक की उपाधि प्राप्त करने के बाद भी नौकरी जारी नहीं रख सका। अनेक लोग उच्च शिक्षा प्राप्त थे। उनमें से अनेक अपने मित्र एवं सम्बन्धियों के जुड़ाव को याद कर उस सांस्कृति पूंजी को धन्यवाद देते थे जो उनके पूर्व के जीवन (अतीत) से जुड़ी थी। वे उतनी व्यग्रता की स्थिति में भी नहीं थे जब अवसाद की छाया उन्हें प्रभावित करती थी। वे काँच की उन बोतलों को एकत्रित करते थे जो उस उद्यान में आये फैशन परस्त युवा प्रयुक्त कर अपने पीछे छोड़ जाते थे। अतः स्व–विशिष्टीकरण की रणनीति ने उन्हें उन अन्य लोगों से अलग रखा जिनके पास कहने को कोई कहानी नहीं थी और जो केवल स्वयं से ही कुछ कहते थे। जैसे ई. यह कहना पसन्द करते थे ''मैं एक घुमन्तु नहीं हूं, मैं एक घुमन्तु कला हूं''।

वे सब एक दूसरे के मित्र थे पर जब कभी मैं अकेला उनमें से किसी एक के साथ होता था तो वे यह बताना प्रारम्भ करते थे कि अन्य लोग कितने खराब हैं। एक्स एक गुजरने वाले व्यक्ति के साथ भाग गया क्योंकि उसने बीयर देने का प्रस्ताव किया। वाई आज भी मादक द्रव्यों का सेवन करता है। जैड एक अत्यन्त बदसूरत महिला के साथ निकटतम सम्बन्ध बनाता है। जीवन यापन की मूल सुविधाओं से वंचित, मान्यता से वंचित एवं जीवन सम्भाव्यता से वंचित सोफिया के ये घुमन्तु कला स्व की विशिष्टता की दर्दभरी आवश्यकता को बड़े स्तर पर महसूस करते हैं एवं अन्य अनेक साधनों को (जैसे उपभोग) को नहीं छोड़ते हैं ताकि वे उसे प्राप्त कर सकें परन्तु इस प्रयास में उनकी सृजनात्मकता कहीं छूट जाती है और कभी कभी वे अनेक पक्षों के साथ हाशिये से दूर तक चले जाते हैं। ■

[1] समाज वादी व्यवस्था वाले शासन की समाप्ति के उपरानत प्रथमवर्ष में अनेक रूचिकर विषयों का उभार हुआ। देखें मार्टिन पैट्रोव, ''द डिसकोर्स ऑफ द सुपरनेचुरल इन बुल्गारिया ऑफ द अर्ली 1990 ए ''सोशियोलोजिकल प्राब्लम्स् 2010, 1–2 : 268–283 (इन बल्गारियन)

> जनसंहार अथवा/ विध्वंस के विषय में उत्तर–साम्यवादी बुल्गारिया में बहस

जार्जी मैडारॉव, सोफिया विश्वविद्यालय, बुल्गारिया

ज्यूईश ऐतिहासिक संग्रहालय, बैलग्रेड से लिया गया यह चित्र बुल्गारियन पुलिसमैन द्वारा बुल्गारिया – आधिपत्य स्कोपजे (Macedonia) से मार्च 1943 में जर्मन मृत्यु कैम्पस में भेजे जा रहे ज्यूज के निर्वासन के निरिक्षण को दिखलाता है।

मारिस हाल्बाख की दृष्टि से जैसा कि हम जानते हैं सामाजिक स्मृति धनिष्ठ रूप से सामूहिक अस्मिताओं की रचना से सम्बद्ध हैं। 1989 के उपरान्त द्वितीय विश्व युद्व के दौरान बुल्गारिया के यहूदियों के भाग्य को लेकर हुई गर्भ बहस हमें यह बताती है कि किन माध्यमों के कारण अतीत के पक्ष वर्तमान की राजनीति को आकार दे सकते हैं। 1990 के दशक में जनसंहार/विध्वंस राजनीतिक विषय परकताओं को बाध्यता मूलक रूप से स्थापित करने का एक मुख्य प्रतीकात्मक साधन बना जिसके फलस्वरूप पूर्व साम्यवादी एवं नवीन साम्यवाद–विरोधी के मध्य विभक्ति के आधार उभर कर आये। दोनों ही दलों ने समान उत्तर–राजनीतिक कल्पनाओं को भविष्य के लिए प्रयुक्त किया। जिनमें एकीकरण, नव्यउदारीकरण, लोकतान्त्रीकरण इत्यादि सम्मिलित थे। एवं, जैसा कि बुल्गारियन समाजशास्त्री आन्द्रे रैचेव का अवलोकन है, विभक्ति के पक्षों को अतीत के आधार पर प्रस्तुत किया गया। क्या यहाँ समाजवाद के पूर्व फासीवाद था? का प्रश्न बहस का केन्द्र बिन्दु बना। साम्यवाद विरोधियों ने स्वयं को संकीर्णतावादी ऐतिहासिक संशोधनवाद के साथ सम्बद्ध किया। उनका मुख्य नारा था ''(साम्यवाद के) 45 वर्ष बहुत हैं'' एवं उनका दावा था कि साम्यवादी पक्ष को बढ़ा चढ़ा कर प्रस्तुत कर जिस समाजवादी सत्ता को वैधता दी गयी एवं शक्ति के दुरूपयोग को औचित्य प्रदान किया गया ही, वास्तव में फांसीवाद था। पूर्व साम्यवादी, दूसरी तरफ , अपने विरोधियों को दुश्मन एवं यहाँ तक फांसीवादी की संज्ञा देते हैं क्योंकि उन्होंने फांसीवाद के उत्पीड़न को ढ़का। यह एक पुरानी बहस है लेकिन यह बुल्गारिया की विशेषता बन गयी क्योंकि बुल्गारिया की यहूदी जनसंख्या के भाग्य के साथ यह जुड़ गई। एक ऐसा भाग्य एवं भविष्य जो कि अन्तर्विरोधी विवेचनाओं का विषय बन गया है।

> यहूदियों के प्रति बुल्गारिया में व्यवहार से सम्बद्ध दो विवेचनाएं :

द्वितीय विश्वयुद्ध में बुल्गारिया ने केन्द्रीय (एक्सिज) शक्तियों का साथ दिया एवं वर्तमान में सक्रिय मैकेडोनिया, उत्तरी यूनान एवं आज के सर्बिया के साथ स्वयं को जोड़ा। बुल्गारिया की ''पुरानी'' भौगोलिक सीमाओं'' के अन्दर रहने वाली यहूदी जनसंख्या चरम उत्पीड़न (नागरिकीय अधिकारों से वंचन, यहूदी विरोधी/नृवंशीय समर्थक कानून, स्वामित्व से पृथक्करण, श्रम शिविरों में जीवन की बाध्यता आदि) का शिकार थी। परन्तु निर्णायक समाधान का प्रतिरोध फासिस्ट विरोधी चरम पन्थियों एवं

>>

अभिजनों के एक हिस्से ने किया और आखिरी क्षणों में वह समाधान टल गया। ''नयी'' सीमाओं की भौगोलिक रचना में, दूसरी ओर, यह स्थिति नहीं थी एवं ''विदेशी'' यहूदी जनसंख्या को अन्ततः ट्रिबिलिंका में वापस भेज दिया गया।

इन घटनाओं ने पुराने साम्यवादियों एवं साम्यवाद विरोधियों को विभिन्न तर्कों को प्रस्तुत करने को प्रेरित किया। 1990 के दशक में विभिन्न राजनीतिक दलों से जुड़े समाचार पत्रों के समाजशास्त्रीय अनुसंधान, जिसे ''इन्स्टीट्यूट फार क्रिटिकल सोश्यल स्टडीज'' ने निर्देशित किया, से ज्ञात होता हैं कि पूर्व साम्यवादी इस विचार को केन्द्रीय महत्व दे रहे थे कि यहूदी जनसंख्या को ''नवीन'' भौगोलिक सीमाओं में बहिष्कृत किया जाए जिससे पूर्व समाजवादी दौर के ''फासीवादी तत्वों को सिद्ध किया जा सके। इसके विपरित साम्यवाद विरोधी इस विचार को प्रस्तुत कर रहे थे कि ''पुरानी'' भौगोलिक सीमाओं के अन्दर निर्णायक समाधान को रोक दिया गया था जो कि अभिजनों के मध्य पनपे प्रतिरोध के कारण था। इन्होंने फांसीवाद विरोधी चरम पन्थियों की भूमिकाओं को महत्व नहीं दिया। ये चरम पंथी साम्यवादियों के मध्य मजबूत थे परन्तु इन्हें अनेक बार ''अपराधी'' के रूप में प्रस्तुत किया गया।

इन दोनों विवेचनाओं में एक समान प्रकृति की कमी है। एक भी विवेचना अपनी विरोधी विवेचनाओं के तर्कों की वैधता को मान्यता देने की क्षमता नहीं रखती। बुल्गारिया की समाजशास्त्री लिलयाना डेयानोवा इस प्रघटना को उत्तर साम्यवादी निषेधवाद के रूप में देखती हैं। निषेधवाद केवल अतीत तक ही सीमित नहीं है अपितु यह ''अन्यों'' की स्थिति की अस्तित्व सम्बन्धी मूल विशेषताओं को स्वीकारने के पक्षों पर भी असफल होता है। सामान्यतः यह ''अन्यों'' की ''त्रुटिपूर्ण'' स्मृतियों को आपराधिक प्रकृति के रूप में स्थापित करने पर जोर देता है। यह पक्ष व्यापक यूरोपियन दृष्टि एवं नवीन स्मृति कानूनों को बाध्यतामूलक रूप से निरूपित करने के प्रयासों से प्रभावी रूप से जुड़ जाता है। सामाजिक स्मृति के इस स्वरूप के अन्तर्गत विद्यमान विषयपरकताओं के ये पक्ष अपने विरोधियों को घोर शत्रुतापूर्ण तरीके से देखते हैं। राजनीतिक विरोधाभास अथवा विपरीतता को रैडिकल भिन्नता की संज्ञा देकर असामान्य, देशभक्तिहीन, धोखेबाज, झूठा, राष्ट्रीय परिदृश्य में घुसी विदेशी शक्तियों जैसे सम्बोधों का प्रयोग होता है। इस 'द्रोही' विमर्श में राष्ट्र पर विचार एक 'सद्भावी समग्र' के रूप में किया जाता है। इस प्रकार की बहसें जो अरूचिपूर्ण होती हैं, राजनीति को ''अथवा''–''और'' में समाहित कर देती हैं। क्या यहूदी सुरक्षित रहें या नहीं? क्या बुल्गारिया लोकतान्त्रिक था अथवा फासीवादी? इसके अलावा विकल्प वहाँ नहीं थे।

सन् 2001 के उपरान्त दो दलीय प्रारूप के साथ संतुलित/स्थायित्व मूलक राजनीतिक पहचाने जिन्हें दो दलीय प्रारूप प्रतिनिधित्व प्रदान करता था, का पता हो गया। जहाँ तक यहूदी जनसंख्या के भविष्य का सम्बन्ध है, इसके विषय में साम्यवाद विरोधी विमर्श स्थापित हो चुका था। युद्धोपरान्त साम्यवादी ट्रायल्स (मुकद्दमों) को औपचारिक रूप से अवैध घोषित किया गया इसमें वे भी मुकद्दमे सम्मिलित थे जो फासीवाद, सहयोगी षडयन्त्रकारियों एवं उन्हें क्रियान्वित करने वालों के विरूद्ध थे। नियन्त्रण वाले क्षेत्रों से यहूदियों को निष्कासित किया गया और इस विषय में यह तर्क दिया गया कि 'हमारे पास इसके अलावा और कोई चारा नहीं था' अथवा 'ये क्षेत्र वास्तव में हमारे नहीं थे' परन्तु ये अन्तः विरोध एक निर्वचनात्मक परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत हुए। सीमायी/क्षेत्रीय विस्तार को 'स्वतन्त्रता' एवं 'महान बुल्गारिया का एकीकरण' की संज्ञा दी गयी। हाल के वर्षों में ये सभी प्रस्तुतिकरण और अधिक मजबूत हुए हैं। इस पक्ष की प्रस्तुति प्राचीन मिस्त्र के मैकडान की राजशाही के रूप में हुई है जिसे बुल्गारिया के राजनीतिक एवं मुख्यधारा के सामाजिक संचार ने ''असत्य'' इतिहास के रूप में आरोपित किया है। ताकि हाल ही में बनाये गये स्कापजी में विध्वंस की संग्रहशाला (म्यूजियम) को ''नकली'', ''खाली'' इत्यादि के रूप में प्रस्तुत किया जा सके। अब तो न केवल ''साम्यवादी'' अपितु ''मैकेडोनियन्स'' भी, जिन्हें दुश्मनों के रूप में देखा जाता है, विध्वंस में बुल्गारिया की सहभागिता के विषय में झूठ बोलते हैं।

> फासीवाद की वास्तविकताओं की उपेक्षा

1989 के बाद से स्मृति की राजनीति ने प्रभावी ढंग से नाजीवादी यहूदी विरोध एवं फासीवाद को विशिष्ट स्वरूपों में विस्थापित किया है। फासीवाद का एक सरल सिद्धान्त जो राज्य समाजवाद के दौरान प्रचलित था एवं दिमित्रोव (बुल्गारिया के साम्यवादी नेता) की शास्त्रीय परिभाषा से जिसने आधार ग्रहण किया था (फासीवाद को जिसमें वर्गीय संदर्भों में सीमित कर दिया गया) को दूसरी परिभाषा द्वारा प्रतिस्थापित कर दिया गया। विध्वंस को एक सतही किस्म के नैतिकतावाद में सीमित कर दिया गया और इसे एक हल्का सा कट्टरतावाद का रूप दे दिया गया जिसका उद्देश्य ''हम'' के बारे में यह बताना था कि क्या ''हम'' अच्छे हैं अथवा बुरे हैं। फासीवाद पर होने वाली आवश्यक बहस की उपेक्षा इस आरोप के साथ कर दी गयी जिसमें व्याख्या के परे उन विदेशी शक्तियों को जिम्मेदार बताया गया जिन्होंने ''भेदभाव एवं असहिष्णुता'' को दवाब के साथ स्थापित किया पर भाग्यवश ''परम्परावादी सहिष्णु नागरिक समाज'' को दवाब के साथ स्थापित किया पर भाग्यवश ''परम्परावादी सहिष्णु नागरिक समाज'' ने जिसका प्रतिरोध किया। बल्गारियन फासीवाद की वास्तविकताओं को फासीवाद की औपचारिक विशेषताओं (की कमी) के आधार पर नकारने की कोशिश की गयी। ऐसा कोई भी जनाधार वाला दल नहीं है जो स्वयं को फासीवादी कहे अतः फासीवाद का अस्तित्व नहीं था। फासीवाद पर उपलब्ध विशाल साहित्य के लगभग कोई संदर्भ नहीं थे सिवाय इसके कि ''दो निरंकुशतावादी या सर्वसत्तावादी तन्त्रों'' के सीमिततावादी तुलनात्मक पक्षों की उपस्थिति थी। उदाहरण के लिए जीव स्टर्नहाल की फासीवादी विचार धारा की विश्लेषणात्मक दृष्टि एवं सोरेलियन की यह इच्छा कि इसे दक्षिण पन्थ या वामपन्थ के परे ले जाया जावे के कोई संदर्भ नहीं है। इसके साथ ही फासीवादी का सर्वाधिक संवेदनशील पक्ष भी उल्लेखित नहीं है जिसका सम्बन्ध नागरिकता के वि–सार्वभौमिकीकरण, युवाओं की साम्प्रदायिकता (पन्थीयता) एवं उनकी सक्रियता एवं 'ज्यूडियो–बाल्शेविज्म' की नाजी अवधारणा एवं इसके फासीवादी साम्यवाद विरोध आदि से है। संक्षेप में फासीवाद के किसी भी ऐसे विचार की उपेक्षा करने का प्रयास है जो समकालीन उत्तर–राजनैतिक कल्पनाओं के साथ तनावमूलक समानान्तरता को प्रस्तुत करें। दुर्भाग्यवश ये कमियाँ मुख्य धारायी राजनीति में ही विद्यमान नहीं हैं अपितु अकादमिक विश्व में जिसमें अनेक समाजशास्त्री भी सम्मिलित हैं, विद्यमान हैं। राजनीतिक एवं पत्रिकारिता की मुख्य धारायें ''बुल्गारिया के उस नायकवाद'' एवं युद्धकालीन नागरिकीय समाज को महामंडित करती हैं जिसने ''बुल्गारिया में यहूदी लोगों को बचाया'' एवं अतीत पर वर्तमान की लोकप्रिय अवधारणाओं को बाध्यता के साथ लागू किया। मुख्य धारा इस तथ्य से आँख चुराती है कि जहाँ ऐसे अनेक ढाँचे व लोग हैं जिन्होंने प्रतिरोध किया वहीं एक मजबूत ''नाजीवादी समर्थक नागरिकीय समाज'' भी उपस्थित था जिसे आन्दोलन एवं पदाधिकारियों दोनों में देखा जा सकता था। इसका प्रयास अंतिम समा–धान को कड़ाई से लागू करने के साथ जुड़ा था। यह पक्ष इस सवाल को उत्पन्न करता है कि किस ''नागरिकीय समाज ने प्रतिरोध किया''? बुल्गारिया ने किसे जाने से रोका? इस आवश्यकता मूलक एवं अ–ऐतिहासिक विचार कि यहाँ एक से अधिक बुल्गारिया उपस्थित थे (और अब भी हैं) के पीछे कौन था एवं क्या था और क्या छिपा था को समझने की जरूरत है।

हाल ही में अनेक इतिहासकारों एवं समाजशास्त्रियों ने इन पक्षों की आलोचनात्मक जाँच के साथ प्रकाशन भी किये हैं यह एक पुनः दौर के रूप में उभरा है। 2012 के अन्त में एक बड़े मानवाधिकारवादी गैर सरकारी संगठन ने ''अपने अतीत को जानें'' विषय पर एक विशाल सम्मेलन आयोजित किया जिसका लक्ष्य गम्भीर प्रकृति के अकादमिक योगदान को जनता के बड़े हिस्से तक पहुँचाना था। परन्तु इस तरह का प्रयास एक व्यापक स्तर की बहस को उत्पन्न करने में असफल रहा। इसके साथ ही इन नवीन प्रयासों का एक खतरा यह भी है कि मुख्यधारा की आलोचना एवं ''खतरे से बचाने वालों के राष्ट्र'' की प्रशंसा कहीं विपरीत रूप न ले ले और इस पक्ष को ''अपनी इच्छा से लागू करने वालों'' के संदर्भ के साथ ग्रहण किया जावे। ■

> मलेशिया के निर्माण में सामाजिक विज्ञान

शमसुल ए.बी., मलेशिया राष्ट्रीय विश्वविद्यालय (UKM) क्वाला लम्पुर, मलेशिया

रेमण्ड फर्थ (1901–2002), मलय मानवशास्त्र के औपनिवेशिक निर्माण में एक प्रभावशाली व्यक्ति था।

स्वयं के अकादमिक विभागों वाले विश्वविद्यालयी विषयों के रूप में अधिकारिक रूप से घोषित किए जाने के बहुत पहले नृविज्ञान और समाजशास्त्र ने मलय और 1963 के बाद मलेशिया के विचार को निर्मित करने वाले औपनिवेशिक ज्ञान के निर्माण में योगदान दिया था।

औपनिवेशिक युग के दौरान, औपनिवेशिक ज्ञान ने राज्य की दैनिक कार्यवाही में ''फूट डालो और राज करो'' के नियम / सिद्वान्त को लागू करने को उचित ठहराने वाले शासन के 'परिभाषित करो और राज करो'' के फ्रेमवर्क को प्रदान किया। 1823 में स्थापित द रायल सोसाईटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एवं आयरलैंड, औपनिवेशिक ज्ञान के समृद्व बनाने और मलय और फिर मलेशिया में तकनीक के शासन को स्थापित करने हेतु सामाजिक विज्ञान के लिए प्रमुख वाहन था। इसकी एक शाखा मलाया और बोर्नियों के स्ट्रेटस सेटलमेण्ट में 1878 में स्थापित हुई और वह कलकत्ता से ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कम्पनी द्वारा संचालित होती थी। रॉयल एशियाटिक सोसाइटी की स्ट्रेटस ब्रांच ऑफ द रायल एशियाटिक सोसाइटी (JSBRAS) थी। 1923 में इसका नाम बदल कर जर्नल ऑफ द मलायान ब्रॉंच ऑफ द रायल एशियाटिक सोसाइटी (JMBRAS) और 1965 में जर्नल ऑफ द मलेशियन ब्रांच ऑफ द रायल एशियाटिक सोसाइटी (JMBRAS) कर दिया गया। सोसाइटी अपना स्वयं का MBRAS मोनोग्राफ भी प्रकाशित करती थी।

करीबन 135 वर्षों तक, मलेशिया का विचार सोसाइटी के प्रकाशनों, जिनकी अर्न्तवस्तु में इतिहास, भूगोल, साहित्य, भाषा, संस्कृति, सामुदायिक अध्ययन, वनस्पतिशास्त्र और प्राणिशास्त्र की सामग्री सम्मिलित थी, के द्वारा गढ़ा गया था। मुख्य योगदानकर्ता अधिकांशतः औपनिवेशिक सरकारी अफसर थे जो मलाया में पदस्थापित होने के पहले ऑक्सफोर्ड और कैम्बरिज या लंदन में नृविज्ञान (नृविज्ञान में डिप्लोमा) में प्रशिक्षित थे। ऐसा ही एक अफसर जॉन गुल्लिक (1916–2012) था जो मलाया में सेवारत था और जिसने मलेशिया के इतिहास और समाज पर कम से कम एक दर्जन पुस्तकें लिखी जिन्हें ऐतिहासिक समाजशास्त्र के रूप में देखा गया। इनमें से कइयों को बाद में, स्थानीय विश्वविद्यालयों में पाठ्यपुस्तकों के रूप में अपनाया गया।

अतः इसमें कोई आश्चर्य नहीं हैं कि द्वितीय विश्वयुद्व के पश्चात् औपनिवेशिक कार्यालय द्वारा मलय भेजे जाने वाले पहले दो शोधकर्त्ता, विश्व–विख्यात शिक्षाविद् सामाजिक मानवविज्ञानी रेमण्ड फर्थ, जो मलय में सामाजिक विज्ञानों में शोध के स्तर का अध्ययन करने आये थे, और एडमण्ड लीच, जो मलय और सरावाक में समाज की सामाजिक–आर्थिक स्थिति का अध्ययन करने आये थे। फर्थ और लीच के पीछे उनके विद्यार्थी आये जिन्होंने 1950 के दशक के प्रारंभिक वर्षों में सरावाक में चीनी और देशज समूहों, सिंगापुर में मलय और चीनियों की सांस्कृतिक आदतों का परीक्षण और नेगेरी सेम्बलियान में मलय की एकमात्र मातृवंशीय समाज और जोहोर में चीनी–मलय सम्बन्धों पर कियाई सलेह सहस्त्राब्दवादी आंदोलन के प्रभाव पर फोकस कर के विस्तृत क्षेत्रकार्य किया। उन्होंने उच्च गुणवत्ता वाले मोनोग्राफ लिखे जिनका प्रकाशन यू.के. और अन्य स्थानों से हुआ।

लंदन में फर्थ के नीचे पढ़ने वाले अगली पीढ़ी के विद्यार्थियों में अब्दुल कहार बोदोर (जिसने मलय पारंपरिक नेताओं का अध्ययन

>>

किया), मोखजानी रहीम (जिसने मलय ऋण व्यवस्था) और सैयद हुसैन अली (मलय कृषक वर्ग एवं नेतृत्व) सम्मिलित थे। ये सभी मलय विश्वविद्यालय (UM) में पढ़ाने के लिए लौटे जहॉ वे उनके साथ अपनी पुस्तक द मिथ ऑफ द लेजी नेटिव (1977), जिसने एडवर्ड सेड़ के ''ओरियेन्टलिज्म'' के विचार में योगदान दिया, के लिये विख्यात और एमर्स्टडम में प्रशिक्षित समाजशास्त्री, सैयद हुसैन अलातास जुड़े। ये विद्वान नृविज्ञान और समाजशास्त्र के शिक्षण और शोध का केन्द्र थे।

13 मई 1969 के नृजातीय दंगों के बाद में, उपरोक्त वर्णित चारों सामाजिक मानवविज्ञानियों ने देश में शांति और स्थिरता लौटाने हेतु राष्ट्रीय सलाहकार संघ द्वारा चलाई गई गतिविधियों में अपनी भागीदारी के माध्यम से 'उपचारत्मक प्रक्रिया' में महत्ती सार्वजनिक भूमिका निभाई।

सरकार द्वारा मानी गई फोर्ड फाउंडेशन की रिपोर्ट – Social Science Research for National Unity : A Confidential Report to the Government of Malaysia (1970) के फलस्वरूप नृविज्ञान, समाजशास्त्र, राजनीतिशास्त्र, मनोविज्ञान और संचार अध्ययन को विश्वविद्यालयी विषयों के रूप में प्रारंभ किया गया जिसने 1978 में स्थापित Malaysian Association of Social Science का आधार तैयार किया।

जुलाई 1969 में नृजातीय दंगों के तुरन्त बाद ही सरकार ने राष्ट्रीय एकता के एक विभाग की स्थापना भी की। इस विभाग के कई निदेशक और अधिकारी नये विभागों और UM के पुराने मलय अध्ययन विभाग से स्नातक हुए मानवविज्ञानी और समाजशास्त्री थे। वास्तव में 1980 के दशक तक मलेशिया के कई उच्च सरकारी अधिकारी इन्हीं विभागों से पढ़ कर निकले हुए थे।

UM और UKM से मानवविज्ञानियों और समाजशास्त्रियों का पहला बैच क्रमशः जुलाई 1974 और 1975 में स्नातक हुआ।

दोनों सार्वजनिक और निजी क्षेत्र में इन्हें अच्छे से स्वीकारा और बहुत आवश्यक

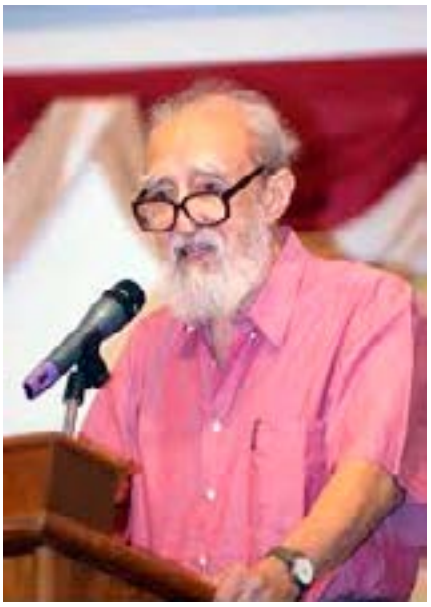

सैयद हुसैन अलातास (1928–2007), एक महान सार्वजनिक मलेशियन बुद्धिजीवी, एक राजनीतिज्ञ तथा इसी के साथ मलेशियन समाजशास्त्र के संस्थापक जनक में से एक, अपने औपनिवेशिक विचारों की समीक्षा के लिए प्रख्यात हैं।

'सामान्यज्ञ' (जो समकालीन मुद्दों को समझ सकें व अपने मुवक्किलों की सेवा कर सकें) के रूप में उन्हें तुरंत रोजगार भी मिल गया। बहु–नृजातीय और सांस्कृतिक रूप से विविध मलेशिया में 'संस्कृति की फेरी' लगाने की इनकी क्षमता की उच्च मांग थी जो 21वीं शताब्दी तक चलती रही। नृविज्ञान के मलेशियाई व्याख्यता, टेन ची बेंग जिसने Bibliography of Ethnic Relations in Malaysia (1999) का संपादन किया, ने नृजातीय संबंधों के अध्ययन में महत्वपूर्ण योगदान दिया। 2005 में मलेशियाई कैबीनेट ने मलेशिया की बीस सरकारी विश्वविद्यालयों में नामांकित सभी विद्यार्थियों के लिए नृजातीय सम्बन्धों का एक अनिवार्य पाठ्यक्रम प्रारम्भ करने का प्रस्ताव दिया। इस कोर्स का माड्यूल मेरी नेतृत्व वाली टीम ने तैयार किया और 2007 में मुझे UKM में पूर्णकालिक नृजातीय अध्ययन संस्था (KITA) के गठन की जिम्मेदारी सौंपी गई।

संक्षेप में, मलेशिया के निर्माण में, विशेष रूप से सामाजिक सामंजस्य बनाये रखने में मानवविज्ञानी और समाजशास्त्रियों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है।

ये लोग 'मलेशिया के विचार', एक बहुलवादी, नृजातीय, स्तर पर जटिल समाज, को परिहार्य रूप से प्राप्त करने वाले साधक के रूप में रहते है। यद्यपि वह समाज सतत रूप से तनावपूर्ण व असामान्य स्थितियों में रहता है जो कि ऐसे समाजों में असाधारण है। ■

> वचनबद्ध समाजशास्त्री का जीवन–काल

डाटो रहमान एम्बोंग के साथ एक साक्षात्कार

डाटो रहमान एम्बोंग

प्रख्यात मलेशियाई समाजशास्त्री और लम्बे समय से लोक बुद्धिजीवी रहमान एम्बोंग ने औपनिवेशिक काल से उत्तर औपनिवेशिक के संघर्षों और फिर दमन से 1991 के बाद एक नई पारी के दौरान मलेशियाई समाजशास्त्र के विकास को अपनी आत्मकथा के साथ मिलाते हुए अनुरेखण किया।

मा.बु. : चलिये, आरम्भ से शुरू करते हैं। औपनिवेशवाद के तहत पलते हुए आप शिक्षा को प्राप्त करने में कैसे सफल हुए? यह एक असाधारण उपलब्धि लगती है।

र.ए. : चलो घटनाक्रम निर्धारित करते हैं। माईकल, आप हाल ही में 28 मिलीयन लोगों को सम्पन्न और तेल समृद्ध देश मलेशिया, जो 2020 तक उच्च आय वाले विकसित देशों के स्थान को प्राप्त करने की आकांक्षा रखता है, की यात्रा पर गये थे। वह 1957 में स्वतन्त्रता के समय कृषि में पिछड़ा हुआ और माल उत्पादक देश से काफी लंबा सफर तय कर चुका है। आपकी यात्रा के दौरान, हम आपको अपनी राजधानी क्वाला लम्पुर की नब्ज महसूस कराने और नवीन प्रशासनिक केन्द्र पुत्रजाया को दिखाने के लिए ले गये थे। पूर्व में रबर और ताड़ के पेड़ से रोपित जमीन पर बसया गया पुत्रजाया, मूल रूप से देशज लोग–औरांग अस्ली, द्वारा बसाया गया जंगल था। कुछ लोग प्रशासनिक केन्द्र को वास्तव में भव्य, वैभव पूर्ण अत्याधुनिक शहर और कई विकासशील देशों की ईर्ष्या का कारण मानते हैं। यह प्रधानमंत्री महातिर का सपना था जिसे वे भावी पीढ़ी के लिए विरासत में छोड़ कर जाना चाहते थे।

फिर भी, मुझे अब अपनी पृष्ठभूमि की तरफ पलटना चाहिए। मेरा जन्म एक 'मध्यम' किसान परिवार में हुआ जो न तो अमीर था न ही अत्यधिक गरीब। मेरा जन्म स्थान उस समय प्रायद्वीपीय मलेशिया (तब यह मलय के नाम से जाना जाता

> >

था) के पूर्वी तट पर स्थित सबसे पिछड़े राज्य टेरेगानू था। मैं 1944 मैं पैदा हुआ जब जापानी कब्जा खत्म होने को था और जब खाद्य संकट और नियतांश के कारण अधिकांश परिवारों के लिए स्थितियाँ बहुत कठिन थी। मेरे पिता पैडी किसान और स्थानीय मस्जिद के इमाम थे, जो अपने बच्चों को अंग्रेजी माध्यम के विद्यालय में नहीं भेजना चाहते थे क्योंकि वे उन्हें अरबी या धार्मिक विद्यालय में पढ़ाना चाहते थे। वे उन अंग्रेजों को भी कोसते थे जो मलय में जापानी आक्रमण के समय यहाँ से भाग गये या फिर उन्होंने समर्पण कर दिया।

मेरे माता–पिता बहुत परिश्रमी थे। वे अपने व्यस्क होते हुए पाँच बच्चों, जिसमें मैं सबसे छोटा था, को सहारा देने के लिए अपने पैडी खेतों को जोतते थे। गाँव में अन्य परिवार भी अपनी जमीनों पर खेती करते थे। ये किसान Orientalists द्वारा कही गई अपमानित टिप्पणी ''आलसी देशी'' में सही नहीं बैठते थे। स्वर्गीय सैयद हुसैन अलातास ने अपनी 1977 की शास्त्रीय कृति में इस मिथक को खारिज किया था।

मेरे जन्म के पाँच वर्ष बाद, 1949 में, मेरे पिता की मृत्यु हो गई। मुझे यह बताया गया था कि कई दिनों तक प्रमाद से पीड़ित रहने के बाद, मलेरिया के कारण उनकी मृत्यु हुई। हमें बहुत दुख हुआ। आज से अलग, उस समय अस्पताल बहुत दूर था, कोई क्लिनिक और कोई चिकित्सक नहीं था और उस समय तो हमें यह भी पता नहीं था कि उन्हें क्या हुआ था। मेरे पिता के निधन के बाद मेरी माँ के लिए बहुत कठिन जीवन था। उसे अपने बच्चों को सहारा देने के लिए सब्जी उत्पादन, घर में बनाई मिठाईयाँ, तम्बाकू और अन्य सामग्री बेचने वाला ग्रामीण फेरीवाला बनना पड़ा जो एक छोटे ग्रामीण बाजार से दूसरे सामान बेचने जाता है।

सबसे छोटा और तब विद्यालय में होने के कारण मैं अपने बड़े भाई–बहिनों की तरह छोटे–मोटे काम करने की कठिन परीक्षा से बच गया। परन्तु मैं अपनी माँ के ग्रामीण बाजारों के कई फेरों पर उसके साथ रहता था और अपने छोटे हाथों से बड़े आकार की टोकरियों को ले जाने में मदद करता था। उन दिनों में मेरी माँ 'नकद दो और ले जाओ' प्रकार की ग्रामीण अर्थव्यवस्था का हिस्सा थी।

गाँव में लगभग कोई बिजली या नलों में जल की व्यवस्था नहीं थी। न ही घरों में कोई टेबल या कुर्सियाँ थी। रात में मैं टिमटिमाते केरोसिन लैम्प को जलाकर, पेट के बल लेट कर अपना गृह कार्य करता था। मेरे बड़े भाई–बहिन पहले मलय प्राथमिक विद्यालय और फिर एक या दो साल के लिए अरबी या धार्मिक विद्यालय गये थे, परन्तु बाद में उन्होंने काम के लिए पढ़ाई छोड़ दी। परन्तु मैं एक भिन्न उडान–पथ पर स्थापित था। मेरी माँ और बड़े भाई–बहिन नहीं चाहते थे कि मैं उनके कदमों पर चलूँ; वे मुझे गाँव से बहुत दूर जाते हुए देखना चाहते थे। अतः मलय प्राथमिक और धार्मिक शिक्षा प्राप्त करने और प्रवेश परीक्षा उत्तीर्ण करने के पश्चात् मैंने शहर के एकमात्र अंग्रेजी माध्यम के सरकारी विद्यालय में प्रवेश लिया। मुझे ''विशिष्ट मलय कक्षा'' – एक द्रुत कक्षा जिसने मुझे तीसरे वर्ष में ही प्राथमिक छठी में जाने का अवसर दिया, में प्रवेश मिला। चूंकि मैं उत्कृष्ट छात्र था, मुझे स्थानीय सेना के अफसर और भावी सरकारी प्रशासकों को प्रशिक्षित देने हेतु 1953 में मलय के पूर्वी तट पर ब्रिटिश द्वारा स्थापित रायल मिलीटरी कॉलेज–एक अभिजात नृजातीय विद्यालय, में प्रवेश के लिए छात्रवृत्ति भी प्रदान की गई। 1960 में पूरे टेरेगानू से कॉलेज जाने वाले हम पाँच लोग थे। मेरी पीढ़ी में से मैं अकेला ही था जो स्थानीय जिले और बाद में देश से बहुत दूर जा पाया।

मिलीटरी कॉलेज के तत्कालीन कमांडेंट, अध्ययन के निदेशक और कई शिक्षक अंग्रेज थे। हालांकि वे बहुत अच्छे थे परन्तु उनकी कृपालु मनोवृत्ति ने हमारे में औपनिवेशिक–विरोधी भावनाओं को विकसित होने में मदद की। आपको यह याद रखना होगा कि वह 1957 में स्वतन्त्रता के पश्चात कुछ ही वर्षों का समय था और मलयीकरण की नीतियों का असर साठ के उत्तरार्ध और सत्तर के पूर्वार्ध में प्रभावी होना शुरू हुआ था।

1964 में महाविद्यालय से हाई स्कूल खत्म करने के पश्चात् मुझे सरकारी छात्रवृत्ति पर इस दृष्टिकोण के साथ कि विश्वविद्यालयी शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात मैं मलेशियाई अभिजात सिविल सेवा में काम करूँगा, 'मदर' इंग्लैंड भेजा गया। कई अन्य उत्कृष्ट मलय छात्रों को भी यू. के. जाने के लिए इसी तरह की छात्रवृत्तियाँ मिली।

मा.बु. : इंग्लैंड जाने व लिसेस्टर और फिर SOAS से डिग्री प्राप्त करने की प्रक्रिया ने आपके बौद्धिक और राजनैतिक विकास को किस तरह से प्रभावित किया?

र.ए. : यू. के. में अध्ययन करना मेरे जीवन का निर्णायक मोड़ था। उसने मेरे बौद्धिक क्षैतिज्य को विस्तृत और गहरा एवं मेरे आदर्शों को मजबूत किया। मैं समाजशास्त्र का अध्ययन करने 1965 में लिसेस्टर गया और 1968 में बी. ए. की डिग्री प्राप्त करने के बाद एरिया स्टीडज में एम. ए. करने हेतु London School of Oriental and African Studies (SOAS) गया और वह मैंने 1970 में प्राप्त किया। उस समय मेरे शिक्षक ब्रिटेन और यूरोप के अग्रणी विद्वानों में से थे। साठ के दशक के उत्तरार्ध में लंदन और एक तरह से ब्रिटेन और पश्चिमी यूरोप, छात्र सक्रियता के साथ अमरीकी–विरोधी साम्राज्यवाद विशेषकर वियतनाम में उसके आक्रामक युद्ध के विरूद्ध गुस्से से खौल रहे थे। चीनी क्रांति और क्यूबा की क्रांति भी कई लोगों के लिए आकर्षण का केन्द्र थी। समाजशास्त्र के विभिन्न विचारधाराओं–संरचनात्मक प्रकार्यवाद से मार्क्सवाद और सामाजिक रचनावाद से मेरा परिचय हुआ और मैंने New Left Review ,oa Monthly Review जैसी वामपंथी पत्रिकाएँ और सभी तरह की पुस्तकें पढ़ी। यह वह संदर्भ है जिसमें मेरा राजनीतिकरण हुआ और मैं कट्टरपंथी बना। लंदन में मेरी पीढ़ी के कई मलेशियाई छात्र भी समान प्रकार के सक्रियवाद से प्रेरित हुए।

मा.बु. : आपके मलेशिया लौटने के पश्चात क्या हुआ? देश पन्द्रह वर्षों से भी ज्यादा समय से स्वतन्त्र था, तो आप उसमें कैसे फिट हुए?

र.ए. : मैं, 13 मई, 1969 को हुए खूनी नस्लीय दंगों के उन्नीस महीनों बाद 31 दिसम्बर 1970 को क्वालालम्पुर लौटा। यू. के. में प्रवास के दौरान घर पर होने से घटनाओं के नजदीकी संपर्क में रहा। 1969 के दंगों की खबरों ने हम पर वज्रपात किया। मैं तब छात्र नेता था और अपने मित्रों के साथ मिलकर मलय, चीनी, भारतीय और अन्य छात्रों को शिक्षित और एकजुट करने के लिए हमने फोरम और सेमीनार जैसी

>>

विभिन्न गतिविधियाँ आयोजित की। हमने गर्मजोशी से यह बहस की कि यहाँ मुद्दा नस्ल का नहीं अपितु वर्ग का था।

वहाँ मलेशिया में, स्थापित मलय विश्वविद्यालय जिसका शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी था, के बराबर में ही मलय माध्यम का एक नया विश्वविद्यालय स्थापित हो रहा था। नया विश्वविद्यालय Uuniversity Kebangsaan Malaysia (मलेशिया का राष्ट्रीय विश्वविद्यालय–UKM) मई, 1970 में स्थापित हुआ। यह कई मलय राष्ट्रवादियों के संघर्ष का परिणाम था जो चाहते थे कि देश में राष्ट्रीय भाषा मलय का विश्वविद्यालय हो जहाँ राष्ट्रीय विद्यालयों के छात्र मुख्य रूप से प्रवेश लें। 1980 के दशक तक सभी विश्वविद्यालयों में मलय भाषा नीति पूर्ण रूप से प्रभावी हो चुकी थी। ध्यान रहे, उस समय के छात्र एक विशिष्ट समूह थे जो 18–24 वर्ष के आयु–समुह का मात्र 1 प्रतिशत थे; आज के विपरीत जहाँ तृतीयक संस्थाओं में यह अनुपात 30 प्रतिशत तक पहुँच गया है।

मा.बु. : समाजशास्त्र में क्या हुआ?

र.ए. : उन दिनों समाजशास्त्र में कई महत्वपूर्ण घटनाक्रम हुए थे। प्रोफेसर सेमुअल हटिंगटन की अध्यक्षता और मैनिंग नैश, मायरन वेनर और नाथन ग्लेजर के सहयोग से प्रधानमंत्री के विभाग की हार्वर्ड सलाहकार सेवा ने 1969 के दंगों के बाद सरकार को राष्ट्रीय एकता के लिए सामाजिक विज्ञान अनुसंधान शीर्षक की रिपोर्ट दी।

इस रिपोर्ट में उन्होंने राष्ट्रीय एकता की समस्या का समाधान खोजने और राष्ट्र निर्माण के संघर्ष की स्थितियों का समाधान खोजने और राष्ट्र निर्माण के संघर्ष की स्थितियों से निपटने के लिए विशेषज्ञों को प्रशिक्षित करने हेतु सभी मलेशियाई विश्वविद्यालयों में समाजशास्त्र, मानवशास्त्र, मनोविज्ञान और राजनीति विज्ञान विषय खोलने की अनुशंसा की । यह तभी था कि UKM ने नृविज्ञान और समाजशास्त्र का विभाग खोला और सक्रिय रूप से शैक्षिक स्टाफ की भर्ती शुरू कर दी। अतः जब मैंने अपने लौटने के पश्चात सिविल सेवा में शामिल होने के लिए डयूटी पर रिपोर्ट किया तो मुझे UKM जाने के लिए कहा गया। मुझे बताया गया कि UKM को मेरे जैसे स्नातकोत्तर डिग्री प्राप्त, वह भी लंदन से, की शिक्षण हेतु आवश्यकता थी। मैं तो अपने ह्रदय में यही चाहता था–एक विश्वविद्यालय में शिक्षण।

मा.बु. : ऐसा प्रतीत होता है कि 1970 के दशक के शुरूआत में सामाजिक विज्ञान फल–फूल रहे थे, हालांकि हार्वर्ड टीम की छत्र छाया और राष्ट्र निर्माण के प्रति उनकी चिंता के अंतर्गत। क्या यह सही है?

र.ए. : यह सही है कि मलेशिया में 1960 के दशक के अंत और 1970 के प्रारम्भ में सामाजिक विज्ञान और मानविकी के उत्कर्ष का काल–महान बहस का युग था। लेकिन मुझे हार्वर्ड टीम को परिप्रेक्ष्य में रखने दीजिए। रिकार्ड के लिए, मैं UKM के नवस्थापित नृविज्ञान और समाजशास्त्र विभाग में चौथा सदस्य था। पहले तीन, मलय विश्वविद्यालय से स्नातक थे। वस्तुतः 1960 के दशक में हार्वर्ड टीम की अनुशंसा के पहले ही, नृविज्ञान और समाजशास्त्र के तत्व मलय विश्वविद्यालय (UM) के मलय अध्ययन विभाग के संस्कृति धारा के तहत पढ़ाये जा रहे थे। समाजशास्त्रियों में प्रमुख सुतन तकदिर अलिसजाहबाना, सयैद हुसैन अलातास (जो बाद में सिंगापुर चले गये) तथा सयैद हुसिन अली थे। अतः हम एक तरफ तो यह बहस कर सकते हैं कि मलेशिया में समाजशास्त्र और नृविज्ञान ''आधुनिकीकरण और राष्ट्र निर्माण की संतान है'' और हार्वर्ड की टीम इस जन्म की एकमात्र दाई नहीं थी क्योंकि UM के विद्वानों ने इसकी नींव पहले ही रख दी थी।

विषयों के मध्य बहसों में भिन्नता थी। साहित्यकार काफी वाचाल रूप से राष्ट्रीय साहित्य के संस्थानीकरण, 'कला को कला' के बजाय 'कला को समाज' के लिए की वकालत कर रहे थे; इतिहासकार इतिहास के औपनिवेशिक (पढ़ें : आर्वचीनवादी) दृष्टिकोण को नकार रहे थे; अर्थशास्त्री 'महान आर्थिक बहस' आयोजित कर रहे थे और हम युवा समाजशास्त्री और मानवविज्ञानी प्रत्यक्षवाद, संरचनात्मक प्रकार्यवाद और आधुनिकीकरण के सिद्धान्त और वे सिद्धान्त जो हार्वर्ड टीम द्वारा उन्नत किये गये थे, के खिलाफ एक वैचारिक युद्ध लड़ रहे थे।

दूसरे मोर्चे पर, यह छात्र और युवा आंदोलन के हिस्से के रूप में इस्लामिक दकवाह आंदोलन की शुरूआत भी थी। परिसर वियतनाम में अमरीकी साम्राज्यवादी युद्ध और फिलीस्तीन में इजराइली आक्रमकता का विरोध करने वाले छात्र और बौद्धिक सक्रियता से भरा हुआ था। आंतरिक रूप से हम भूमिहीन किसानों और शहर में अवैध कब्जा करने वाले बेघरों का समर्थन करते थे। हमने गरीबी जो तब करीबन 50% घरों को प्रभावित करती थी, के खिलाफ अभियान चलाया और सत्तारूढ़ अभिजात की 'जल्दी से अमीर बनो' मानसिकता और भ्रष्टाचार का विरोध किया।

व्यक्तिगत रूप से मेरे लिए यह लंदन के दिनों की छात्र सक्रियता और शैक्षिक जीवन की निरन्तरता थी। समाजशास्त्रीय सिद्धान्तों को अपने मार्गदर्शक के रूप में रखकर मैंने दो लोकप्रिय पाठ्यक्रम–विकास का समाजशास्त्र और राजनैतिक समाजशास्त्र पढाये जबकि मेरे सहकर्मीयों ने अन्य पाठ्यक्रम जैसे ग्रामीण समाजशास्त्र, नगरीय समाजशास्त्र, नस्लीय संबंध इत्यादि पढ़ाये। 1973 में मैंने Truth नामक एक मासिक पत्रिका शुरू की जिसे सात माह पश्चात प्रतिबंधित कर दिया गया था। मैं और मेरे दोस्त जो कर रहे थे वह सिर्फ अकादमिक और विवेचनात्मक समाजशास्त्र नहीं था अपितु वह पहले से ही लोक समाजशास्त्र था–हालॉकि उस समय यह शब्द नहीं था। हमारी स्थिति बिल्कुल स्पष्ट थी : मूल्य मुक्त समाजशास्त्र जैसा कुछ नहीं होता और विकास की आधुनिकीकरण के सिद्धान्त बहुराष्ट्रीय कार्पोरेशन के हितों की आवश्यकता पूरी करते थे। गुन्डर फ्रेंक की तरह हमने बहस की कि विकास और अल्पविकास एक ही सिक्के के दो पहलू हैं और पश्चिम द्वारा विरासत में मिला विकास का समाजशास्त्र उतना ही ''अल्पविकसित'' है जितना वे देश जिन्हें उसे सम्बोधित करना था।

मा.बु. : फिर दमन का काल आया। मुझे उस के बारे में बताइए और समाजशास्त्र इससे किस प्रकार प्रभावित हुआ।

र.ए. : कई लोगों के जीवन में 1974 का वर्ष एक और निर्णायक मोड़ ले कर आया। उस वर्ष अगस्त में मलेशिया में समाजशास्त्र, नृविज्ञान और मनोविज्ञान की भूमिका और अभिमुखन पर पहली राष्ट्रीय कांफ्रेस UKM में आयोजित हुई। मैं आयोजन समिति का अध्यक्ष था। वह एक जीवन्त कांफ्रेंस थी जहाँ किस प्रकार के समाजशास्त्र और सामाजिक विज्ञान को

>>

प्रोत्साहित और बढ़ावा देना चाहिए पर गहन बहस हुई। यह वैचारिक युद्ध का एक अन्य रूप था। शोधार्थियों एवं छात्रों के साथ मिलकर विभिन्न मलेशियाई विश्वविद्यालयों के व्याख्याताओं ने इसमें सक्रिय रूप से भाग लिया। इसी समय हमने मलेशियाई सामाजिक विज्ञान संघ (MSSA) के गठन का प्रस्ताव रखा जो 1978 में फलीभूत हुआ।

छात्र आंदोलन और बौद्धिक सक्रियवाद, जो 1974 में अपने उत्कर्ष पर था, ज्यादा दिन नहीं चल पाया क्योंकि उसे जल्दी ही दबा दिया गया था। उस समय दिसम्बर में छात्र नेताओं और बौद्धिक सक्रिय कार्यकर्त्ताओं को निशाना बनाते हुए सामूहिक गिरफ्तारियाँ हुई। यह उस समय का महत्वपूर्ण मोड़ था जिसका देश के बाद के इतिहास पर गंभीर प्रभाव पड़ा। मलेशियाई प्रतिपक्ष के वर्तमान नेता अनवर इब्राहिम, तब के मुस्लिम युवा आंदोलन के सर्वाधिक प्रभावशाली नेता को गिरफ्तार और हिरासत में लिया गया। रिहाई के पश्चात् अनवर को प्रधानमंत्री महातिर ने अपने साथ शामिल किया और वह उप प्रधानमंत्री के पद तक पहुँचे। बाद में उनके संबंध बिगड़ गये और उन्हें 1998 में पदच्युत किया गया। बाकी सब इतिहास है।

शैक्षिक हलकों में, उस वक्त मलेशिया के सबसे वरिष्ठ समाजशास्त्री, मलय विश्वविद्यालय के सयैद हुसिन अली को भी गिरफ्तार किया गया और वे 6 वर्षों के लिए 1980 तक हिरासत में रहे। दिलचस्प बात यह है कि वे हिरासत में रहने के बावजूद विश्वविद्यालय में अपनी प्रोफेसर की नौकरी को बचा कर रखने में कामयाब रहे। विद्वानों के बीच उनकी उच्च प्रतिष्ठा थी और जेल के फाटक के बाहर निकलने के थोड़े समय पश्चात ही उन्हें मलेशियाई सामाजिक विज्ञान संघ का अध्यक्ष निर्वाचित किया गया। उन्होंने इस पद को 1990 तक दस वर्षों के लिए संभाला।

सामूहिक गिरफ्तारियों के पश्चात 1975 में सरकार ने 1971 में लागू हुए विश्वविद्यालय एवं विश्वविद्यालय–महाविद्यालय अधिनियम को कसने के लिए कई संशोधन किये जिन्होंने विश्वविद्यालयों की अकादमिक स्वतन्त्रता एवं स्वायत्तता में कटौती की। यह एक दमनकारी कार्यवाही थी जिसने कई वर्षों तक विश्वविद्यालयों के बौद्धिक और छात्र जीवन को पंगु बना दिया। इस अधिनियम में पिछले वर्ष ही ढील दी गई थी।

मा.बु. : ऐसा 1991 के बाद ही था कि विपक्ष से समझौता–वार्ता करने के पश्चात विश्वविद्यालय पुनः खुल गये परन्तु इतने समय आप क्या कर रहे थे?

र.ए. : खैर, आपने यह अंदाजा तो लगा लिया होगा कि मैं गिरफ्तार होने से बच गया था लेकिन 1974 की कार्यवाही के बाद मुझे देश छोड़ना पड़ा। मैं लगभग 20 वर्षों तक मलेशिया के शैक्षिक माहौल से दूर रहा परन्तु मैंने यहाँ होने वाले सभी घटनाक्रमों को नजदीकी से देखा और शोध एवं लेखन को कभी भी बंद नहीं किया।

मैं शीत युद्ध की समाप्ति के कुछ वर्षों पश्चात 1992 में वापिस लौटा। असहमत शिक्षाविदों के प्रति UKM का पेशेवर दृष्टिकोण के साथ सरकार का खुलापन और समायोजन ने मुझे 1995 में विश्वविद्यालय के उसी विभाग में पुनः शामिल होने में मदद की। पहले वाले दिनों की तुलना में चीजें बहुत बदल गई हैं। सरकार और विश्वविद्यालय बाजार के दबाव में हैं और उन्होंने बाजार की अनिवार्यता को स्वीकार कर लिया है। आज शिक्षा जनहित के बजाय एक वस्तु के रूप में समझी जाने लगी है। समाजशास्त्र और नृविज्ञान सहित पारम्परिक सामाजिक विज्ञान और मानविकी, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी और प्रबंधन अध्ययन के सामने अपनी चमक खो बैठे हैं। मेरे विश्वविद्यालय में सामाजिक विज्ञान और मानविकी संकाय का पुनर्गठन हुआ और समाजशास्त्र और नृविज्ञान विभाग की प्रस्थिति खो बैठे। तो तार्किक रूप से 1970 के दशक में देश के इतिहास में सबसे सशक्त समाजशास्त्र और नृविज्ञान के विभाग, आज एक प्रोग्राम/कार्यक्रम मात्र बन कर रह गये हैं।

मेरी पीढ़ी के कई वरिष्ठ समाजशास्त्री और मानवविज्ञानी सेवानिवृत्त हो गये हैं या फिर आगे बढ़ गये हैं। हालाँकि, पूर्व विभाग का एक प्रमुख सामाजिक मानवविज्ञानी आज भी सक्रिय है। वह UKM में एक महत्वपूर्ण शोध संस्था–द इंस्टीटयूट ऑफ ऐथनिक स्टडीज, जो शैक्षिक और सार्वजनिक नीति पर कार्य करती है के संस्थापक निदेशक हैं।

जहाँ तक मेरा प्रश्न हैं, मैंने पुनर्गठन के पहले ही विभाग छोड़ दिया था और मैं UKM के 1995 में गठित बहु–वैषयिक सामाजिक विज्ञान शोध इकाई–मलेशियाई और अंतर्राष्ट्रीय अध्ययन संस्था में पूर्ण–कालिक अनुसंधानकर्ता बन गया था। मैं 2001 में विकास के समाजशास्त्र का प्रोफेसर बना और 2009 में प्रोफेसर एमिरेटस बनाया गया।

जब मैं स्वदेश लौटा तो सबसे पहला कार्य मैंने स्वयं को सामाजिक विज्ञान संघ के साथ पुनः जोड़ने का किया। 2000 में मुझे MSSA का अध्यक्ष चुना गया और सैयद हुसिन अली की तरह मैं इस पद पर 10 वर्षों तक काबिज रहा। पद छोड़ने के पश्चात मुझे संघ का विशेष सलाहकार बनाया गया जिस पर मैं आज तक काबिज हूँ।

मा.बु. : आपने चार दशकों से भी अधिक समय मलेशियाई समाजशास्त्र को विकसित होते देखा है। आप को क्या लगता है कि यह कहाँ जा रहा है?

र.ए. : बदली हुई परिस्थितियों के बावजूद, मुझे सुरंग के अंत में रोशनी दिखाई देती है। बहु–वैषयिकता पर जोर देने के बावजूद युवा विद्वानों की समाजशास्त्र में रूचि पुनः जागृत हुई है। वे सामाजिक स्थितियों के विश्लेषण और उनमें परिवर्तन के सुझाव देने के लिए मजबूत पद्धतिशास्त्र के साथ तर्कसंगत सामाजिक सिद्धान्तों एवं समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य की सामर्थ्य और प्रासंगिकता को देख सकते हैं। भाव और आदर्शवाद अभी भी है। अन्य विषयों की तुलना में, हालांकि अभी संख्या कम हैं, परन्तु वह बढ़ रही है। इस रूचि और संख्या को बढ़ाने में MSSA मदद कर रहा है और अंतर्राष्ट्रीय समाजशास्त्र संघ के अध्यक्ष के रूप में, माइकल आप से संवाद का यह अवसर बहुत सामयिक है। यह हमारी रूचि को अधिक गहरा करने एवं दृष्टिकोण को व्यापक बनाने में मदद करता है। हम मिलकर काम करने के लिए तत्पर हैं और मुझे यकीन है कि यह सहयोग मलेशिया में समाजशास्त्र और सामाजिक विज्ञानों को आगे बढ़ाने में मदद करेगा। ■

> क्रान्ति के बाद ट्यूनिशियाइ समाजशास्त्र

मुनीर सैदानी, ट्यूनिश अल मनार विश्वविद्यालय, ट्यूनीशिया

ट्यूनिशिया का नौजवान फल विक्रेता मौहम्मद बाउजीजी, जो कि अरब स्प्रिंग के विचार को प्रज्वलित करने के लिए एक प्रतिष्ठित व्यक्ति बन गया।

ट्यूनिशिया की वर्तमान स्थिति से सम्बद्ध तीन अन्तः विरोधी पक्ष समाजशास्त्रियों के कार्य को आकार दे रहे हैं, वे पक्ष हैं (1) व्यापक स्तर के राजनीतिक परिवर्तन (2) अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता का विस्तार एवं (3) सामाजिक आन्दोलनों की एक नयी लहर का उभार। सामाजिक परिवर्तन की तीव्रता को अध्ययन की दृष्टि से समाजशास्त्रियों ने अपने अपने स्तर पर उत्तर दिया है।

14 जनवरी 2011 को बेन अली की तानाशाही समाप्त हुई। इसके बाद से देश ने ''सबका युद्ध सबके विरूद्ध'' का अनुभव किया है, अनेक संघर्ष नये ''जनशत्रु'' – सालाफिस्टस् (the Salafists) – के इर्द गिर्द सिमट गये है जिसे ट्यूनिशियन जीवन पद्धति'' के लिए सबसे खतरनाक चुनौती के रूप में देखा जा सकता है। यहाँ तक कि धर्मार्थ, कल्याणकारी, सहायताकारी, सांस्कृतिक समितियॉ एवं गैर सरकारी संगठन संघर्ष में शामिल हैं जबकि राजनीतिक परिदृश्य यहॉ बुरी तरह विभाजित है, ये समितियॉ एवं संगठन आन्तरिक संघर्ष का हिस्सा भी हैं। तथ्य यह है कि यहॉ लगभग 150 राजनीतिक दल एवं 15,000 समितियॉ हैं जिनसे स्थिति का एक आसान प्रस्तुतिकरण नहीं हो सकता।

सार्वजनिक सांख्यिकी एवं अन्य प्रकारों के प्रदत्त अब बड़ी संख्या में उपलब्ध हैं परन्तु अत्यन्त विद्यटित प्रशासन एवं अत्यन्त मन्द सुधार, जो इनके क्रियान्वन के पक्षों से सम्बद्ध है, आवश्यक रूप से सहायता नहीं करते और ट्यूनिशियाई समाज की सही तस्वीर नहीं उभर पाती। पत्रिकाओं की संख्या में तीव्र वृद्धि, समाचार पत्रों की संख्या में तीव्र वृद्धि, सामाजिक मीडिया, सार्वजनिक एवं निजी टी. वी. चैनल (सब मिलाकर दस से अधिक) एवं रेडियो चैनल्स (लगभग पन्द्रह अधिकतर एफ. एम.) के रूप में अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता परिलक्षित होती है इसके कारण सड़कों एवं चौराहों पर राजनीतिक संघर्ष देखे जाते हैं जो जनमत निर्माण की प्रयोगशाला बन गये है।

पुराने कर्ता आज वर्तमान संघर्ष का हिस्सा हैं। पुराने हित आज की चुनौतियॉ बन गये हैं एवं विषम राजनीतिक स्थितियों ने समाजशास्त्रियों के काम को जोखमभरा बना दिया है। विशेषतः 23 अक्टूबर 2011 के चुनाव के उपरान्त उभरे सामाजिक आन्दोलनों की स्थिति कम नियन्त्रणशील है। स्थानीय सामान्य हड़ताल, निषिद्ध क्षेत्रों में संगठित प्रदर्शन, एवं सुरक्षा पुलिस के साथ मुठभेड़ पूरे देश में फैल गये हैं विशेषतः ट्यूनिशिया के मध्य–पश्चिमी छोटे नगरों में ऐसा हुआ है ये क्षेत्र क्रान्ति के उद्भव केन्द्र बन गये है। स्थानीय नेता लोकप्रिय विरोध प्रदर्शनों के प्रति जवाबदेह हो गये हैं। सामाजिक नेटवर्क के विस्तार के माध्यम से ऐसा हुआ है। सामाजिक भविष्यवाणी जन विशेषज्ञों एवं वैज्ञानिकों की पहुँच के परे है। सामाजिक आन्दोलन नवीन आवश्यकताओं एवं नवीन लक्ष्यों की प्राप्ति के प्रयासों को आवाज अर्थात अर्थ प्रदान करते हैं ये आवश्यकताएं एवं लक्ष्य पर्यावरण, नृवंशीय क्षेत्रीय एवं लैंगिक मुद्दों से जुड़े हो सकते हैं। सामाजिक आन्दोलनों का विश्लेषण प्रतिदिन नवीन स्वरूप का होता जाता है।

> अराजकता की स्थिति के समय समाजशास्त्र

ट्यूनिशिया विश्वविद्यालयों के समाजशास्त्र विषय के तीन विभागों के 60 अकादमिक समाजशास्त्रियों को तीन श्रेणियों में बाँटा जा सकता है। वे जो कि सुलगती स्थितियों पर पुस्तकों के प्रकाशन करते है। इनकी संख्या सम्भवतया चार या पॉच से अधिक नहीं है। लगभग इतनी ही संख्या उनकी है जो लेखों का प्रकाशन करते है। बहुसंख्यक प्रकाशन नहीं करते क्योंकि उनकी दृष्टि में ''सामाजिक आन्दोलनों, जा चल रहे हैं, का विश्लेषण उनकी अराजकतावादी स्थिति एवं तीव्र गति के परिवर्तन वाले चरित्र के कारण नहीं किया जा सकता है''। क्रान्ति के पूर्व दो या तीन से अधिक ऐसे समाजशास्त्री नहीं थे जो सामाजिक आन्दोलनों एवं उनसे सम्बद्ध मुद्दों

> >

का अध्ययन करते हों। क्रान्ति के बाद के दौर के पहले वर्ष में दूसरी श्रेणी के समाजशास्त्री आरामदायक स्थिति में थे वे बिना खतरा उठाये सैद्धान्तिक संदर्भों के साथ अथवा स्वयं के विषय में लेखों का प्रकाशन करते थे। दैनिक समाचार पत्र अथवा साप्ताहिक पत्र पत्रिकाओं में वे सामान्यतः देश में क्या घटित हो रहा है के विषय में लेखों का प्रकाशन करते थे। अधिकांश लेख इन आन्दोलनों में सक्रियकर्त्ताओं की पहचान पर केन्द्रित होते थे। ऐसे समाजशास्त्रियों में से कुछ अपने दृष्टिकोणों को ब्लाग एवं फेसबुक पर लिखते थे।

प्रारम्भ में इन समाजशास्त्रीय दृष्टि–कोणों की मीडिया द्वारा अधिक परवाह नहीं की जाती थी पर प्रत्येक गुजरते महीने के साथ स्थितियॉ बदल रही थीं। अपने ज्ञान को विस्तार देने हेतु ट्यूनीशियन समाजशास्त्री मीडिया के प्रसारण तन्त्र के साथ नवीन प्रकार के सम्बन्धों का अनुभव कर रहे थे जो कि सामाजिक मुद्दों को नवीन तरीकों एवं राजनीतिक रणनीति के साथ प्रस्तुत करने हेतु उनकी सेवाओं की माँग कर रहा था। कुछ अकादमिक समाजशास्त्री सैद्धान्तिक अथवा बौद्धिक पत्रिकाओं के सम्पादकीय समूह का हिस्सा बन गये जबकि कुछ बिना अकादमिक संरचना वाले शोध केन्द्रों का भाग बन गये। कोई भी समूह वैज्ञानिक ज्ञान को व्यक्त नहीं करता है। इन स्थानों पर वे किस प्रकार की सेवायें प्रदान कर रहे हैं? जिन स्थितियों में वे कार्यरत हैं के फलस्वरुप कोई भी अधिक आशावादी नहीं हो सकता। अगला सवाल यह उठता है कि नवीन मीडिया के ये केन्द्र जन समाजशास्त्र को क्या नवीन अवसर प्रदान कर रहे हैं अथवा ये केवल राजनीतिक पैंतरेबाजी है जिसे राजनीतिक आवाज बनाने की कोशिश है।

एक ट्यूनिशियन समाजशास्त्री जो पुस्तकें प्रकाशित करते हैं का मत हैं ''मैंने जो कुछ भी प्रकाशित किया है वह मेरे निजी प्रयासों का परिणाम है। मुझे कोई भी सहायता प्रदान नहीं करता''एक अन्य ने गुस्से में कहा, ''हम उच्चक्रम प्राप्त समाजशास्त्री नहीं हैं, हमारे पास कोई अवसर नहीं है। अधिकांश क्रियाएं, यहॉ तक कि जो विश्वविद्यालय के अन्दर होती हैं, केवल उनके लिए हैं जो मान्यता प्राप्त हैं अर्थात् स्थापित हैं। अतः युवा समाजशास्त्री विशिष्ट कठिन स्थितियों का सामना करते हैं, जब कोई स्थितियों से स्वयं जूझता है तब युवा समाजशास्त्री अनुपस्थिति रहते हैं। परन्तु इन सबके बावजूद हमने एक नया प्रकाशन "Penser la societe tunisienne anjourd' hui : La jeune recherche en sciences humaines et sociales" (आज के ट्यूनिशियन समाज का चिन्तन : मानविकी एवं समाज विज्ञानों में युवा अनुसंधानकर्त्ता) प्रारम्भ किया है। इस प्रकाशन में फ्रांसीसी भाषा के लगभग बीस आलेख हैं। जुलाई 2010 में Institute de Recherche sur le Maghreb Contemporain (IRMC) के सहयोग के साथ एक लेखन कार्यशाला आयोजित हुई थी ये बीस प्रकाशित आलेख इसका परिणाम हैं। जबकि दूसरी ओर तानाशाही की समाप्ति के उपरान्त ट्यूनिशियन सोश्योलोजिकल एसोशिएशन जो लगभग 25 वर्ष पुरानी है, समाजशास्त्र के विद्यार्थियों के लिए कुछ बैठकों का ही आयोजन कर सकी।

ट्यूनिशियन समाजशास्त्रियों ने अनेक प्रत्युत्तरों में से एक प्रत्युत्तर यह अपनाया है कि वे विदेशों में अपने आलेखों को प्रकाशित करें ताकि वे अपनी दृश्य उपस्थिति को इस तरीके से सुरक्षित कर सकें। लेकिन मार्च 2011 में सिदी बाउजिड जो कि बाउजिजि का जन्म स्थान है में प्रथम अन्तर्राष्ट्रीय समाजशास्त्रीय गोष्ठी ''अरब क्रान्ति का समाजशास्त्र'' विषय पर आयोजित की गयी। बाउजिजि सड़क पर माल ढ़ोने वाले एक श्रमिक थे जिन्होंने आत्मदाह किया एवं ट्यूनिशियन क्रान्ति के उत्प्रेरक बन गये। इस गोष्ठी में सात के लगभग ट्यूनिशियन समाजशास्त्री सम्मिलित हुए। इनमें से एक बेरूत में बसे हुए हैं, एक अल्जीरिया में हैं तथा एक लेबनान में हैं जो इंग्लैंड से आये थे।

अन्य समाजशास्त्रियों ने सामाजिक आन्दोलों से सम्बन्ध बनाने के प्रयास किये। ''मैं अपने आप में सामाजिक आन्दोलन कार्यकर्त्ता हूँ ''मैं समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण को निर्मित कर अपनी स्थिति/अपने पद को आगे बढ़ाने की कोशिश करता हूँ'' का विचार एक सहयोगी ने दिया। एक अन्य सहयोगी ने पूर्व के विचार को प्रमाणित करते हुए कहा, ''यह आसान नहीं है ट्यूनिशिया में सामाजिक सक्रियता एक नयी बात है एवं विरोधी राजनीतिज्ञ तथा सरकार के समर्थक दोनों ही अनेक बाधायें उत्पन्न करते हैं। प्रशिक्षण, जमीनी अवधार–णाओं, सक्रिय कार्यकर्त्ताओं के नामांकन साथ साथ किये जाने चाहिए और इन सब के तरीके लोकतान्त्रिक हों। समूहों की आन्तरिक गत्यात्मकता के प्रति सम्मान होना चाहिए। यह स्थिति उस समय कठिन हो जाती है जब आप अकेले हों और आपके पास अपनी इच्छा शक्ति के अतिरिक्त अन्य किसी भी प्रकार का साधन न हो। 2011–2012 के शैक्षणिक सत्र से युवा शोधार्थियों ने सामाजिक आन्दोलनों के प्रति अपनी रूचि दिखाई हैं विशेषतः वे जो स्नातकोत्तर अध्ययन से सम्बद्ध हैं। पीएचडी से सम्बद्ध शोधार्थियों की इस संदर्भ में रूचि कम है। इस विषय पर किये जा रहे अध्ययन क्षेत्रीय अध्ययनों पर आधारित हैं, सर्वेक्षण एवं अन्य वैज्ञानिक अन्वेषणों के विशिष्ट प्रकारों से जुड़े हैं। युवाओं की भूमिका, सामाजिक मीडिया का प्रभाव एवं सहभागियों की स्मृति जैसे विषयों पर अध्ययन हो रहे हैं।

> अनुसंधान/शोध हेतु नवीन अवसर

शोध की स्थितियाँ पहले की तुलना में आज अधिक है एवं खुली हुई हैं। राजनीतिक एवं प्रशासनिक शक्तियों द्वारा दमन जो अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता को बाधित करती थी अब समाप्त हो चुका है एवं साक्षात्कारदाता अपने दृष्टिकोण एवं अनुभवों को बताने हेतु स्वतन्त्र हैं। अनुसंधानकर्त्ता फोटोग्राफस, वीडियोटेप से सम्बद्ध प्रमाण एवं कभी कभी डायरीज का प्रयोग करने हेतु सक्षम है। इन सब स्थितियों के बावजूद नवीन सैद्धान्तिक प्रारूप अब भी विकास के चरण के प्रारम्भिक स्तर पर हैं।

कोई भी अब यह कह सकता हैं कि ट्यूनिशियन समाजशास्त्री परिवर्तनशील समाज का परीक्षण कर रहे हैं परन्तु उनके सामाजिक अनुसंधानों में नवीन दृष्टिकोणों के विकास की प्रक्रिया में अनेक अवरोध हैं। इन सब के बावजूद तानाशाही के बाद के दौर में हो रहे गहन एवं तीव्र परिवर्तन समाज के अध्ययनों के प्रति वैज्ञानिक उपागमों के ज्यादा से ज्यादा प्रयोग की सम्भावनाएं उजागर कर रहे हैं। परन्तु एक प्रश्न अब भी बना हुआ है : क्या समाजशास्त्री विस्तार लेते हुए अवसरों का लाभ उठाकर समाज के विकास के प्रति उभरे नवीन दायित्वों का निर्वाह करने में सक्षम होंगे? ■

> सिनेमाई समाजशास्त्र

जोयस सेबग और जीन–पियरे डूरण्ड के साथ साक्षात्कार

एवरी विश्वविद्यालय, फ्रांस

जोयस सेबग

जीन–पियरे डूरण्ड

जोयस सेबग और जीन–पियरे डूरण्ड, सिनेमाई समाजशास्त्रियों का एक पति–पत्नी का दल है जो पेरिस के बाहर स्थित एवरी विश्वविद्यालय के पियरे नविले केन्द्र में कार्यरत है। काम के समाजशास्त्र में दो दशकों के समर्पित कार्य के पश्चात, सेबग और डूरण्ड के चित्र के साथ आजीवन मोह ने उन्हें 1995 में चित्र और समाज में एक स्नातकोत्तर प्रोग्राम शुरू करने के लिए प्रेरित किया। उनके एम. ए. और पी. एच. डी. के विद्यार्थियों को सामाजिक विज्ञान की दक्षता में जड़े सिनेमाई प्रशिक्षण और एक समाजशास्त्रीय फिल्म के निर्माण की अनिवार्यता के अनूठे संयोजन के आधार पर डिग्री प्रदान की जाती है। इस समय के दौरान सेबग और डूरण्ड ने भी तीन वृत्तचित्र, केलिफोर्निया की एक फैक्टरी में काम की नई परिस्थितियों पर Dreams on the Line, एक बहुराष्ट्रीय कम्पनी की रणनीति के बारे में Nissan : A History of Management और अमरीका में सकारात्मक कार्यवाही के बारे में 50 years of Affirmative Action in Boston का निर्माण किया। उनके प्रयासों के परिणामस्वरूप the Association Francaise de Sociologie ने हाल ही में सिनेमाई समाजशास्त्र को अधिकारिक अध्ययन क्षेत्र में मान्यता दी है। इनका साक्षात्कार टूलूस में स्थित Institute of Advanced Studies में पोस्ट–डोक्टोरल फैलो, जोर्डाना मेटलॉन ने लिया।

जो.मे. : आप जो करते हैं उसे विजुअल समाजशास्त्र के बजाय सिनेमाई समाजशास्त्र क्यों कहते हैं?

जो.से. : मुझे लगता है कि विजुअल समाजशास्त्र काफी लंबे समय से अस्तित्व में है और वह चित्रों के साथ सोचने के एक तरीके के बजाय फोटोग्राफी और फिल्म का विश्लेषण के बारे में अधिक है। हम समाजशास्त्र में फोटोग्राफी और फिल्मों से वस्तुओं को स्पष्ट करने का एक रास्ता खोजना चाहते हैं।

जो.मे. : आपके अनुसार एक सिनेमाई समाजशास्त्री में क्या विशिष्ट कौशल होता है?

जो.से. : जब आप कुछ अध्ययन करते हैं तो आप को लगता है कि आप ने कुछ तर्क संगत प्राप्त किया है और आप उससे बहुत दूरी पर हैं। आप सोचते हैं कि आप वस्तु के 'बाहर' हैं और समर्थन के लिए मीडिया का उपयोग करने का एक कारण है कि आप यह दिखाते हैं कि आप हमेशा अनुसंधान के अन्दर हैं।

जो.मे. : और यह विधि का एक अपरिहार्य हिस्सा है।

जो.से. : हाँ। फिल्म यह कहने का एक तरीका है कि विज्ञान लोगों के

>>

''बाहर'' नहीं है। यह दर्शार्य गये या अध्ययन किये जा रहे लोगों के 'अन्दर' सम्मिलित है। तुम्हारा दृष्टिकोण यहाँ है। वृत्तचित्र प्रतिवर्तन के विस्तार की जगह है। हम अनुसंधान द्वारा प्रतिवर्तन के लिए जगह का निर्माण और जो लोग समाजशास्त्री होने की स्थिति में नहीं है उनके साथ बहस करने का एक तरीका और उसी समय कुछ नवीन का निर्माण करने का प्रयास करते हैं। यह एक मिलने का स्थान है। यह दृष्टिकोणों की बहुलता में प्रवेश करने का एक तरीका है।

हम देखते हैं कि फिल्म में काम करने वाले अनुसंधान के अभिनेता हैं। आप देख सकते हैं कि वे हैं। वे सोचते हैं। वे केवल वस्तु नहीं हैं।

जी.पी.डू. : मैं यह कहना चाहूँगा कि यदि समाजशास्त्री मानवशास्त्रियों की तुलना में फिल्मों और वीडियो के प्रयोग को अपेक्षाकृत देर से सराह रहे हैं–मेरे विचार से यह इसलिए है क्योंकि समाजशास्त्र में हमने उन लोगों के अध्ययन से प्रारंभ किया जो हमारी ही जगहों पर थे न कि अफ्रीका, इंडोनेशिया इत्यादि। जब समाजशास्त्री अपने देश के बारे में बोलते हैं तो वे अध्ययन के विषय, यथार्थ के टुकड़े का चयन करते हैं। इसके अतिरिक्त, जब आप लिखते हैं तो यह चुनाव करना बहुत आसान है और समाजशास्त्रियों के लिए वह महत्वपूर्ण नहीं है जो हम कहते हैं बल्कि वह जो हम छोड़ देते है – अवशेष। जब आप सिनेमाई समाजशास्त्र कर रहे हों तो चुनाव करना अधिक कठिन – अवशेष को छोड़ना कठिन होता है।

जो.मे. : क्या आप मुझे आपके द्वारा किये गये चयन का या फिर अपने अनुभव का एक उदाहरण बता सकते हैं?

जी.पी.डू. : उदाहरण के लिए, Dreams on the Line (हमारे वृतचित्र) में हमने श्रमिकों के साथ यूनियन के बारे में अधिक कुछ नहीं कहा। बस थोड़ा सा। और कुछ ने यूनियन के बारे में बहुत बहुत बुरी बातें कही। यूनियन ..... के लिए हैं।

जो.से. : आलसी लोग

जी.पी.डू. : आलसी लोग। एक ने यह कहा। और एक महिला ने कहा ''मैं एक कामगार हूँ'', मैं हड़ताल नहीं कर सकती।'' यदि आप लिख रहे हैं तो इसे छोड़ देंगे क्योंकि यह एक लंबे साक्षात्कार का मात्र एक सैकण्ड हो सकता है। परन्तु हमने यहाँ इस कथन को यह दर्शाने के लिए कि क्यों और कैसे लोग नई परिस्थितियों, जैसे काम के जापानी नियम, को स्वीकारते हैं। और यूनियनों को अपने सदस्यों का साथ देना पड़ता है अतः वे चुप रहते हैं।

जो.से. : हमने काम पर लोगों को काफी जल्दी में, थका हुआ और काफी दबाव में देखा। परन्तु जब हमने इन लोगों को शूट किया तो ये काफी शांत और तनावमुक्त दिखे। परन्तु सामानंतर में हमने उनका साक्षात्कार भी किया और सभी ने कहा, ''यह कठिन कार्य है, यह बहुत कठिन कार्य है।'' लेकिन यह चार्ली चेपलिन की फिल्म नहीं है। यह सब बहुत ही शांत लगता है। अतः हम साक्षात्कार को साथ में रखकर यह दिखना चाहते हैं कि आनुभाविक अवलोकन करते समय जो दिखाई देता है वह कभी कभी लोगों की भावनाओं की वास्तविकता नहीं होता। और हमने इसे Dreams on the Line इसलिए कहा क्योंकि सभी इससे, लाइन से बचने का स्वप्न देखते हैं।

अतः यह फिल्म बातचीत शुरू करने का एक तरीका है। यह यथार्थ के सरलीकरण, वह सरलीकरण जो यथार्थ के साथ हिंसा करता है, के लिए चुनौती है।

जी.पी.डू. : जैसा जोयस ने कहा, यह व्यक्तिपरक समाजशास्त्र है परन्तु यह तर्कसंगत ज्ञान भी हैं हमारे पास अपना दृष्टिकोण था। हम स्वयं की व्यक्तिपरकता की कल्पना करते हैं परन्तु यह एक पुस्तक या एक लेख लिखने से कहीं अधिक कठिन है। क्योंकि, यकीनन हम चुनाव कर सकते हैं – हम शूट या सम्पादित करते हैं इत्यादि। जरूर। परन्तु जब आप फिल्म बनाते हैं आप असुविधाजनक तथ्यों को यूं ही नहीं छोड़ सकते हैं। यह एक बड़ी समस्या है। मैंने शायद पन्द्रह पुस्तकें लिखीं और मैं क्या महत्वपूर्ण है और पुस्तक में किस तरह बहस करनी चाहिए, जानता हूं। परन्तु एक फिल्म में उसी प्रकार बहस नहीं कर सकते क्योंकि तथ्य – सामाजिक तथ्य – आपके सामने हैं। कभी–कभी समाजशास्त्री जादूगर हो सकते हैं परन्तु आप जब सिनेमाई समाजशास्त्र कर रहे हैं तो आप नहीं हो सकते।

जो.मे. : सिनेमाई समाजशास्त्री के रूप में आप समाज में अपनी भूमिका को कैसे देखते हैं?

जी.पी.डू. : मेरा मानना है कि हमारी भूमिका, सामाजिक जीवन में क्या छिपा हुआ है, दिखाने की है। उसके लिए हमें चीजों को तर्कसंगत रूप से समझाने की आवश्यकता हो सकती है परन्तु जिन लोगों के साथ हमें काम करना है उनके मध्य सुने जाने और ध्यान आकर्षित करने के लिए हमें भावनाओं से भी काम लेना पड़ता है। मेरे ख्याल से लिखने में हमारी भावनाओं जैसे नियंत्रित भावनाओं, की परतों को दिखाना अधिक कठिन होता है।

जो.से. : उदाहरण के लिए, हमने अपनी फिल्म में बोस्टन के वंचित क्षेत्र में सकारात्मक कार्यवाही के बारे में एक महिला से सशक्त साक्षात्कार किया। उसके जवाब देने के तरीके ने उसकी गरिमा, नियन्त्रण का प्रदर्शन किया। इस तरह उसने उन लोगों को चुनौती दी जो हिंसा के प्रयोग को चुनेंगे। मेरे विचार में लोगों की गरिमा को दिखाना महत्वपूर्ण है।

जो.मे. : क्या आप सोचते हैं कि सिनेमाई समाजशास्त्र में अनुनय के लिए भावनाओं का प्रयोग, इसे शायद चालबाजी की प्रत्यालोचना के लिए खुला छोड़ता है। या फिर यह समझ को बढ़ाने का एक और अन्य तरीका प्रदान करता है?

जो.से. : किसी भी चीज को समझने का केवल एक तरीका नहीं होता। हमारी समझ केवल तार्किक नहीं है। भावनाओं के साथ समझना भी समझना है। दरअसल, आप शायद ज्यादा समझने में सक्षम हों। लेकिन, यह सच है कि आप पुस्तक लिखने में हेर–फेर कर सकते हैं और शायद अधिक आसानी से।

परन्तु फिल्म, क्षेत्र में मिलने वाले लोगों से आपके सम्बन्ध भी बदल देती है। मैं पेरिस के पास एक कार संयंत्र में नृतत्वशास्त्रीय अनुसंधान कर रहा था। एक श्रमिक ने मुझसे कहा, ''तुम कहते हो कि तुम अनुसंधान कर रहे हो और हम तुम्हारी मदद करते हैं। परन्तु अनुसंधान के बाद हम कुछ भी नहीं हैं, हमें बदले में कुछ नहीं मिलता। यह तुम्हारे पेशे के लिये ठीक हैं।''

जो.मे. : जैसे शोषण

जो.से. : यह शोषण की तरह है। परन्तु जब आप लोगों को फिल्म में बोलते देखते हैं, वे अस्तित्व में होते हैं। शायद यह अन्य प्रकार का शोषण है, ऐसा आप शायद समझाते हैं। परन्तु कम से कम अब हम उन्हें यह तो कह सकते हैं कि ''तुम जिन्दा हो''। तुम सोचते हो। तुम बोलते हो। और दर्शक उनके शारीरिक भाव देख सकते हैं व उनकी आवाज के लहजे को सुन सकते हैं।

और यह दिखाना अत्यन्त महत्वपूर्ण है कि ये लोग परछाई नहीं बल्कि असली इंसान हैं और कि ये सोच सकते हैं। आप इनके शब्द सुन सकते हैं और इनके चेहरे देख सकते हैं। हम उन्हें कोई किरदार नहीं दे रहे, वे फिल्म में अपना किरदार खुद ले लेते हैं।

जो.मे. : एक सिनेमाई समाजशास्त्री के रूप में आप कौन सी चुनौतियों का सामना करते हैं?

जी.पी.डू. : कई लोग – जनता, समाजशास्त्री और कई वैज्ञानिकों में छवि और चित्रों को पढ़ने की क्षमता का अभाव होता है। विद्यालय में

>>

हम शब्दों को पढ़ना और लिखना सीखते हैं परन्तु चित्रों को पढ़ना कभी नहीं सीखते हैं। फिल्मों के कुछ विशेषज्ञ होते हैं जैसे फिल्म विश्लेषक, फोटो विश्लेषक, फोटो आलोचक इत्यादि। परन्तु इन पेशेवर और जनता में बहुत बड़ा अन्तराल है। यह एक समस्या है क्योंकि जनता और बहुत सारे समाजशास्त्री चित्रों को नहीं पढ़ सकते। विजुअल और सिनेमाई समाजशास्त्री के रूप में यह शायद हमारी सबसे बड़ी चुनौती है।

जो.से. : चित्रों के विश्लेषण के लिए प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है और फिल्मों के निर्माण के लिए हमें यह समझना आवश्यक है कि एक चित्र को बनाने का क्या अर्थ है।

जी.पी.डू. : एक चित्र में आपको चित्र का आभास होता है। परन्तु यदि आप चित्र देखते हैं तो आपको यह भी सोचना चाहिए कि यह चित्र कहाँ लिया गया और इसके फ्रेम के बाहर क्या है।

जो.से. : जब आप एक चित्र दिखाते हैं उसके बाहर भी कुछ होता है।

जी.पी.डू. : यह एक फ्रेम है परन्तु आप अधिकांश समय फ्रेम के बाहर होते हैं।

जो.से. : समाजशास्त्रियों के लिए यह समान है। आप उसकी तलाश कर रहे हैं जो आपको दिखता है और जो दिखाई नहीं देता।

जी.पी.डू. : संदर्भ

जो.से. : संदर्भ। जो क्षेत्र के बाहर है, जो आपके सामने वाले लोगों के पीछे छिपा हुआ है।

जी.पी.डू. : और बहुत सारे लोग फ्रेम में पाये जाने वाले तथ्यों को ही मानते हैं। परन्तु इस तरह आप विस्तृत समाज, विशाल चित्र के साथ कड़ियों को नहीं समझ पाते हैं।

जो.मे. : आपके चित्रों को समझने हेतु प्रशिक्षण की आवश्यकता के बारे में बोला है। मुझे लगता है कि यह अच्छे सिनेमाई समाजशास्त्र के लिए अधिक प्रासंगिक है। क्या आप हमें बता सकते हैं कि आपने एवरी विश्वविद्यालय में मास्टर प्रोग्राम की शुरूआत कैसे की?

जी.पी.डू. : 90 के दशक के प्रारम्भ में पेरिस के बाहरी इलाके में खुलने वाले चार विश्वविद्यालयों में से एक एवरी विश्वविद्यालय था। मैं औद्योगिक समाजशास्त्री के रूप में नियुक्त किया गया था। उस समय हमारे विश्वविद्यालय का अध्यक्ष बहुत चतुर था और नवाचार के पक्ष में था। जोयस उससे फिल्म के समाजशास्त्र की संभावनाओं पर विमर्श करने गई और उसने कहा, ''मेरे पास पैसा नहीं है परन्तु यदि तुम पैसा ला सकती हो तो मैं तुम्हारा समर्थन करूँगा।''

जो.से. : जीन–पियरे ने पैसा ढूंढ लिया। वह अनुसंधान के दौरान कार्य कर रहा था और प्रबंधन ने विश्वविद्यालय के लिए आर्थिक सहयोग की पेशकश की। उन्होंने हमें पैसा दिया और हमने अपना पहला कैमरा खरीदा। साथ ही साथ, पहले वर्ष में विश्वविद्यालय में इस प्रशिक्षण को आयोजित करने के लिए मैंने कहा, ''चलों, यदि आप इस प्रोग्राम का सदस्य होना और पढ़ाना चाहते हों तो तुम्हें अपने सभी सहकर्मियों के प्रशिक्षण को देखना होगा।'' इसका तात्पर्य है कि तुम्हें ध्वनि, पटकथा लेखन, निर्देशन, संपादन सभी सीखना होगा और समाजशास्त्र, इतिहास, मानवविज्ञान, वृत्तचित्र का इतिहास, चित्र–विश्लेषण में पाठ्यक्रम भी लेने होंगे। हम सबने एक वर्ष तक यह किया। उसके बाद हमने हमारे द्वारा स्थापित प्रशिक्षण को मान्यता देने के लिए मंत्रालय को कहा और उन्होंने मान्यता दे दी। अतः 1977 में हमने Image and Society का मास्टर पाठ्यक्रम प्रारम्भ किया। इस प्रोग्राम में प्रत्येक विद्यार्थी को अपनी थीसीस के लिए एक फिल्म बनानी पड़ती है। यह उन्हें स्वयं के बलबूते पर करना पड़ता है।

जी.पी.डू. : दुहरी दक्षता की मांग वाला यह एक ही मास्टर पाठ्यक्रम था : तकनीक, सिनेमा, लेखन और इत्यादि के साथ सामाजिक विज्ञान भी।

सेबग एवं डूरण्ड की सकारात्मक कार्य (affirmative action) पर निर्माणाधीन दूसरी फिल्म जिसका की नाम है मिसीसीपी, कोलम्बस, बोस्टन : une trajectoire familiale [From Mississippi to Boston: a Family Trajectory]. का एक दृश्य। यह फिल्म एक अफ्रिकन–अमेरिकन परिवार के दासिता से हार्वड पहुचने के पथ की पुर्नखोज करती है।

जो.मे. : और जब आप कहते हैं दुहरी क्षमता वाला अकेला ही है तो क्या यह केवल फ्रांस में है या विश्व में?

जो.से. : मैं विश्व के बारे में नहीं जानता। फ्रांस में अब ऐसे अन्य पाठ्यक्रमों को विकसित करने की कोशिश कर रहे हैं। परन्तु शायद यह पहला था।

जी.पी.डू. : अब हमारे पास प्रति वर्ष 20 मास्टर के विद्यार्थी हैं और 7 पीएचडी के।

जो.मे. : चूंकि आपने इस बिन्दु तक अधिकतर पेशेवरों को प्रशिक्षित किया है क्या आपको ऐसा लगता है कि आप के सिनेमाई समाजशास्त्र की परम्परा का निर्वाह नहीं करने से अकादमिक के रूप में हानि हो रही है? या क्या आप सोचते हैं कि ये पेशेवर भी अपने आप को सिनेमाई समाजशास्त्री समझते हैं।

जी.पी.डू. : यह उन पर निर्भर है। कुछ सामाजिक या राजनैतिक जीवन में अधिक निवेशित हैं। वास्तव में कुछ विद्यार्थी इस मास्टर्स में सक्रिय कार्यकर्त्ता के रूप में आते हैं। हम उन्हें दिखाते हैं कि एक अच्छे वृतचित्र को बनाने के लिए सक्रियवाद काफी नहीं है क्योंकि जब आप सक्रिय काग्रकर्ता हैं तो आपका एक दृष्टिकोण है और आप दूसरी चीजें देखना नहीं चाहते। उन्हें यह दिखाने के लिए कि उन्हें अपनी सोच को बदलना है ताकि वे व्यापक दृष्टिकोण को अपनाए, हमें शायद छः महीने चाहिए। एक बार वे समझ जाए तो ये लोग बहुत अच्छे फिल्म निर्माता हो सकते हैं क्योंकि उनके अन्दर सामाजिक प्रतिबद्धता है।

जो.मे. : आपके पीएचडी के विद्यार्थी के संदर्भ में, क्या आपको लगता है कि वे शिक्षण में रूचि रखेंगे?

जी.पी.डू. : इनमें से कुछ उच्च स्तरीय वृत्तचित्र निर्माता बनना चाहेंगे और अन्य हां अकादमिक शिक्षक बनना चाहेंगे। परन्तु वे जानते हैं कि यह अत्यधिक कठिन है क्योंकि सामान्य समाजशास्त्रियों को पहले सिनेमाई समाजशास्त्र को एक स्वतन्त्र क्षेत्र के रूप में मान्यता देनी होगी और अभी हमें बहुत लम्बा रास्ता तय करना है। हम उसकी तरफ कार्य कर रहे हैं। अभी शायद तीन या चार विश्वविद्यालय ही सिनेमाई समाजशास्त्र के लिए खुले हैं। हमारी समस्या है कि बहुत सारे पद नहीं है। हम प्रक्रिया के प्रारंभ में हैं। ■